सत्य की ज्योति

आठ पाठों की
बाइबल अध्ययन श्रृंखला

EIGHT LESSONS
CORRESPONDECE PROGRAMME

जॉन एम. हर्ट

CHURCH OF CHRIST
Post Box 4398
New Delhi-110019

Published by :
CHURCH OF CHRIST
Box-4398
New Delhi-110019
E-mail: vinay_david2002@yahoo.co.in
davidfrancis53@rediffmail.com

Printed at Simran Print House, New Delhi.

विषय-सूची

पाठ एक

पुराना नियम 5

पाठ दो

नया नियम 17

पाठ तीन

सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाना 29

पाठ चार

विश्वास तथा कार्य 41

पाठ पाँच

मसीही बनना 53

पाठ छः

स्वीकार-योग्य उपासना 67

पाठ सात

नए नियम की कलीसिया 79

पाठ आठ

आप वास्तव में एक मसीही बन सकते हैं 91

पुराना नियम

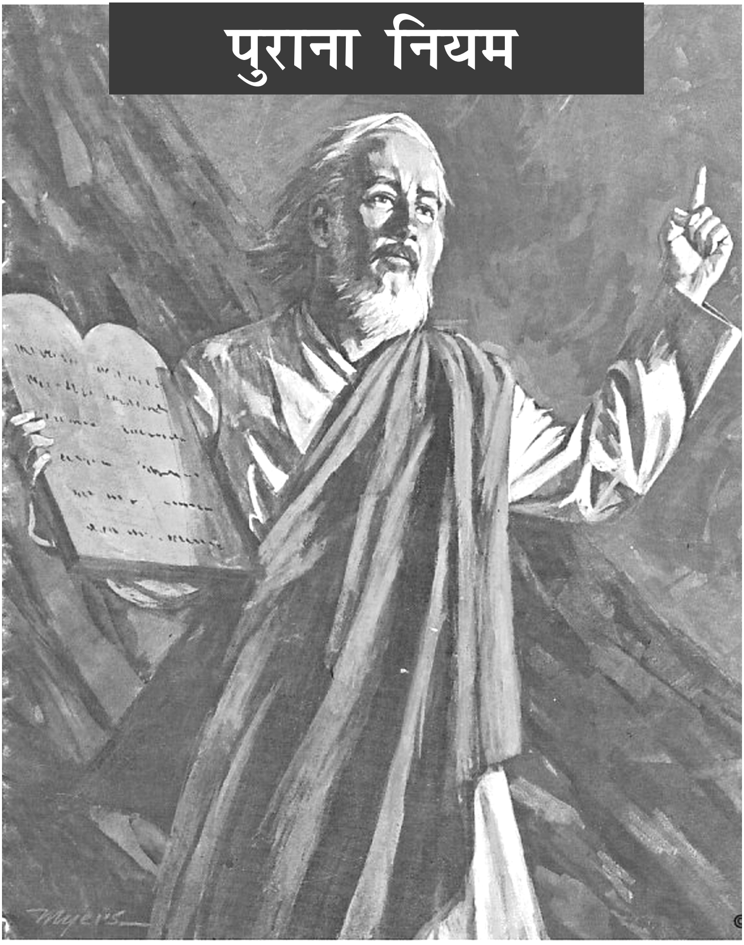

पाठ एक
बाइबल अध्ययन श्रृंखला

जॉन एम. हर्ट

पाठ एक
पुराना नियम

प्रस्तुत पाठ के द्वारा आप उस महान पुस्तक का अध्ययन आरम्भ कर रहे हैं जिसे परमेश्वर ने मनुष्य को दिया है। बाइबल वास्तव में पुस्तकों की एक पुस्तक है। अन्य पुस्तकों की अपेक्षा में इस पुस्तक ने मनुष्य के जीवन में परिवर्तन लाने में बहुत अधिक योगदान दिया है।

हजारों वर्षों से मानव के नैतिक सिद्धान्तों में सुधार लाने के लिये बाइबल एक महत्वपूर्ण पुस्तक प्रमाणित हुई है। हमारी अधिकांश ऐतिहासिक जानकारी का यह एक मूल कारण सिद्ध हुई है। तथा वैज्ञानिक उन्नति के लिए बाइबल सदा प्रेरणा का एक स्रोत रही हैं। इसके अतिरिक्त बाइबल ने प्रत्येक उस देश की अवस्था को सुधारा है जिसने इसे आदर व सम्मान सहित ग्रहण किया है। अधिकांश लोगों के लिये बाइबल एक आशा की ज्योति व संकट में सांत्वना का कारण बनी है। वास्तव में यह एक ऐसी पुस्तक है जिसकी तुलना किसी भी अन्य पुस्तक से नहीं की जा सकती, परन्तु सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि "यह परमेश्वर का सदा ठहरने वाला वचन है" (1 पतरस 1:23)।

जबकि आप उसके पवित्र वचन का अध्ययन आरम्भ करते हैं तो परमेश्वर आपको आशीष दे, तथा जिस उत्साह के साथ इस अध्ययन को आप ने आरम्भ किया है वह आपको उस सीमा तक पहुंचाए कि आप उसके जिसने हम सबके लिये अपने आपको बलिदान किया, सच्चे सेवक बनें।

पुराने नियम की रचनाएं

बाइबल के दो मुख्य भाग हैं, अर्थात् पुराना नियम तथा नया नियम। पुराने नियम में, जो कि मौलिक रूप से इब्रानी भाषा में लिखा गया था, उत्पत्ति नामक पुस्तक से लेकर मलाकी की पुस्तक तक, पुस्तकें मिलती हैं।

यद्यपि बाइबल को प्रायः एक पुस्तक कहा जाता है, परन्तु यथार्थ में यह बहुत सी पुस्तकों का एक संगठन है। यूं तो पुस्तकें स्पष्ट रूप से पृथक-पृथक रचनाएं हैं, किन्तु ये सब पुस्तकें इस तरह पूर्ण अनुरूपता व एकता के साथ लिखी गई हैं कि हर एक को यह स्वीकार करना पड़ता है कि ये सब एक ही पुस्तक के भाग हैं। केवल पुराने नियम में ही अलग-अलग उन्तालिस

रचनाएं या पुस्तकें हैं। ये पुस्तकें संसार की सृष्टि से लेकर मलाकी नामक पुस्तक जो कि लगभग 425 ई. पू. में लिखी गई, के अन्त तक बताती हैं।

पुराने नियम की पहली पांच पुस्तकें लगभग 1400 ई. पू. में मूसा द्वारा लिखी गई थीं। तथा बाकी की चौंतिस पुस्तकें आगामी ग्यारह सौ वर्षों के बीच में लिखी गई थीं। इन पुस्तकों के लेखक कुछ तो गड़रिये थे, व कुछ राजा थे, अन्य विदेशों में बन्दी थे, तथा कुछ लोग अधिक शिक्षा पाए हुए थे, और कुछ ऐसे भी थे जो नाम मात्र ही शिक्षित थे। किन्तु इन सब व्यक्तियों ने एक ऐसी अनुरूपता व एकता के साथ इन पुस्तकों को लिखा था कि उनकी शिक्षा में कहीं पर भी विपरीतता या विपक्षता नहीं मिलती।

शताब्दियों से अविश्वासी लोगों ने बाइबल का तिरस्कार किया है, प्रजापीड़क शासकों ने इसको नाश करने का प्रयत्न भी किया था, किन्तु वे सब के सब, परमेश्वर के वचन के अन्य विरोधियों के समान स्वयं ही नाश हो गए, परन्तु बाइबल का महत्व आज पहले से भी अधिक बढ़ गया है।

पुराने नियम के इतिहास की रूपरेखा

पुराने नियम का संक्षिप्त इतिहास निम्नलिखित है, तथा इसके लिखने का अभिप्राय इसमें लिखित लोगों व घटनाओं से विद्यार्थी को परिचित कराना है।

1. आदम और हव्वा, प्रथम पुरुष व स्त्री, को उनके पाप के कारण परमेश्वर ने अदन की बाटिका से बाहर निकाल दिया था। तत्पश्चात् आदम और हव्वा के दो पुत्र, कैन तथा हाबिल, उत्पन्न हुए थे। हाबिल अपने भाई कैन की अपेक्षा अधिक धार्मिक था और इसलिए वह परमेश्वर को प्रिय था। कैन ने ईर्ष्या के कारण हाबिल की हत्या कर दी थी, इस कारण वह पृथ्वी पर पहला हत्यारा बना। (उत्पत्ति 4)।
2. अपनी दुष्टता के कारण कैन को उस स्थान को छोड़ना पड़ा। तथा आदम और हव्वा के यहां एक और पुत्र, शेत, उत्पन्न हुआ, जो कि नूह इब्राहीम, दाऊद तथा मसीह जैसे महान लोगों का पूर्वज बना (उत्पत्ति 5)।
3. इसके बाद के कुछ ही सौ वर्षों के भीतर संसार में इतनी अधिक दुष्टता फैल गई थी कि परमेश्वर ने उसे नाश करने का निश्चय किया। केवल नूह तथा उसका परिवार ही परमेश्वर के आज्ञाकारी बने रहे, इसलिये परमेश्वर ने उन्हें बचाया। उन 120 वर्षों के भीतर जबकि जहाज बनाया जा रहा था, नूह ने परमेश्वर की योजना का लोगों में प्रचार किया, परन्तु

लोगों ने अपनी पापमयता के कारण उसकी नहीं सुनी। अतः केवल आठ व्यक्ति ही बचे थे (उत्पत्ति 9, 1 पतरस 3:20)।

4. वे आठ व्यक्ति थे: नूह के तीन पुत्र, अर्थात् शेम, हाम तथा येपेत, और उनकी पत्नियां तथा नूह व उसकी पत्नी। यहूदी लोग शेम के वंश से हुए।
5. बाइबल का अगला महान व्यक्ति इब्राहिम था। उसके दो पुत्र थे, इश्माएल (जो कि मिले जुले अरबी लोगों का पूर्वज था), तथा इसहाक। हमारी अधिकतम रुचि इसहाक के विषय में होगी क्योंकि इस्राएली जाति उसी के द्वारा निकली थी (उत्पत्ति 16:21)। सारा, इब्राहीम की पत्नी, की मृत्यु के पश्चात इब्राहीम ने कतूरा को ब्याह लिया और उसके यहां और संतान उत्पन्न हुई (उत्पत्ति 25:1, 2)।
6. लूत इब्राहीम का भतीजा था। उसके द्वारा मोआब तथा अम्मोन नामक जातियां निकलीं थी (उत्पत्ति 19)। वे लोग आगे चलकर इब्राहीम के वंश के कड़े शत्रु बने थे।
7. इसहाक के दो पुत्र थे - एसाव तथा याकूब। एदोमी लोग एसाव के वंशज थे। याकूब के बारह पुत्र थे, जो अपने पिता के साथ मिस्र देश में गए थे। उनके वंशज इस्राएली कहलाए, इन्हें "इस्रएल का घराना" भी कहा जाता है, क्योंकि परमेश्वर ने उनके पिता याकूब का नाम बदलकर इस्राएल रखा था (उत्पत्ति 32:28)। उत्पत्ति की पुस्तक में 37-50 अध्याय तक हमें यूसुफ अर्थात याकूब के पुत्र के विषय में एक बहुत ही रोचक वृत्तान्त मिलता है।
8. मिस्र में रहते हुए कई वर्षों तक इस्राएलियों को मिस्री लोगों ने अपना दास बना लिया था, तथा बहुत लम्बे समय तक कड़े दासत्व में रहने के बाद मूसा द्वारा, परमेश्वर की आज्ञानुसार, इस्राएली लोग मिस्र देश से बाहर निकाले गए थे। मिस्र का राजा फिर इस्राएलियों को स्वतंत्र नहीं करना चाहता था, और उसके हठीलेपन के कारण परमेश्वर ने मिस्र देश पर दस भारी विपत्तियां भेजी थीं, और तब जाकर लोगों को वहां से जाने की अनुमति मिली (निर्गमन 7:12)। परमेश्वर के एक अद्‌भुत कार्य के कारण उन्होंने लाल समुद्र को सूखी भूमि पर चलकर पार किया था और इस प्रकार से वे मिस्रियों के हाथों बच निकले, जो कि इस्राएलियों का पीछा करने के प्रयत्न में स्वयं ही समुद्र में डूब मरे थे (निर्गमन 14)। यह अनुमान लगाया जाता है कि इस समय तक इस्राएलियों की संख्या लगभग 20 लाख से भी अधिक थी।
9. लाल समुद्र को पार करने के कुछ ही समय बाद इस्राएली लोग सीने के

जंगल में पहुंचे थे जहां मूसा ने सीने पर्वत पर परमेश्वर से दस आज्ञाएं प्राप्त की थी। (निर्गमन 20)। इसके बाद के चालीस वर्षों तक इस्राएलियों को, परमेश्वर में दृढ़ विश्वास न होने के कारण, जंगल में भटकना पड़ा था (देखिए गिनती 14)।

10. मूसा की मृत्यु के बाद, यहोशू के नेतृत्व में लोगों ने यरदन नदी को पार किया और तत्पश्चात उन्होंने प्रतिज्ञा किए हुए देश, कनान, में प्रवेश किया, जिसको उन्होंने समस्त कनान के राजाओं समेत जीत लिया था, और फिर उसे आपस में गोत्रों में बांट लिया था (यहोशू 1-22)।
11. यहोशू की मृत्यु के बाद, परमेश्वर ने लोगों की अगुवाई करने के लिये उन पर न्यायी ठहराए। उस समय में शिमशोन, गिदोन तथा शमूएल जैसे प्रसिद्ध अगुवे हुए (न्यायियों 3-21)। कई वर्षों के बीतने के बाद एस्राएली अन्य जातियों की तरह होने की मांग करने लगे। उन्होंने अपने अंतिम न्यायी, शमूएल को अस्वीकार कर दिया और अपने ऊपर राज्य करने के लिए एक राजा की मांग की। परन्तु परमेश्वर इससे बहुत अप्रसन्न हुआ, किन्तु फिर भी उसने उन्हें अनुमति दे दी कि वे अपने लिए एक राजा चुन लें। इस्राएल के पहिले तीन राजा थे, शाउल, दाऊद तथा सुलैमान (दाऊद का पुत्र)।
12. सुलैमान की मृत्यु के पश्चात् इस्राएल का राज्य दो भागों में बंट गया। यारोबाम के नेतृत्व में दस लोगों ने राजद्रोह करके एक उत्तरी राज्य (जो "इस्राएल" के नाम से जाना गया) बना लिया। जबकि दो गोत्रों ने (यहूदा तथा बिनियामीन), सुलैमान के पुत्र रहुबियाम के नेतृत्व में दक्षिणी राज्य बनाया, जो "यहूदा" के नाम से जाना गया (1 राजा 12)।
13. अपनी दुष्टता तथा मूर्ति-पूजा के कारण उत्तरी राज्य शीघ्र ही अश्शूर की आधीनता में चला गया और फिर उसका नाम एक जाति की तरह नहीं सुना गया।
14. कुछ ही वर्षों के भीतर दक्षिणी राज्य के दोनों गोत्रों को भी बाबुल के राजा नबुकदनेस्सर ने अपने आधीन कर लिया। इसी अवधि में दानियेल, शद्रक, मेशक और अबेदनगो जैसे व्यक्ति हुए। कई वर्षों के बाद उन्हें यरुशलेम को लौट जाने की अनुमति मिली, तब उन्होंने जरुब्बाबेल, राजा तथा नहेम्याह के नेतृत्व में शहरपनाह तथा मंदिर को फिर से बनवाया।

पुराने नियम का शेष इतिहास मुख्य रूप से यहूदियों के सामान्य कार्य-कलाप के विषय में बतलाता है, तथा मसीह के जन्म के विषय में भी, जो कि भविष्य में होने वाला था, बताता है।

उत्पत्ति

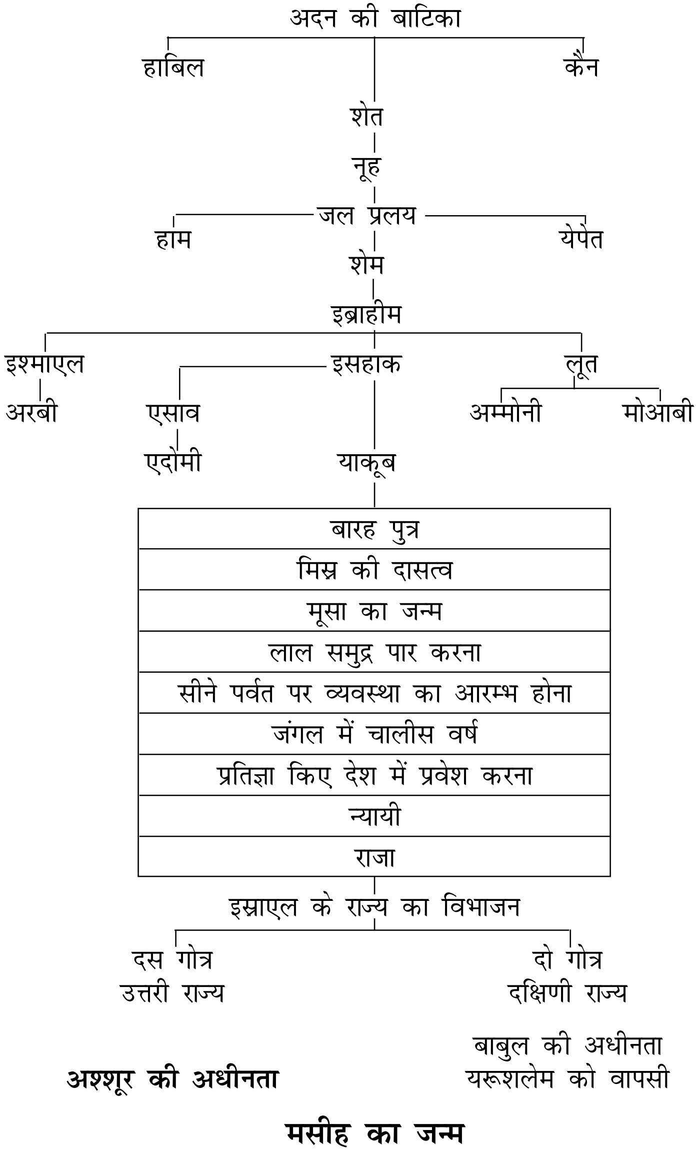

अदन की बाटिका
हाबिल
कैन
शेत
नूह
जल प्रलय
हाम
येपेत
शेम
इब्राहीम
इश्माएल
इसहाक
लूत
अरबी
एसाव
अम्मोनी
मोआबी
एदोमी
याकूब
बारह पुत्र
मिस्र की दासत्व
मूसा का जन्म
लाल समुद्र पार करना
सीने पर्वत पर व्यवस्था का आरम्भ होना
जंगल में चालीस वर्ष
प्रतिज्ञा किए देश में प्रवेश करना
न्यायी
राजा
इस्राएल के राज्य का विभाजन
दस गोत्र
उत्तरी राज्य
दो गोत्र
दक्षिणी राज्य
बाबुल की अधीनता
अश्शूर की अधीनता
यरूशलेम को वापसी
मसीह का जन्म

पुराने नियम के विषय में हाल ही में हुई खोजें

शताब्दियों से पुराना नियम प्राचीनकाल की अनेकों घटनाओं, स्थानों व लोगों के विषय में ऐतिहासिक तथ्यों का प्रमाणक रहा है। बाइबल में विश्वास न करने वाले, बहुतेरे अविश्वासी लोगों ने किसी समय में इन में से कई वास्तविकताओं को असत्य व मिथ्या बताकर सार्वजनिक रूप से इनका उपहास किया था। यह तर्क किया जाता था कि जबकि इनके विषय में अन्य ऐतिहासिक लेखों में कहीं पर भी नहीं मिलता, इसलिए यह सर्वदा के लिये सिद्ध हो जाता है कि बाइबल असत्य है। किन्तु कुछ ही समय पूर्व हुई पुरातत्त्व खोजों ने पूर्ण रूप से यह प्रमाणित कर दिया है कि बाइबल वास्तव में सत्य व बिल्कुल सही है तथा वे जो इसका विरोध करते हैं वे झूठे हैं।

उत्पत्ति 11:31 में, उदाहरणार्थ, बताया गया है कि इब्राहीम (अब्राम) कुछ समय तक ऊर नामक नगर में रहा था। इससे पहिले कि पुरातत्त्व खुदाइयों के द्वारा इस विशाल नगर के खंडहर मिलते, बहुधा यह कहा जाता था कि इस नाम का कोई नगर कभी नहीं था। किन्तु अब इस खुदाई में मंदिर, बहुतेरे घर व राजा तथा रानी की कब्रें तक मिली हैं।

हित्ती-जाति के विषय में भी, जिसका वर्णन उत्पत्ति 15:20 में मिलता है, बाइबल के अतिरिक्त कहीं नहीं मिलता था। परन्तु मिस्र तथा अश्शुर में की गई पुरातत्व खोजों के द्वारा अब यह प्रमाणित हो गया है कि हित्ती जाति वास्तव में थी तथा यह एक शक्तिशाली जाति थी जो कि लगभग सात शताब्दियों तक बनी रही। और इस प्रकार से एक बार फिर से यह सिद्ध हो जाता है, कि बाइबल बिलकुल सत्य है तथा अविश्वासी लोग, जिन्होंने इसका विरोध किया, झूठे हैं।

अब मिस्र के प्राचीन नगर पितोम का भी पता लगाया जा चुका है, तथा जिस प्रकार के भंडारों को इस्राइलियों ने वहां पर बनाया था, ठीक वही भंडार निकाले गए हैं। इनके नीचे के भाग में ईटों के साथ पुआल लगा हुआ है, और ऊपरी भाग में ईंटें पुआल के बिना लगी हुई हैं। (देखिए निर्गमन 1:11; 5:7)। मेनेपताह दोयम् की ममि (मसाला लगाकर सुरक्षित किया हुआ मृतक शरीर), जिसके विषय में विश्वास किया जाता था कि वह निर्गमन की पुस्तक में उल्लिखित की गई है, उसको भी खोज लिया गया है। उसके विषय में एक लेख भी मिला है, इसमें इस्राएल का वर्णन हुआ है, व इससे उसके पुत्र जिसका उल्लेख कदाचित निर्गमन 12:29 में हुआ, की मृत्यु के विषय में पता चलता है।

इसके अतिरिक्त यरीहो की शहरपनाह के अवशेष भी भूमि खोदकर निकाले गए हैं और ये ठीक उसी प्रकार से मिले हैं जैसे कि यहोशू के 6 अध्याय में हम पढ़ते हैं। और अधिक खुदाई करने से यह भी पता चला है कि इस नगर को बिना लूट-पाट किऐ जानबूझकर आग लगाकर फूंका गया था। यह भी बाइबल में लिखित उक्त घटना के विवरण से मेल खाता है।

इसी प्रकार से, गोशेन देश की स्थिति, यारोबाम राजा की मूर्तिपूजा के विरूद्ध योशियाह के युद्ध का वर्णन, विश्वव्यापी जल-प्रलय का प्रमाण, पलिश्तीन देश पर सन्हेरीब द्वारा आक्रमण करने का इतिहास, हिजकियाह राजा व नीनवे नगर का वर्णन, मोआबिओ के युद्ध का विवरण जिसमें "एस्राएल के राजा ओम्री" का उल्लेख हुआ है तथा "यहोवा" को सम्बोधित करने के लिए ऐसे शब्द जैसे कि "अनजाने ईश्वर के लिये" जिसके लिए पौलुस ने प्रेरितों 17:23 में बताया था व असंख्य अन्य बाइबल के तथ्यों की पुष्टि भी हाल ही में हुई खोजों के द्वारा हुई है। निःसंदेह, वह व्यक्ति अंधा है जो परमेश्वर के वचन को इन प्रत्यक्ष प्रमाणों के होते हुए भी, झूठा ठहराने का प्रयत्न करता है।

प्रभावकारी अध्ययन के लिये कुछ उपयोगी सुझाव

1. ध्यान-पूर्वक अध्ययन करें: अपने पूर्व विचारों का पुष्टिकरण नहीं, किन्तु यह ढूंढ़ने का प्रयत्न करें कि बाइबल वास्तव में क्या शिक्षा देती है। स्मरण रहे, सुसमाचार हमारे विचार नहीं, परन्तु उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है (रोमियों 1:16)।

2. बाइबल का अध्ययन क्रमानुसार करें: इस पाठ्यक्रम का यही एक मूल उद्देश्य है। स्कूल में कोई विद्यार्थी रसायन-शास्त्र, गणित, अथवा विज्ञान की शिक्षा भलीभांति प्राप्त नहीं कर सकता यदि वह अनियमित रूप से एक विषय से दूसरे विषय पर कुदान लगाता फिरे। बाइबल अध्ययन में भी ऐसा ही है।

3. बाइबल का अध्ययन प्रतिदिन करें: बाइबल में प्रेरितों के काम की पुस्तक के 17वें अध्याय के 11 के पद में बिरिया के लोगों के विषय में यूं लिखा है, "ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रति-दिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें योंहि हैं, कि नहीं"। जबकि इन चेलों को प्रेरितों की शिक्षाओं को जांचने के लिये प्रोत्साहित किया जाता था तो हमें आज क्यों नहीं चौकस रहना चाहिए?

4. यह मानें कि सत्य अटल रहता है: कभी–कभी हम यह कथन सुनते हैं कि "बाइबल से कुछ भी प्रमाणित किया जा सकता है।" इस प्रकार की टिप्पणी का अभिप्राय परमेश्वर के वचन की पूर्णरूप से निन्दा करना है। यदि उपरोक्त कथन सही है तो बाइबल असत्य से परिपूर्ण, और प्रत्येक पृष्ठ पर स्वयं अपना ही विरोध करती है। अधिकांश लोग बहुत ही क्रोधित हो उठेंगे यदि उनसे कोई कहे कि उनका स्वभाव इस प्रकार का है कि "उनके द्वारा कुछ भी प्रमाणित किया जा सकता है।" तो भी ठीक यही दोष परमेश्वर के वचन पर लगाया जाता है। स्मरण रहे, कि सत्य कभी भी स्वयं का विरोध नहीं करता। यदि धार्मिक विश्वास या मत एक दूसरे के विरोधी है तो इसका मूल कारण यह है कि उन में से एक, व कदाचित् दोनों ही सत्य के अनुकूल नहीं है।

5. अध्ययन विस्तार पूर्वक करें:यदि हम वह सब कुछ, जो परमेश्वर हमें बताना चाहता है, बाइबल के एक ही पद को पढ़कर जान सकते हैं तो शेष पवित्र शास्त्र का कुछ भी उद्देश्य नहीं होगा। बाइबल के किसी भी एक पद का अध्ययन करते समय पूरे अध्याय के प्रसंग को (अर्थात् विचाराधीन पद के आस–पास के पदों को) ध्यान में अवश्य रखें, तथा यह भी कि उक्त कथन किसको, कब और किस स्थिति में लिखा गया था।

6. बाइबल की शिक्षाओं को व्यक्तिगत रूप से व्यवहार में लाएं:बाइबल में एक अत्यंत ही शोक–जनक घटना का उल्लेख जो मत्ती के 19वें अध्याय में मिलता है, वह उस धनवान नौजवान के विषय में है जो अनन्त जीवन को प्राप्त करने के मार्ग को जानने के लिये प्रभु यीशु के पास आया था। किन्तु प्रभु का उत्तर सुनकर, बाइबल कहती, "वह उदास होकर चला गया।" बाइबल का ज्ञान होना तो बहुत अच्छा है, किन्तु यदि उसे ठीक रीति से व्यवहार में न लाया जाए तो वह लाभदायक सिद्ध नहीं होगा। सो परमेश्वर अपने वचन के इस अध्ययन के द्वारा आपको बहुतायत से आशीष दे।

प्रश्नः निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देकर प्रश्न-पृष्ठ को नीचे पते पर जांचने के लिए भेज दें।

1. पहले क्या हुआ था?
जो पहले घटित हुआ हो उसके नीचे एक रेखा खींच दें:

1. क. इब्राहीम का जन्म
   ख. मूसा का जन्म
   ग. जल प्रलय
2. क. लाल समुंद्र पार करना
   ख. प्रतिज्ञा किए देश में प्रवेश करना
   ग. मूसा की मृत्यु
3. क. हाबिल की मृत्यु
   ख. शेत का जनम
   ग. नूह का जन्म
4. क. इस्राएल का घराना
   ख. याकूब का जन्म
   ग. मूसा की मृत्यु
5. क. राज्य का विभाजन
   ख. राजा
   ग. न्यायी
6. क. इसहाक
   ख. सुलैमान
   ग. यहोशू
7. क. राजा दाऊद
   ख. राजा सुलैमान
   ग. राजा शाऊल
8. क. प्रतिज्ञा किए देश में प्रवेश करना
   ख. राजा दाऊद
   ग. दस आज्ञाएं
9. क. मोआबी
   ख. लूत का जन्म
   ग. अम्मोनी
10. क. राज्य का विभाजन

ख. बाबुल की आधीनता
ग. मसीह का जन्म

2. दो के नाम बताइए:
निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न के दो उत्तर लिखिए:

1. इस्राएल के पहिले दो राजा थे
   1. ______________________
   2. ______________________
2. इब्राहीम के दो पुत्र थे
   1. ______________________
   2. ______________________
3. आदम तथा हव्वा के पहले दो पुत्र थे
   1. ______________________
   2. ______________________
4. इसहाक के दो पुत्र थे
   1. ______________________
   2. ______________________
5. दक्षिणी राज्य में दो गोत्र थे
   1. ______________________
   2. ______________________

3. सत्य-असत्य
यदि कथन सत्य है तो ''स'' के ऊपर व यदि असत्य है तो ''अ'' के ऊपर गोलाकार बना दें।

स अ 1. इब्राहीम कुछ समय तक ऊर नगर में रहा था
स अ 2. यरीहो की शहरपनाह के अवशेष भूमि खोदकर निकाले गए हैं।
स अ 3. यहोशू की मृत्यु के बाद मूसा इस्राएलियों का अगुवा बना था।
स अ 4. परमेश्वर की बहुत इच्छा थी कि इस्राएलियों का एक अपना राजा हो।
स अ 5. जलप्रलय के बाद पृथ्वी पर सब प्राणियों में से केवल आठ ही व्यक्ति जहाज के भीतर बचे थे।

नया नियम

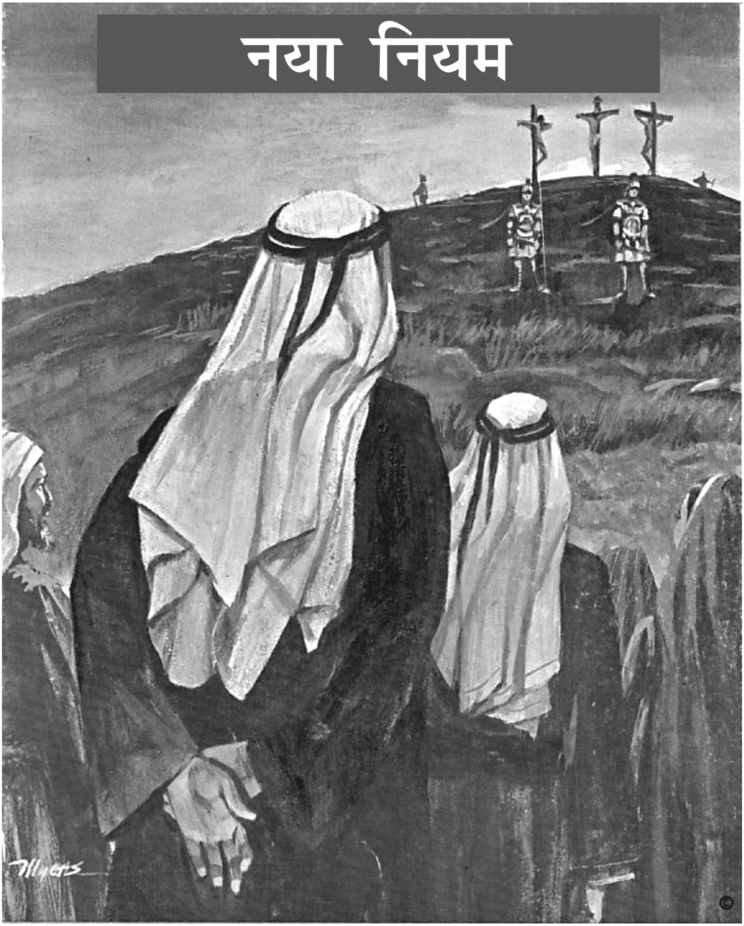

पाठ दो
बाइबल अध्ययन श्रृंखला

जॉन एम. हर्ट

पाठ दो
नया नियम

बाइबल का दूसरा तथा महत्वपूर्ण भाग नया नियम है। इसमें सताईस पुस्तकें हैं जो कि आठ विभिन्न व्यक्तियों द्वारा लिखी गई हैं। जिस प्रकारा पुराना नियम सर्वप्रथम इब्रानी भाषा में लिखा गया था, वैसे ही नया नियम सबसे पहिले यूनानी भाषा में लिखा गया था। तब से लेकर अब तक लगभग 1500 विभिन्न भाषाओं में बाइबल की पुस्तकों का अनुवाद किया जा चुका है। बाइबल का सबसे अधिक लोकप्रिय अंग्रेजी अनुवाद, किंग जेम्स वर्शन, (राजा जेम्स द्वारा अनुवाद कराया हुआ) है। सबसे प्रथम सन् 1611 में संसार के 47 महान विद्वानों ने यह अनुवाद किया था। दूसरा अनुवाद जो अधिकतर व्यवहार में लाया जाता है, रिवाइज्ड् वर्शन (संशोधित अनुवाद) है। यह अनुवाद सन् 1885 ई. सं. में इंगलैंड तथा अमेरिका के एक-सौ एक प्रसिद्ध विद्वानों ने किया था।

पहली शताब्दि के आरम्भ के दिनों में, जबकि नया नियम लिखित रूप में उपलब्ध नहीं था, इसके लेखकों व शिक्षकों ने इसके उपदेशों को परमेश्वर द्वारा प्रेरणा पाकर लोगों को प्रदान किया था। किन्तु पहिली शताब्दी के समाप्त होने से पूर्व यह सर्वदा के लिये लिखित रूप में सब पीढ़ियों के लोगों के लिये उपलब्ध हो गया था। नए नियम की पुस्तकों की एक सूची, जिसमें पुस्तकों के लेखकों के नाम व पुस्तकों के लिखे जाने की लगभग सही तिथियों को दर्शाया गया है ऊपर दी जा रही है।

इस सूची-पत्र का अध्ययन करते समय यह ध्यान रखें कि अधिकांश प्राचीन तिथियां प्राय: विवाद का विषय रही है तथा हिसाब लगाने की विधियों द्वारा थोड़ा-बहुत अंतर आ सकता है। अक्सर बाइबल के पृष्ठों के अलिखित भाग अथवा पुस्तक के अन्त में इस प्रकार की तिथियों तथा टिप्पणियों का उल्लेख मिलता है, किन्तु इन्हें अनुवादकों या मुद्रकों द्वारा लिखा गया है और इसलिये इन्हें पवित्र लेख का भाग नहीं समझ लेना चाहिए। ठीक यही वास्तविकता बाइबल में उल्लिखित लोगों के चित्रों के विषय में भी है, ये चित्र चित्रकारों की निरी कल्पना पर आधारित होते हैं। आज तक एक भी मौलिक (वास्तविक) चित्र किसी को नहीं मिला है।

यह बात ध्यानाकर्षक है कि नए नियम की कम-से-कम तेरह पत्रियां

पौलुस ने लिखी हैं, अर्थात् रोमियों की पत्री से लेकर फिलेमोन की पत्री तक जहां तक पुस्तकों की गिनती का प्रश्न है, पौलुस ने अन्य लेखकों की अपेक्षा सबसे अधिक पत्रियां लिखी हैं। उसे इब्रानियों की पत्री का लेखक भी सामान्यत: स्वीकार किया जा चुका है, यद्यपि इस पत्री में कहीं पर भी उसका नाम लेखक के रूप में नहीं आया है। यदि इब्रानियों की पत्री को पौलुस के लेखों में से पृथक कर दिया जाए तो लूका ने अपनी दो पुस्तकों अर्थात् "लूका रचित सुसमाचार" तथा "प्रेरितों के काम" में लगभग उतने ही शब्द लिखे हैं जितने पौलुस ने अपनी तेरह पत्रियों में लिखे हैं।

	पुस्तक	लेखक	तिथि
1.	मत्ती	मत्ती	50 ई. स.
2.	मरकुस	मरकुस	67-68 ई.स.
3.	लूका	लूका	58 ई.स.
4.	यूहन्ना	यूहन्ना	85-90 ई.स.
5.	प्रेरितों के काम	लूका	61 ई.स.
6.	रोमियों	पौलुस	56 ई.स.
7.	1 कुरिन्थियों	पौलुस	54 ई.स.
8.	2 कुरिन्थियों	पौलुस	55 ई.स.
9.	गलतियों	पौलुस	55-56 ई.स.
10.	इफिसियों	पौलुस	60 ई.स.
11.	फिलिप्पियों	पौलुस	61 ई.स.
12.	कुलुस्सियों	पौलुस	60 ई.स.
13.	1 थिस्सलुनीकियों	पौलुस	50-51 ई.स.
14.	2 थिस्सलुनीकियों	पौलुस	51 ई.स.
15.	1 तीमुथियुस	पौलुस	64-65 ई.स.
16.	2 तीमुथियुस	पौलुस	67-68 ई.स.
17.	तीतुस	पौलुस	65 ई.स.
18.	फिलमोन	पौलुस	60 ई.स.
19.	इब्रानियों	अनिश्चित (कदाचित पौलुस)	67-68 ई.स.
20.	याकूब	याकूब	45-48 ई.स.
21.	1 पतरस	पतरस	65 ई.स.
22.	2 पतरस	पतरस	66-67 ई.स.
23.	1 यूहन्ना	यूहन्ना	85-60 ई.स.
24.	2 यूहन्ना	यूहन्ना	85-90 ई.स.
25.	3 यूहन्ना	यूहन्ना	85-90 ई.स.
26.	यहूदा	यहूदा	75 ई.स.
27.	प्रकाशित वाक्य	यूहन्ना	95-96 ई.स.

नए नियम के लेखक

जिन महान व्यक्तियों को परमेश्वर ने नए नियम को लिखने के लिये प्रेरणा दी थी उनका जीवन-चरित्र बहुत ही रोचक हैं। मसीह के नाम के कारण उनका दु:ख, कलेश व कष्ट सहना तथा शैतान की सब बुराईयों के ऊपर उनका विजय प्राप्त करना, यह सब परमेश्वर के लोगों के लिए, हरएक पीढ़ी में, एक उत्तम उदाहरण रहा है। संक्षिप्त में उनके जीवनों का वर्णन निम्नलिखित हैं:

मत्ती – चुंगी लेने वाला, या महसूल लेने वाला था। वह रोमी साम्राज्य के लिये यहूदियों से राज्य की वार्षिक आय लिया करता था। यीशु मसीह के दिनों में महसूल लेने वाले लोग बहुधा अपने छल व कपट के कारण यहूदियों द्वारा अत्यंत घृणा की दृष्टि से देखें जाते थे। मत्ती को प्रभु यीशु ने प्रेरित होने के लिये चुना व बुलाया था (मत्ती 9:9, लूका 6: 13-16)। उसे ''लेवी'' तथा ''हलफई का पुत्र'' भी कहा गया है (मरकुस 2:1 4)। ऐसा विश्वास किया जाता है कि मसीह के लिये गवाही देने के कारण मत्ती को इथोपिया में तलवार से मार दिया गया था। उसके द्वारा लिखित सुसमाचार की पुस्तक उसी के नाम से कहलाती है।

मरकुस – बरनबास नाम के यीशु के एक अनुयायी का ममेरा भाई मरकुस की पुस्तक का लेखक था, तथा प्रभु का सुसमाचार प्रचार करने में पौलुस तथा बरनबास का सहकर्मी था। उसका पूरा नाम यूहन्ना मरकुस था, बाइबल में उसके दोनों नामों का एक साथ भी उल्लेख हुआ है (देखिये प्रेरितों 12:12)।

लूका – एक वैद्य था तथा पौलुस का बहुत ही गूढ़-मित्र व सहकर्मी था। उसने ''लूका'' ''प्रेरितों के काम'' नामक पुस्तकें लिखीं। लूका ही एक ऐसा चेला था जो प्रेरित पौलुस के जीवन के अन्त के दिनों में उसके साथ था। (2 तीमुथियुस 4:11)।

यूहन्ना – एक प्रेरित तथा याकूब का भाई था। उसने ''प्रकाशितवाक्य'' की पुस्तक के अतिरिक्त चार अन्य पुस्तकों को भी लिखा था। ये चार पुस्तकें उसी के नाम से कहलाती हैं। इसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, (जिसने बाइबल का कोई भी भाग नहीं लिखा था), अथवा यूहन्ना मरकुस, जिसका वर्णन ऊपर हुआ है, नहीं समझ लेना चाहिए। ऐसा विश्वास किया जाता है कि केवल वही एक ऐसा प्रेरित था जिसकी मृत्यु स्वाभाविक रूप से हुई थी।

पौलुस – एक बहुत ही शिक्षित पुरुष था। वह पहिले अपने इब्रानी नाम ''शाऊल'' द्वारा जाना जाता था, तथा एक मसीही बनने से पहले मसीह की कलीसिया को निर्दयता से सताया करता था। उसके पूर्व-विचार अनुसार मसीही धर्म परमेश्वर के विरूद्ध था, और इस कारण वह बाहर के नगरों में भी जा-जाकर उन लोगों को सताया व मरवा दिया करता था जो मसीह का अनुकरण करते थे (प्रेरितों 26:5-11)। पौलुस का मन-परिवर्तन होने के बाद (जिसका वर्णन प्रेरितों के काम 9, 22 व 26 अध्यायों में मिलता है) वह एक प्रसिद्ध प्रचारक तथा अंतिम प्रेरित बन गया था (1 कुरिन्थियों 15:8-9, गलतियों 1:1)। उसके अधिकांश कार्यों का वर्णन संक्षिप्त रूप से प्रेरितों के काम की पुस्तक के 13-28 अध्यायों में मिलता है। सामान्यत: यह विश्वास किया जाता है कि लगभग 68 ई.स. में रोम में पौलुस का सिर कटवा दिया गया था।

याकूब – नए नियम में इस नाम के तीन चेलों का वर्णन हुआ है (देखिए मरकुस 1:19, गलतियों 1, 19, मत्ती 10:3)। "याकूब" की पुस्तक को इन तीनों में से किसने लिखा है, दृढ़ता के साथ इस विषय में निश्चय करना बहुत ही कठिन है।

पतरस – जो कि "शमौन" तथा "कैफा" भी कहलाता था, अन्द्रियास का भाई था। वह एक प्रेरित तथा विवाहित पुरुष था (मरकुस 1:30, 1 कुरिन्थियों 9:5)। जब प्रभु यीशु ने पतरस को अपने पीछे हो लेने के लिए बुलाया था तो वह उस समय तक अशिक्षित मछुआ था, किन्तु यीशु मसीह के पुनरुत्थान के बाद वह एक प्रभावशाली सुसमाचार प्रचारक बन गया था, तथा उसने दो पत्रियां लिखी जो कि उसी के नाम से जानी जाती हैं। उसके जीवन में घटित बहुतेरी घटनाओं का वर्णन प्रेरितों के कामों की पुस्तक के 1–12 अध्यायों में मिलता है। बहुतेरे लोगों का विचार है कि पतरस को क्रूस पर उल्टा लटकाकर मार दिया गया था।

यहूदा – के विषय में निश्चित रूप से इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कहा जा सकता कि वह एक भक्त चेला था तथा "यहूदा" की पुस्तक का लेख था। कुछ लोगों का कहना है कि वह प्रभु के भाईयों में से एक था (मत्ती 13:55)।

नए नियम की रूपरेखा

मत्ती–यूहन्ना: ये चार पुस्तकें (प्राय: इन्हें सुसमाचार कहा जाता है) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के जन्म से लेकर यीशु मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने, व उसके पुनरुत्थान तथा स्वर्गारोहण तक बतलाती है।

प्रेरितों के काम: इसे बहुधा "मन–परिवर्तन की पुस्तक" कहा जाता है, क्योंकि इस पुस्तक में उन लोगों के विषय में विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है जिन्होंने आरम्भ में वास्तव में नया जन्म प्राप्त किया था। इस पुस्तक में यह भी बताया गया है कि कलीसिया का आरम्भ कैसे हुआ था तथा उसने किस प्रकार से उन्नति की थी।

रोमियों–यहूदा: ये इक्कीस पत्रियां विशेषकर मसीहियों को लिखी गई थीं व इनमें बताया गया है कि उन्हें किस प्रकार की ईमानदारी तथा निष्कपटता से मसीही जीवन व्यतीत करना चाहिए।

प्रकाशित–वाक्य: भविष्यद्वाणी की यह पुस्तक विशेष रूप से आलंकारिक (प्रतीकात्मक) ढंग से लिखी गई थी, यह धर्म तथा अधर्म के मध्य आत्मिक युद्ध के विषय में बताती है। इस पुस्तक को निरे शाब्दिक आधार पर ठीक से नहीं समझा जा सकता।

परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा बाइबल का लिखा जाना

2 तीमुथियुस 3:16 में बाइबल हमें बताती है कि "हर एक पवित्र–शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है......" बाइबल के इस असीम सत्य का अर्थ यह है कि जिन लोगों ने बाइबल को लिखा है उन्हें परमेश्वर द्वारा प्रेरणा मिली थी। यद्यपि बाइबल को लिखने के लिए परमेश्वर ने मनुष्य के हाथों का उपयोग किया था किन्तु उसने उन लेखकों का नेतृत्व इस प्रकार से किया था कि उन्होंने केवल वही लिखा जो परमेश्वर की इच्छानुसार था। (1 थिस्सलुनीकियों 2:13)।

पुराने तथा नए नियम को पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि बाइबल वास्तव में परमेश्वर का वचन है। स्वयं पुराने नियम में ही इस प्रकार के शब्दों का उपयोग "यहोवा यूं कहता है" "परमेश्वर का वचन आया" लगभग 3,800 बार हुआ है। ऐसे ही, नए नियम के लेखकों ने भी इस प्रकार के शब्दों का उपयोग किया है जैसे, "परमेश्वर की आज्ञाएं" व "प्रभु का वचन।" पवित्रशास्त्र के निम्नलिखित पद इस वास्तविक्ता पर विशेष रूप से प्रकाश डालते हैं कि बाइबल को परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा ही लिखा गया है।

2 पतरस 1:21–"क्योंकि कोई भी भविष्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की इच्छा से बोलते थे।"

1 **कुरिन्थियों** 14:37–"....जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूं, वे प्रभु की आज्ञाए हैं।"

1 **पतरस** 1:25–"परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहेगा और यह वही सुसामचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था।"

2 **तीमुथियुस** 3:16–17–"हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है...."

गलतियों 1:8–"परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुम्हें सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो श्रापित हो।"

साथ ही नए नियम के निम्नलिखित पदों पर भी ध्यान दें: 1 थिस्सलुनीकियों 2:13; गलतियों 1:11–12; लूका 1:68–71; मत्ती 10:19:20

बाइबल के इन पदों से तथा ऐसे ही अन्य पदों से यह प्रत्यक्ष है कि जब कोई व्यक्ति बाइबल की शिक्षाओं की उपेक्षा करता है तो फलस्वरूप वह स्वयं ही परमेश्वर से मुंह मोड़ लेता है।

भविष्यद्वाणियों का प्रमाण

बाइबल को परमेश्वर का वचन सिद्ध करने वाले विभिन्न महत्वपूर्ण प्रमाणों में से एक विशेष प्रमाण हमें बाइबल की परिपूर्ण भविष्यद्वाणियों में मिलता है। बाइबल में उल्लेखित सैकड़ों भविष्यद्वाणियां पूर्ण होने से कई सौ बल्कि हजारों वर्ष पूर्व लिखी गई थीं, किन्तु तो भी वे ठीक उसी प्रकार से घटित हुई जैसे कि पवित्रशास्त्र में पूर्वलिखित था। लौकिक इतिहास इस विषय में साक्षी देता है कि ये भविष्यद्वाणियां पूर्ण होने से पूर्व पवित्रशास्त्र में लिखित थीं। ये भविष्यद्वाणियां इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि बाइबल को परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा लिखा गया था। लिखने के लिए स्थान की कमी होने के कारण यहां हम केवल पांच उदाहरणों का ही संक्षिप्त में वर्णन कर रहे हैं:

दानिय्येल 2–लगभग 600 ई.पू. में दानिय्येल ने चार विशाल साम्राज्यों के आगमन के विषय में कहा था। आज हम जानते हैं कि वे ठीक उसी प्रकार से हुए जैसे कि दानिय्येल ने कहा था। वे साम्राज्य ये थे, बाबुल का साम्राज्य (दानिय्येल के समय का), मादी–फारसी साम्राज्य (56–331 ई.पू.), यूनानी साम्राज्य (331–168 ई.पू.) तथा यीशु मसीह के समय का रोमी साम्राज्य। इस भविष्यद्वाणी के विभिन्न चिन्ह सविस्तार पूर्ण हुए थे।

यशायाह 13:16–22–इस भविष्यद्वाणी को लगभग 750 ई.पू. में लिखा गया था। उस समय पृथ्वी पर बाबुल नाम का एक अत्यंत ही शक्तिशाली नगर था, उसकी शहरपनाह की दीवारें 87 फुट थीं। बाबुल का प्रसिद्ध सीढ़ी–नुमा बाग विश्व की सात अद्भुत वस्तुओं में से एक था। इस नगर के विषय में भविष्द्वक्ता ने कहा था कि यह नगर इस प्रकार से नष्ट हो जाएगा कि फिर कभी भी न बसेगा। और बाबुल सचमुच में नाश हो गया तथा आज तक केवल खण्डहरों की दशा में पड़ा हुआ है। जहां पर किसी समय में विशाल राज–भवन खड़े हुए थे आज वहां जगली जन्तु घूमते-फिरते, हैं, जबकि उस समय के अन्य अप्रसिद्ध नगर आज भी विद्यमान हैं। इस प्रकार की भविष्यद्वाणियां सोर (यहेजकेल 26:6–8, 21), सामरिया (मीका 1:6), तथा नीनवे (सपन्याह 2:13–15) नगरों के विषय में भी पूर्ण हुई थीं।

व्यवस्था विवरण 28–लगभग 1400 ई.पू. में मूसा ने यहूदियों के विषय में कहा था कि भविष्य में अपनी दुष्टता के कारण वे किसी अन्य देश द्वारा पराजित होगें और संसार में तितर–बितर हो जाएंगे। इस भविष्यद्वाणी के अंश लगभग 1500 वर्षों तक तो अपूर्ण रहे, किन्तु तत्पश्चात सन् 70 में शक्तिशाली रोमी सिपाहियों ने पलश्तीन देश के भीतर घुसकर उसको हरा दिया तथा

यरुशलेम नगर को उजाड़ कर दिया। इस भविष्यद्वाणी के विषय में विस्तार से और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है, जिसका वर्णन इस छोटे से पाठ में नहीं किया जा सकता। इतिहास साक्षी देता है कि इस भविष्यवाणी का हर एक अंश प्रत्येक दृष्टिकोण से सही है।

यशायाह 53 तथा भजन संहिता 22–ये विलक्षण भविष्यद्वाणियां यीशु मसीह के भविष्य में होने वाले क्रूसारोहण के विषय में इस प्रकार स्पष्टता से वर्णन करती हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि कदाचित् इनके लेखकों ने वास्तव में यीशु मसीह के क्रूस के पास खड़े होकर ही ये सब कुछ लिखा हो। दाऊद यीशु मसीह से लगभग एक हजार वर्ष पूर्व हुआ था, और यशायाह लगभग 750 ई.पू. में। यीशु मसीह के आगमन पूर्व कई शताब्दियों से पढ़े जाने वाले पुराने नियम के अन्य अनुवादों में भी इन लेखों का उल्लेख मिलता है। इन भविष्यद्वाणियों के बहुतेरे कथन इस प्रकार के हैं जिनका अकस्मात् या किसी मनुष्य की इच्छा द्वारा पूर्ण होना असम्भव था। उन्होंने भविष्यद्वाणी की थी, उदाहरणार्थ कि यीशु मसीह की मृत्यु क्रूस पर होगी (भजन 22:16), व उसके हत्यारे उसके वस्त्रों के लिये आपस में चिट्ठियां डालेंगे (भजन 22:18, मरकूस 15:24), तथा उसे किसी धनवान की कब्र में गाड़ा जाएगा (यशायाह 53:9; मत्ती 27:57–69), और उसके कोड़े लगाए जाएंगे (यशायाह 53:5; मत्ती 27:26), तथा बहुतेरी अन्य बातों के विषय में भी उन्होंने कहा था जिनमें कुछ ऐसे कथन भी थे जो मसीह के विषय में कहे जाएंगे (भजन 22:1–8, मत्ती 27:43–46)।

वैज्ञानिक पूर्वज्ञान का प्रमाण

परमेश्वर की प्रेरणा का एक और महत्वपूर्ण प्रमाण हमें बाइबल के वैज्ञानिक पूर्वज्ञान में मिलता है। हाल ही में उपलब्ध हुए बहुतेरे वैज्ञानिक सत्यों का वर्णन मसीह से सैंकड़ों वर्ष पूर्व बाइबल में लिखा गया था।

हजारों वर्षों से, उदाहरणार्थ, मनुष्य का विश्वास था कि पृथ्वी समतल या लम्बी है, व कहा जाता था कि यदि समुद्र में कोई जहाज बहुत आगे, समुद्र के छोर तक चला जाए तो वह गिरकर नाश हो जाएगा। आज इस प्रकार की कल्पना के ऊपर भी हमें हंसी आती है, तौभी समस्त संसार इस सिद्धांत पर कोलम्बस के दिनों तक विश्वास करता था। पृथ्वी के गोल होने का प्रमाण केवल तभी प्राप्त हुआ जब 1522 में मैगलन ने प्रथम बार पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाया था। किन्तु मैगलन की जल–यात्रा से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व

लिखे बाइबल के ये शब्द हमें बताते हैं कि; ''यह वह (परमेश्वर) है जो पृथ्वी, के घेरे के ऊपर आकाशमंडल पर विराजमान है।'' (यशायाह 40:22)। नीतिवचन 8:27 को भी देखिए।

बाइबल के पूर्वज्ञान का एक अन्य उदाहरण गुरुत्वाकषर्ण के सिद्धान्त से सम्बंध रखता है। शताब्दियों से मनुष्य का ऐसा विश्वास था कि पृथ्वी किसी बहुत ही शक्तिशाली वस्तु के सहारे टिकी हुई है, अर्थात् नीचे से कोई इसे सम्भाले हुए है। किन्तु मैगलन ने पृथ्वी के चारों ओर की अपनी समुद्र यात्रा के बाद बताया था कि पृथ्वी प्रत्यक्ष रूप से किसी भी वस्तु के सहारे से नहीं टिकी हुई है। परन्तु वैज्ञानिकों द्वारा इस वास्तविकता को स्वीकार करने के हजारों वर्ष पूर्व अय्यूब ने घोषित किया था कि परमेश्वर ''...बिना टेक पृथ्वी को लटकाए रखता है।'' (अय्यूब 26:7)।

मैथ्यू फोन्टेन माऊरी, जिसने समुद्री मार्गों का पता लगाया था तथा महासागरविद्या सम्बंधी विज्ञान की स्थापना की थी, बाइबल का एक दृढ़ विश्वासी व एक अच्छा विद्यार्थी था। माऊरी से पूर्व न तो समुद्री नक्शे थे और न ही समुद्री मार्गों का किसी को पता था। एक दिन, जब वह बीमार था, तो उसके पुत्र ने बाइबल में से उसे भजन संहिता के आठवें अध्याय में से पढ़कर सुनाया। उसने पढ़ा कि परमेश्वर ने, ''आकाश के पक्षी और समुद्र की मछलियां और जितने जीव-जन्तु समुद्रों में चलते-फिरते हैं'' सब मनुष्य के आधीन किए हैं। 'एक बार फिर से पढ़ो' उसने अपने पुत्र से कहा। दूसरी बार सुनने के बाद सामान्य वैज्ञानिक ने कहा, यदि परमेश्वर का वचन बताता है कि समुद्रों में जीव-जन्तु चलते-फिरते हैं, तब अवश्य ही समुद्रों में मार्ग होने चाहिए, मैं उनका पता लगाऊंगा। और कुछ ही वर्षों के भीतर माऊरी ने विशेष समुद्री मार्गों का एक नक्शा तैयार कर लिया, और महासागर में चलने वाले पोत आज भी उन्हीं मार्गों से होकर यात्रा करते हैं। बाइबल के लेखकों को यह सब लगभग 1000 ई.पू. में किस प्रकार मालुम हो गया था जबकि पृथ्वी पर अन्य बुद्धिमान लोगों को इसका ज्ञान हाल ही में हुआ है? इसका केवल एक ही उत्तर है वो है बाइबल।

परमेश्वर की प्रेरणा के इन महान प्रमाणों का अध्ययन करने से उसकी उपस्थिति का ज्ञान हम में और अधिक बढ़ता जाता है, तथा पूर्व समय के दाऊद के साथ मिलकर हमें यह कहना पड़ता है, कि ''मूर्ख ने अपने मन में कहा है, कोई परमेश्वर है ही नहीं।'' (भजन 14:1)।

प्रश्नः निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देकर प्रश्न-पृष्ठ को हमारे पते पर जांचने के लिए भेज दें।

1. गिनती बताइएः

1. नए नियम में कितनी पुस्तकें हैं? ....
2. लूका ने कितनी पुस्तकें लिखी थीं? ....
3. कितनी पुस्तकें, जिनके विषय में निश्चित रूप से कहा जा सकता है, पौलुस ने लिखी थी? ....
4. बाइबल का अंग्रेजी अनुवाद, किंग जेम्स वर्शन, कब हुआ था? ....
5. इस अनुवाद के कार्य में कितने विद्वानों ने भाग लिया था? ....

2. सत्य-असत्यः

यदि कथन सत्य है तो "स" के ऊपर व यदि असत्य है तो "अ" के ऊपर गोलाकार बना दें।

स अ 1. क्योंकि बाइबल को मनुष्यों ने लिखा है इसलिए इसमें कहीं-कहीं गलतियां पाई जाती हैं।

स अ 2. बाबुल नगर ठीक उसी प्रकार से नाश हुआ था जैसे कि यशायाह ने भविष्द्वाणी की थी।

स अ 3. मूसा लगभग 400 ई. पू. में हुआ था।

स अ 4. आज के आधुनिक समुद्री मार्गों का ज्ञान बाइबल पढ़ने से हुआ था।

स अ 5. संसार भर में यहूदियों का तित्तर-बित्तर होकर रहना बाइबल की भविष्यद्वाणी के अनुसार है।

स अ 6. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने नए नियम की तीन पुस्तकों को लिखा है।

स अ 7. यदि कोई स्वर्गदूत हमें एक नया सुसमाचार सुनाए तो हमें स्वीकार कर लेना चाहिए।

स अ 8. पतरस एक विवाहित पुरुष था।

स अ 9. अन्य लेखकों के अतिरिक्त पतरस ने नए नियम में अधिक पुस्तकों को लिखा है।

स अ 10. बाइबल की शिक्षाओं को अस्वीकार करने का अभिप्राय परमेश्वर को अस्वीकार करना है।

3. खाली स्थानों को भरिए:

1. नया नियम सर्व प्रथम .... भाषा में लिखा गया था।
2. .... एक वैद्य व पौलुस का सहकर्मी था।
3. .... की पुस्तक को ''मन परिवर्तन की पुस्तक'' कहा जाता है।
4. ''हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की .... से रचा गया है।''
5. .... प्रभु यीशु का चेला बनने से पूर्व एक चुंगी लेने वाला था।

सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाना

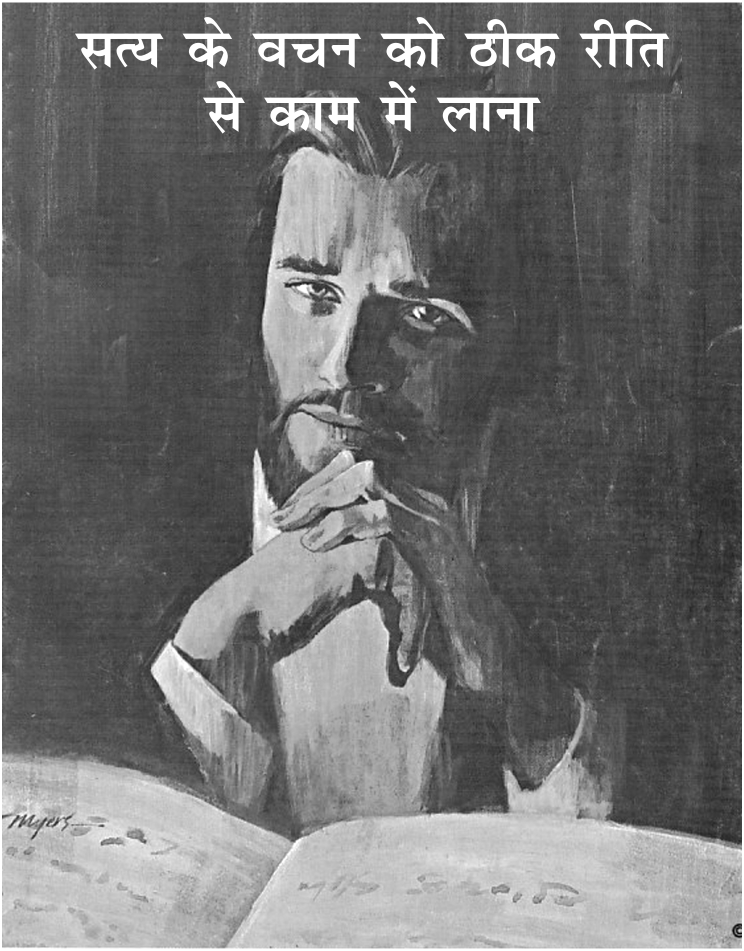

पाठ तीन
बाइबल अध्ययन श्रृंखला

जॉन एम. हर्ट

पाठ तीन
सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाना

नए नियम का उद्देश्य

नया नियम, अर्थात् नई वाचा, मनुष्यों के लिये परमेश्वर की नई इच्छा का प्रकाशन है। जब कि पुराना नियम मूसा के द्वारा केवल यहूदियों को दिया गया था। नई वाचा परमेश्वर के एकलौते पुत्र, यीशु मसीह के द्वारा आई और समस्त संसार में हर एक मनुष्य को दी गई (देखिए व्यवस्थाविवरण 5:1-3; मरकुस 16:15-16; इब्रानियों 12:24 तथा 8:6)। इसे बहुधा ''सुसमाचार'' भी कहा जाता है और वे लोग जो इसे मानने से इंकार करते हैं, परमेश्वर की इच्छा पर चलने से इंकार करते हैं। (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)।

नई वाचा में परमेश्वर लोगों से उस प्रकार के कार्यों की इच्छा नहीं करता जैसे कि वह मूसा की पुरानी व्यवस्था के आधीन लोगों से करता था। उदाहरणार्थ, परमेश्वर ने नूह को एक बार गोपेर की लकड़ी का एक जहाज बनाने की आज्ञा दी थी, किन्तु आज वह नहीं चाहता कि लोग उस प्रकार के जहाज बनाए। इस प्रकार से पूर्व रहने वाले यहूदियों को परमेश्वर ने ''व्यवस्था'' अर्थात पुराने नियम को मानने व उसकी शिक्षानुसार चलने के लिए आज्ञा दी थी, परन्तु अब उसने उस वाचा को पूरा तथा समाप्त करके उसके स्थान पर एक नई वाचा बांधी है तथा यीशु मसीह इस ''उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा, जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बांधी गई है।'' (इब्रानियों 8:6)। वाचा में परिवर्तन उस भविष्यद्वाणी के अनुसार हुआ है जिसके विषय में हम यिर्मयाह 31:31-34 में पढ़ते हैं। नया नियम अर्थात् मनुष्य के लिए परमेश्वर की नई वाचा, यीशु मसीह के क्रूस पर मरने के बाद लोगों पर लागू हुई थी, क्योंकि इब्रानियों 9:15-17 में हम पढ़ते हैं, ''और इसी कारण वह (मसीह) नई वाचा का मध्यस्थ हैं क्योंकि जहां वाचा बांधी गई है वहां वाचा बंधने वाले की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है। क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बांधने वाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं

होती।'' यहां से हम यह सीखते हैं कि नई वाचा उस समय तक लागू या प्रबल नहीं हुई थी जब तक कि मसीह सचमुच में क्रूस पर नहीं मरा था। इसी कारण अपने जीवन-काल में यीशु मसीह ने अपने शिष्यों को मूसा की पुरानी व्यवस्था के अधीन रहने की शिक्षा दी थी क्योंकि पुरानी व्यवस्था उस समय तक प्रभावकारी थी और तब तक रही थी जब तक कि यीशु मसीह नहीं मरा था और अपने लोहू से उसने नई वाचा को मुद्रांकित नहीं किया था। यीशु मसीह स्वयं मूसा की व्यवस्था के दिनों में उत्पन्न हुआ व रहा था (गलतियों 4:4)।

किन्तु मसीह की मृत्यु के बाद, पवित्रशास्त्र के किसी भी लेखक ने यह आज्ञा कभी नहीं दी कि इस युग में लोग पुराने नियम के आधीन होकर रहें। क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु के बाद परमेश्वर नहीं चाहता कि लोग पुराने नियम को तथा उसमें की होमबलियों अथवा पशुबलियों को मानें। परन्तु उसकी इच्छा आज यह है कि लोग उसकी नई वाचा अर्थात नए नियम के आधीन होकर रहें। आज हमें पुराने नियम में उल्लिखित दस आज्ञाओं को मानने की भी आवश्यकता नहीं है क्योंकि इन आज्ञाओं को मानने की आज्ञा परमेश्वर ने अपनी प्रथम वाचा में यहूदियों को दी थी, और मूसा की व्यवस्था, जिसमें इन आज्ञाओं को दिया गया था, अब ''समाप्त'' हो चुकी है या मिट चुकी है (इफ़िसियों 2:15)। किन्तु दस आज्ञाओं के सिद्धान्तों को मानने की शिक्षा को, केवल एक के अतिरिक्त, अर्थात ''विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना'' यीशु मसीह ने भी नए नियम में दोहराया है।

सब्त का दिन, जिसका उल्लेख पुराने नियम में मिलता है, हमेशा शनिवार को माना जाता था तथा रविवार को नहीं, तथा मसीह के सुसमाचार में इस दिन को नए नियम का भाग नहीं बताया गया है। (लैव्यव्यवस्था 23:3) इसके विपरीत, नए नियम के अनुसार चेले ''सप्ताह के पहिले दिन'' (रविवार को) इक्ट्ठा हुआ करते थे (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:1-2)।

पवित्रशास्त्र के अन्य निर्देश

पुराने नियम को बाइबल में कभी-कभी ''मूसा की व्यवस्था'' तथा 'प्रभु की व्यवस्था' भी कहा गया है (लूका 2:22-24)। नए नियम में बहुधा इसे ''व्यवस्था'' कहा गया है, क्योंकि यही एकमात्र परमेश्वर की व्यवस्था थी जिस से यहूदी लोग लगभग 1500 वर्षों से परिचित थे। प्रेरित पौलुस ने गलतियों तथा रोमियों की पत्रियां लिखते समय पुराने नियम का उल्लेख कई बार व्यवस्था कहकर किया था और इन लेखों में उसने यह

भी स्पष्ट कर दिया था कि उसका अभिप्राय पुराने नियम अर्थात् मूसा की व्यवस्था से है। (रोमियों 7:7; निर्गमन 20:17)।

पवित्रशास्त्र के निम्नलिखित विभिन्न पद बहुत स्पष्टता से बताते हैं कि आज हम पुराने नियम की "व्यवस्था" के आधीन नहीं है। यदि समय अनुमति दे तो आप अपनी बाइबल में इन पदों को अवश्य पढ़िए।

रोमियों 7:1-4-मसीही लोग "व्यवस्था के लिए मर चुके हैं" तथा उसका अनुकरण करने का अर्थ आत्मिक व्यभिचार करना है।

गलतियों-5:3-4-वे "जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हैं अनुग्रह से गिर गए हैं।"

गलतियां-3:19 - व्यवस्था केवल मसीह के आने तक के लिए दी गई थी। (इस पद में वंश का अभिप्राय मसीह से है। (16 पद को देखिए)।

गलतयिों - 5:18-वे जो आत्मा के चलाए चलते हैं "व्यवस्था के आधीन न रहे।"

गलतियों-3:24-25-"व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने को हमारा शिक्षक हुई है" परन्तु "हम अब शिक्षक के आधीन न रहे।"

इन पदों को भी देखिये- प्रेरितों 15:1-6 तथा 22-27 इब्रानियों 7:12, इफिसियों 2:13-15, गलतियों 4:21-31

हमारे लिये इसका उद्देश्य क्या है?

पवित्रशास्त्र के जिन पदों का अध्ययन हम इस पाठ में कर रहे हैं वे अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इनके प्रकाश की अन्य शिक्षाओं को सरलता से समझा जा सकता है। बहुतेरे ऐसे प्रश्न जिन्हें समझने में हमें बहुत कठिनाई लगती है, सुगमता से हल किए जा सकते हैं यदि हम ठीक से यह समझ लें कि आज हम पुराने नियम के आधीन नहीं है। किन्तु इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि हमें पुराने नियम में यह विश्वास नहीं करना चाहिए कि वह पूर्वकाल के लोगों के लिये परमेश्वर की वाचा थी। और इसका अर्थ यह भी नहीं है कि हमें पुराने नियम का नए नियम से कम आदर करना चाहिए। वास्तव में, दोनों ही वाचाएं नई तथा पुरानी, परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा दी गई है और इसलिये हमें दोनों का बराबर सम्मान करना है, क्योंकि दोनों परमेश्वर का वचन हैं। जिस प्रकार से एक उच्च विद्यालय का विद्यार्थी उन शिक्षाओं पर विश्वास करता है जिन्हें उसने पूर्व माध्यमिक विद्यालय में सीखा था, यद्यपि अब वह माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के आधीन नहीं है इसी प्रकार से

हमें पुराने नियम में विश्वास करना चाहिए तथा उसका समर्थन करना चाहिए परन्तु हमें अब पुराने नियम की शिक्षानुसार चलने की आवश्यकता नहीं है।

पुराने नियम का अध्ययन बहुत ही ध्यानपूर्वक व इस बात को समझते हुए करना चाहिए कि प्रत्येक आज्ञा मानने वाले व्यक्ति को परमेश्वर ने किस प्रकार से प्रतिफल दिया था तथा आज्ञा न मानने वालों को उसने किस तरह से दंडित किया था। पौलुस ने इस विषय में कहा था कि, ''जितनी बातें पहिले से लिखी गई, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गई हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र की शांति के द्वारा आशा रखें।'' (रोमियों 15:4)। जब हम मसीह के नए नियम अनुसार सुसमाचार का पालन करते हैं तो पुराने नियम की इन महत्वपूर्ण शिक्षाओं को स्मरण रखें, तथा पहिले से भी अधिक परमेश्वर के निकट रहने का प्रयत्न करें।

सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाना

अपने पहिले दो पाठों में हमने बाइबल के दो मुख्य भागों का अध्ययन किया था। बाइबल का पहिला भाग ''पुराना नियम'' है व इसमें 39 पुस्तकें हैं, तथा दूसरा भाग ''नया नियम'' है और इसमें 27 पुस्तकें हैं। और ये सब मिलकर 66 पुस्तकें हैं, जिन्हें लगभग 40 विभिन्न लेखकों ने लिखा है। इन पुस्तकों को ऐसे व्यक्तियों ने लिखा था जो संसार के भिन्न-भिन्न भागों में रहते थे, व विभिन्न भाषाएं बोलते थे, तथा इन व्यक्तियों ने पृथक-पृथक समय में रहकर ये पुस्तकें लिखी थीं और इस कार्य में लगभग 1500 वर्षों से भी अधिक समय लगा था। किन्तु तौभी इन व्यक्तियों ने बाइबल की पुस्तकों को इस प्रकार की अनुरूपता व एकता के साथ लिखा कि बिना किसी तर्क व संदेह के यह प्रमाणित हो जाता है कि उन्होंने परमेश्वर से प्रेरणा पाकर ही इन पुस्तकों को लिखा है। इस पाठ में हम यह सीखेंगे कि बाइबल में लिखित शिक्षाओं को हमें अपने जीवनों में किस तरह से काम में लाना चाहिए।

2 तीमुथियुस 2:15 में बाइबल शिक्षा देती है कि, ''अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता है।'' ये शब्द, बाइबल को उचित रीति से समझने के लिये, एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त को दर्शाते हैं, अर्थात् हमें परमेश्वर की आज्ञाओं को, जिन्हें उसने लोगों को भिन्न-भिन्न समयों में दिया था, ठीक रीति से काम में लाना व उन्हें अलग करना सीखना चाहिए और हमें यह भी समझना चाहिए कि कौन सी वाचा तथा किन आज्ञाओं को परमेश्वर चाहता है कि हम आज इस वर्तमानकाल में मानें।

एक दृष्टान्त

इस वास्तविकता को और अधिक स्पष्टता से समझने के लिये हम एक उदाहरण को देखें: परमेश्वर ने एक बार नूह को गोपेर की लकड़ी का एक जहाज़ बनाने को कहा था। किन्तु हम जानते हैं कि इसका अभिप्राय यह नहीं है कि हमें भी ऐसा करने की आज्ञा उस ने दी है। हर एक व्यक्ति इस बात को अच्छी तरह से जानता है कि यद्यपि यह परमेश्वर की एक आज्ञा थी, किन्तु वर्तमान युग के लोगों को इस आज्ञा का पालन नहीं करना है, और न ही परमेश्वर ने कभी यह चाहा है कि प्रत्येक युग के लोग इस आज्ञा को मानें। बाइबल में इसका उल्लेख हमें ऐतिहासिक जानकारी प्रदान करने के लिये किया गया है, तथा इस से हमें यह भी पता चलता है कि मसीही युग आरंभ होने से मनुष्य के प्रति परमेश्वर का क्या व्यवहार था।

इसी प्रकार के अन्य उदाहरणों का वर्णन भी यहाँ किया जा सकता है। जैसे कि इस्राएलियों को परमेश्वर ने एक बार आज्ञा दी थी कि वे मेम्ने के लोहू को अपने-अपने घरों के द्वारों की चौखटों पर लगाएं (निर्गमन 12:7) या जबकि पुराने नियम के आधीन लोगों को परमेश्वर के निमित्त पशुबलियां तथा होमबलियों चढ़ाने को कहा गया था। गिनती नामक पुस्तक में हम पढ़ते हैं, ". ....जो जो तुम्हें यहोवा के लिये चढ़ाना होगा वे ये हैं अर्थात् नित्य होमबलि के लिये एक-एक वर्ष के दो निर्दोष भेड़ी के बच्चे प्रतिदिन चढ़ाया करें। एक बच्चे को भोर को और दूसरे को गोधूलि के समय चढ़ाना और भेड़ के बच्चे के पीछे एक चौथाई हीन कूटके निकाले हुए तेल से सने हुए एपा के दसवें अंश मैदे का अन्नबलि चढ़ाना। यह नित्य होमबलि है, जो सीनै पर्वत पर यहोवा का सुखदायक सुगन्धवाला हव्य होने के लिये ठहराया गया।" (गिनती 28:1-6)। अब बाइबल को अनियमित रूप से पढ़नेवाले लोग भी भली भांति समझते हैं कि परमेश्वर ने इन आज्ञाओं को हमें इस युग में मानने के लिये नहीं कहा है, परन्तु इनके द्वारा हमें यह ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है कि मसीह के आने व हमें उसके द्वारा नया नियम दिये जाने से पूर्व लोगों के साथ परमेश्वर का कैसा संबंध था (रोमियों 15:4)। इस पाठ का मुख्य उद्देश्य यही है कि हम सीखें कि बाइबल का कौन सा भाग पूर्व युग की व्यवस्था व घटनाओं का ऐतिहासिक प्रमाण देता है, तथा कौन सा भाग हमें, आज इस मसीही युग में, मानने के लिये दिया गया है।

पुरानी वाचा का उद्देश्य

"वाचा" शब्द यूनानी भाषा के एक शब्द से लिया गया है तथा इसका अर्थ है "एक इच्छा या नियम"। बाइबल के प्रथम भाग को पुरानी वाचा या पुराना नियम इसलिये कहा जाता है क्योंकि इसमें परमेश्वर द्वारा दी गई पहिली या "पुरानी" व्यवस्था का पूर्णतः वर्णन मिलता है, इस वाचा को परमेश्वर ने मसीह से पूर्व लोगों से बांधा था। यह "पुरानी" वाचा, जो कि मूसा के द्वारा आई थी तथा इस्राएल के घराने के साथ सीनै पर्वत पर बांधी गई थी, उन दो महान वाचाओं अर्थात् व्यवस्थाओं में से प्रथम थी जिन्हें परमेश्वर ने मनुष्य को दिया था। (इब्रानियों 8:6-13)। इनमें से प्रत्येक वाचा में परमेश्वर ने मनुष्य को कुछ विशेष आज्ञाएं मानने के लिए दी थीं और इसके बदले में उसने अपने विश्वासियों की सहायता तथा रक्षा करने की प्रतिज्ञा की थी। पहिली अर्थात् पुरानी वाचा मसीह के मरने पर पूर्ण हो गई थी जबकि उसने उसको पुरा करके तथा "उसको क्रूस पर कीलों से जड़कर साम्हने से हटा दिया" था, तथा उस के स्थान पर उसने अपनी दूसरी महान वाचा, अर्थात् नये नियम को दिया था (कुलुस्सियों 2:14; इब्रानियों 9:15)।

इब्रानियों 8:5 में हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, "क्योंकि यदि वह पहिली वाचा निर्दोष होती तो दूसरी के लिये अवसर न ढूंढ़ा जाता।" और फिर 10वें अध्याय के 9 पद में लिखा है कि, "वह पहिले को उठा देता है, ताकि दूसरे को नियुक्त करे।" पहिली या पुरानी वाचा एक विशेष जाति के साथ बांधी गई थी। अर्थात वह वाचा दूसरी या नई वाचा की तरह जिसके आधीन आज हम रहते हैं, सब जातियों के साथ नहीं बांधी गई थी (व्यवस्थाविवरण 5:1-3)। इस वाचा के अंतर्गत इस्राएलियों को परमेश्वर की व्यवस्था मूसा के द्वारा सीनै पर्वत (जिसे होरेब पर्वत भी कहा जाता है) पर दी गई थी और इसमें केवल दस आज्ञाओं का ही वर्णन था परन्तु पशुबलियों, होमबलियों तथा बहुतेरी अन्य वस्तुओं का भी सविस्तार विवरण था जिन्हें परमेश्वर उस समय इस्राएलियों से चाहता था। किन्तु, हम आगे देखेंगे कि नई वाचा के आधीन लोगों से परमेश्वर अब उन सब वस्तुओं की इच्छा नहीं करता जिनके बारे में उसने पुराने नियम में आज्ञा दी थी। (लैव्यव्यवस्था 5:1-13; गिनती 28:1-11) पुराने नियम में परमेश्वर ने कुछ पशुओं को "अशुद्ध" बताया था और इस कारण उसने उस युग में रहने वाले लोगों को इन पशुओं को खाने के कारण दोषी ठहराया था। जिन पशुओं को खाने के लिये परमेश्वर ने लोगों को मना किया था उनमें से दो पशु सुअर व खरहा थे (लैव्यव्यवस्था 11:1-8)।

प्रथम वाचा के अतिरिक्त पुराने नियम की पुस्तकें इस बात का भी संक्षिप्त विवरण प्रदान करती हैं। कि मूसा द्वारा व्यवस्था के दिए जाने से पूर्व परमेश्वर का लोगों के प्रति कैसा व्यवहार था। आदम तथा हव्वा की सृष्टि से लेकर सीनै पर्वत पर दस आज्ञाओं के दिए जाने तक के लगभग 2500 वर्षों के बीच में परमेश्वर ने मनुष्य को कोई भी लिखित व्यवस्था नहीं दी, परन्तु उस समय में परिवार के मुख्य व्यक्तियों के द्वारा वह अन्य लोगों के साथ व्यक्तिगत रूप से सम्बंध रखता था। परिवार के इन मुख्य व्यक्तियों को ''कुलपति'' अथवा ''पूर्वज'' के नाम से जाना जाता था, और इसी कारण उस युग को ''कुलपतियों का युग'' कहा जाता है। इस के विषय में विशेष रूप से अधिक जानकारी प्राप्त नहीं है, किन्तु इस समय का संक्षिप्त विवरण हमें उत्पत्ति नामक पुस्तक में मिलता है। पुराने नियम की पुस्तकों का विशेष अधिकांश भाग हमें मूसा के द्वारा पहिली वाचा के दिए जाने के विषय में जानकारी प्रदान करता है। इस वाचा को उस समय तक के लिए दिया गया था जब तक कि मसीह न आ जाए तथा अपनी नई वाचा को, जिसमें हम रहते हैं, हमें न दे दें, यह नई वाचा मसीही युग के लिये है। (गलतियों 3:19 तथा 16)।

कुछ शेष प्रश्न

इस पाठ को समाप्त करने से पहिले हम कुछ शेष प्रश्नों पर संक्षेप में विचार करेंगे। इस पाठ के आरम्भ में हमने सीखा था कि नई वाचा उस समय तक लागू या प्रबल नहीं हुई थी जब तक कि मसीह क्रूस पर नहीं मरा था (इब्रानियों 9:15-17)। इसलिये मसीह की मृत्यु से पूर्व पुराने नियम की ''व्यवस्था'' प्रभावकारी थी। नीचे कुछ ऐसे प्रश्नों का उल्लेख है जो कि इसी वास्तविकता से संबंध रखते हैं तथा कभी-कभी बाइबल अध्ययन में उलझन उत्पन्न करते हैं।

पुराना नियम
मूसा की व्यवस्था
(क्रूस पर समाप्त हुई)
कुलुस्सियों 2:13-14
इफिसियों 2:13-16
दाऊद महत्वपूर्ण अंतिम आज्ञा
सब्त का दिन
क्रूस पर चढ़ा डाकू

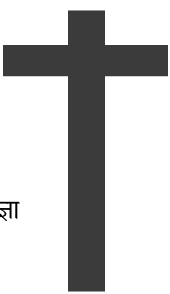

नया नियम
मसीह का सुसमाचार
(क्रूस पर प्रभावकारी हुआ)
इब्रानियों 9:15-17
रोमियों 1:16-17

कलीसिया की स्थापना
चेले मसीही कहलाए

क्रूस पर चढ़ाया हुआ डाकूः कुछ लोग सोचते हैं कि नए नियम की कुछ विशेष तथा स्पष्ट आज्ञाओं को मानने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि क्रूस पर लटके हुए डाकू ने भी उद्धार पाने के लिये इन आज्ञाओं को नहीं माना था। किन्तु ऊपर दिखाए गए दृष्टान्त पर थोड़ा सा ध्यान करने से ही यह भ्रम स्पष्ट हो जाता है। क्योंकि क्रूस पर जिस डाकू को लटकाया गया था वह मसीह की मृत्यु से पूर्व रहता था और नई वाचा मसीह की मृत्यु के पश्चात लागू हुई थी। किन्तु आज हम सब नई वाचा के आधीन रहते है और इस कारण हमें अवश्य ही नए नियम की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए और यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो इसका अभिप्राय यह है कि हम प्रभु यीशु से यथार्थ में प्रेम नहीं करते, क्योंकि यीशु मसीह ने स्वयं कहा था, कि ''यदि कोई मुझसे प्रेम रखे तो वह मेरे वचन को मानेगा....'' (यूहन्ना 14:23)। यह भी अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि महत्वपूर्ण अंतिम आज्ञा क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु के बाद दी गई थी (मरकुस 16:15-16)।

दाऊदः इसी प्रकार से एक अन्य प्रश्न को बहुधा उठाया जाता है जो कि नए नियम में उल्लिखित उपासना के नियमों से संबंध रखता है। जिस प्रकार से कि हम एक अगले पाठ में देखेंगे कि इस युग में हमारे लिये परमेश्वर की उपासना पुराने नियम की विधियों अनुसार करना कदापि उचित नहीं है। जैसे कि हम गोपेर की लकड़ी का जहाज बनाकर उसमें अपने आप को बचाने की आशा नहीं कर सकते, केवल इसलिये कि नूह ने एक बार ऐसा किया था।

नए नियम के आधीन, परमेश्वर की इच्छ्ज्ञनुसार उपासना में, उन सब वस्तुओं को उपयोग में लाना आज उचित नहीं है जो कि पुराने नियम के समय में उपयोग में लाई जाती थीं। होमबलि के लिये पशुओं का बलिदान चढ़ाना तथा इसी प्रकार की अन्य वस्तुएं, जिनका उल्लेख हमें पुराने नियम में मिलता है, नए नियम की सच्ची उपासना से कोई सम्बंध नहीं रखतीं।

कभी-कभी लोग दाऊद का उदाहरण देकर कहते हैं कि वह परमेश्वर की उपासना करने में ऐसी विधियों को उपयोग में लाता था जिनका वर्णन नए नियम में नहीं मिलता और इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि दाऊद नए नियम के आधीन नहीं था, जिस प्रकार से कि आज हम इस युग में हैं। दाऊद ने और भी बहुत से ऐसे कार्य किये थे जिन्हें हम आज नई वाचा के आधीन रहकर कभी भी नहीं कर सकते। परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये इस युग में हम जो कुछ भी करते या सिखाते हैं वह सब नए नियम के अधिकार से ही होना चाहिए।

प्रश्नः निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देकर प्रश्न-पृष्ठ को जांचने के लिये भेज दें।

बहुविध चुनाव

सही उत्तर के नीचे एक रेखा चाहिए

1. बाइबल में (क) 66, (ख) 56, (ग) 40 पुस्तकें हैं।
2. नए नियम में (क) 23, (ख) 29, (ग) 27 पुस्तकें हैं।
3. बाइबल को लगभग (क) 60, (ख) 40, (ग) 20 लेखकों ने लिखा था।
4. ''वाचा'' का अर्थ है (क) ''एक इच्छा या नियम'' (ख) ''एक धमकी या घुड़की'' (ग) ''एक पुस्तक''
5. पुरानी वाचा (क) अन्य जातियों (ख) यहूदियों (ग) सब जातियों के लिये थी।
6. सब्त का दिन सप्ताह का (क) पहिला (ख) तीसरा (ग) सातवां दिन था।
7. (क) पशुबलि (ख) सबत का दिन (ग) महत्वपूर्ण आज्ञा, का निर्देश क्रूस पर मसीह की मृत्यु के बाद मिला था।
8. नई वाचा का आरम्भ यीशु मसीह के (क) जन्म (ख) परीक्षा (ग) उसकी मृत्यु के समय हुआ था।
9. मूसा ने दस आज्ञाओं को (क) सीने पर्वत (ख) कर्मेल पर्वत (ग) मोरिय्याह पर्वत पर प्राप्त किया था।
10. क्रूस पर जिस डाकू को लटकाया गया था वह (क) पुरानी वाचा (ख) नई वाचा के आधीन रहता था (ग) अथवा, किसी भी वाचा के आधीन नहीं था।

पुराना या नया नियमः यदि उत्तर पुराना नियम हो तो खाली स्थान पर पु. नि. लिख दें व यदि नया नियम हो तो न. नि. लिख दें।

1. जिस वाचा के आधीन क्रूस पर लटकाया गया डाकू रहता था। ....
2. दूसरी वाचा ....
3. ''व्यवस्था'' जिस को सीनै पर्वत पर मूसा द्वारा दिया गया था। ....
4. जिस वाचा के आधीन चेले सप्ताह के पहिले दिन इकट्ठे होते थे। ....
5. जिस वाचा के आधीन आज हम रहते हैं। ....

यह कहां लिखा हैः पवित्रशास्त्र के जिन पदों में निम्नलिखित वाक्यों का वर्णन हुआ है उनके नीचे रेखा खींचिए।

1. ''तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिए मरे हुए बन गए''
   (क) रोमियो 1:16 (ख) गलतियों 5:18 (ग) रोमियों 7:4
2. ''क्योंकि यदि वह पहिली वाचा निर्दोष होती, तो दूसरी के लिये अवसर न ढूंढ़ा जाता।''
   (क) इब्रानियों 8:7 (ख) लैव्यव्यवस्था 23:3 (ग) प्रेरितों 20:7
3. ''क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है''
   (क) इब्रानियों 12:24 (ख) इब्रानियों 9:17 (ग) मरकुस 16:16
4. ''और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो, तो व्यवस्था के आधीन न रहे।''
   (क) गलतियों 5:4 (ख) रोमियों 6:14 (ग) गलतियों 5:18
5. ''....सुसमाचार..... उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।''
   (क) 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9 (ख) इब्रानियों 8:13 (ग) रोमियों 1:16

विश्वास तथा कार्य

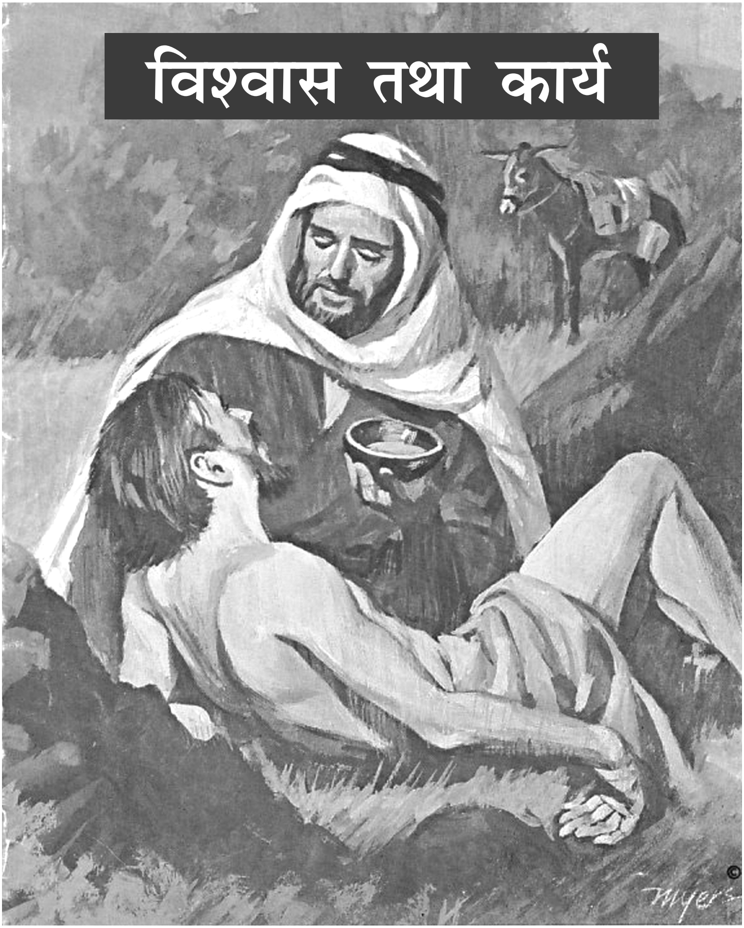

पाठ चार
बाइबल अध्ययन श्रृंखला

जॉन एम. हर्ट

पाठ चार
विश्वास तथा कार्य

अपने पहिले तीन पाठों में हमने परमेश्वर के महान प्रेम के विषय में अध्ययन किया था। हमने देखा था कि उसने इस्त्रालियों को किस प्रकार से मिस्र देश के दासत्व से निकाला था और सीनै पर्वत पर उन्हें प्रथम वाचा दी थी, हमने यह भी देखा था कि उसने अपने प्रिय पुत्र यीशु को हमारे पापों के कारण मरने के लिये दे दिया, तथा उसने हमें अपना ''नया नियम'' दिया है, जिस पर चलकर आज हम उसकी इच्छानुसार जीवन व्यतीत कर सकते है। आज हम परमेश्वर के निमित्त मनुष्य के ''कर्त्तव्य'' के विषय में अध्ययन आरम्भ करेंगे।

जब यीशु मसीह क्रूस पर मरा था तो उसकी नई वाचा लागू या प्रभावकारी हो गई थी। इसके कुछ ही दिनों के पश्चात् पिन्तेकुस्त के दिन, यहूदियों के एक विशाल जन-समूह ने पतरस के द्वारा पहिली बार सुसमाचार का प्रचार सुना था। यहां उसने यहूदियों को परमेश्वर के प्रिय पुत्र की निर्दयता से हत्या करने के लिये दोषी ठहराया था। बाइबल बताती है, ''तब सुनने वालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाइयो हम क्या करें? पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।'' (प्रेरितों 2:37-38)। बाइबल आगे बताती है कि उस दिन लगभग 3000 लोगों ने पतरस की बात को माना और बपतिस्मा लेकर अपने पापों की क्षमा प्राप्त की, तथा वे कलीसिया में मिलाए गए। (प्रेरितों 2:41 तथा 47)।

उस समय और भी अन्य यहूदी थे और उन्होंने भी मसीह पर विश्वास किया था, किन्तु उन्होंने उसकी शिक्षाओं का इस तरह से पालन नहीं किया था। बाइबल में लिखा है, ''तौभी सरदारों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएं। क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उनको परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी।'' (यूहन्ना 12:42-43)। इन उदाहरणों से यह बिल्कुल प्रत्यक्ष

है कि स्वीकारयोग्य विश्वास तथा नए नियम की योजनानुसार, आज्ञापालन के मध्य एक निश्चित सम्बंध है। आज हमारे पाठ का यही विषय है।

विश्वास के द्वारा उद्धार

इफिसियों 2:8 में पौलुस ने कहा था, "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है" इस महान सत्य को, यद्यपि अधिकांश लोगों ने स्वीकार तो किया है, किन्तु बहुधा इसे अनुचित रीति से समझा है। इब्रानियों 11:6 में हम पढ़ते हैं, "और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है। तथा प्रेरितों 16:31 में पौलुस ने कहा था कि "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू उद्धार पाएगा।"

यीशु मसीह ने मरकुस 16:16 में कहा था कि "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।"

ये और ऐसे ही बाइबल के बहुतेरे अन्य पद हमें बहुत ही स्पष्टता से विश्वास के अत्याधिक महत्व के विषय में बताते हैं। वास्तव में, विश्वास के बिना इस नाशमान संसार के पास कोई आशा ही नहीं है। कदाचित कुछ व्यक्ति इस विषय पर तर्क करके कहेंगे, कि जिन दुष्ट सरदारों (यूहन्ना 12:42, 43) ने यीशु मसीह को स्वीकार नहीं किया था उनका विश्वास भी परमेश्वर को वैसे ही स्वीकार्य था जिस प्रकार से कि उन तीन हजार व्यक्तियों का विश्वास था जिन्होंने पिन्तेकुस्त के दिन मसीह के सुसमाचार को माना था। किन्तु बाइबल की शिक्षानुसार परमेश्वर के निकट हमारे विश्वास का स्वीकार होना इस बात पर निर्भर करता है कि हमारा विश्वास किस अवस्था में है।

बाइबल में ऐसी दो भिन्न प्रकार की स्थितियों या अवस्थाओं का उल्लेख मिलता है जिनमें कि विश्वास विद्यमान हो सकता है। इनमें से एक अवस्था में तो विश्वास मनुष्य को उद्धार तक पहुंचा सकता है किन्तु दूसरी में यह बिलकुल व्यर्थ है तथा आशीष के स्थान पर आपके लिये श्राप का कारण हो सकता है। ये दो अवस्थाएं इस प्रकार से हैं:

विश्वास की अवस्थाएं

मरा हुआ विश्वास, तथा जीवित, अर्थात् कार्यसहित विश्वास

याकूब 2:17 में बाइबल बताती है कि विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है। "जिस प्रकार से मनुष्य का शरीर जीवित

या मरी हुई अवस्था में पाया जा सकता है, वैसे ही विश्वास भी जीवित या मरी हुई अवस्था में हो सकता है। जीवित विश्वास जीवित शरीर की तरह कार्य करने से प्रकट होता है। मरा हुआ विश्वास मृत शरीर की तरह, कार्य-रहित होता है। मरा हुआ विश्वास केवल विश्वास तक ही सीमित रहता है, किन्तु ऐसा विश्वास मसीह की शिक्षाओं के लिये आज्ञापालन उत्पन्न नहीं करता। ऐसा ही विश्वास उन ''सरदारों'' का था जिन्होंने यीशु को प्रकट में नहीं माना था। बाइबल बताती है कि इस प्रकार का विश्वास शैतान भी रखता है। किन्तु मनुष्य के उद्धार के सम्बंध में इस तरह का विश्वास कुछ भी महत्व नहीं रखता। याकूब 2:19 में लेखक ने, परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा, आज्ञापालन के कार्यों के बिना, केवल विश्वास से उद्धार प्राप्त करने की झूठी शिक्षा की निन्दा करते हुए कहा था, कि ''तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है, तू अच्छा करता है, दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं।'' और फिर 14 से 17 पदों तक याकूब ने स्पष्टतापूर्वक बताया था कि यदि हमारा विश्वास आज्ञापालन के कार्यों सहित न हो तो वह कभी भी परमेश्वर को स्वीकार न होगा। और अंत में, दूसरे अध्याय के अंतिम पद में विश्वास के महत्वपूर्ण विषय का निष्कर्ष बताते हुए उसने यूं कहा था, ''निदान, जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है, वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।'' यहां याकूब ने बताया था कि जिस प्रकार से एक मरी हुई देह आत्मा के बिना व्यर्थ है, वैसे ही मरा हुआ विश्वास भी मसीह की उत्तम वाचा को माने बिना, अर्थात् आज्ञापालन के कार्यों के बिना महत्वरहित है।

कदाचित हम मसीह में विश्वास करते हों, व यह भी कहते हों कि हम मसीही हैं, परन्तु जब तक हम उसकी शिक्षाओं का पालन यथार्थ में नहीं करते हमारा विश्वास मृत सिद्ध होगा तथा हम सदा के लिये उद्धार से वंचित रहेंगे।

एक मृत, अर्थात् व्यर्थ विश्वास जो कि बचा नहीं सकता, तथा जीवित, अर्थात् कार्यसहित विश्वास, जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है, के बीच में बाइबल एक बहुत ही स्पष्ट अन्तर दिखाती है। सम्पूर्ण बाइबल में ऐसा एक भी उदाहरण नहीं मिलता है जिसमें किसी भी व्यक्ति का मृत विश्वास से उद्धार हुआ हो। गलतियों 5:6 में पौलुस ने इस सत्य को और भी अधिक स्पष्ट कर दिया था जब उसने कहा था, कि जिस विश्वास से परमेश्वर प्रसन्न होता है वह ''प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है।'' बाइबल में उल्लिखित मन परिवर्तन की प्रत्येक घटना भी यही दर्शाती है कि लोगों को उद्धार केवल तभी प्राप्त हुआ था जब उनके विश्वास ने परमेश्वर की वाचा की आज्ञाओं का पालन किया

था। याकूब कहता है, ''तू अपना विश्वास मुझे कर्म बिना तो दिखा और मैं अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा तुझे दिखाऊंगा।'' (याकूब 2:18)।

इस सिद्धान्त को इब्रानियों की पत्री के ग्यारहवें अध्याय में और भी स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। इस महत्वपूर्ण अध्याय में परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा लेखक ने बहुतेरे उन व्यक्तियों का वर्णन किया है जिनका उद्धार विश्वास के द्वारा हुआ था। और प्रत्येक घटना में लोगों का विश्वास कार्यसहित था। उसने, उदाहरणार्थ, निम्नलिखित विशेष व्यक्तियों का वर्णन किया था:

1. **हाबिल:** जिसने विश्वास से एक उत्तम बलिदान चढ़ाया था। (कार्य किया-पद 4)
2. **नूह:** जिसने विश्वास से, परमेश्वर द्वारा चितौनी पाकर, जहाज बनाया था। (कार्य किया-पद 7)। तथा
3. **इब्राहीम:** जिसने विश्वास से अपने घर को छोड़ दिया था और अपने पुत्र को बलिदान चढ़ाया था। (कार्य किया-पद 8 तथा 17)।

यदि सम्भव हो, तो पाठक को चाहिए कि वह याकूब 2 अध्याय तथा इब्रानियों के 11 अध्याय को अवश्य पढ़ें।

आज्ञापालन से सम्बंधित बाइबल के कुछ विशेष पद

बाइबल में अनेकों ऐसे पद हैं जो हमें सिखाते हैं कि उद्धार प्राप्त करने के लिये मसीह में केवल विश्वास करना ही पर्याप्त नहीं है, परन्तु सुसमाचार की आज्ञाओं का पालन करना भी उतना ही आवश्यक है। ऐसे ही कुछ पदों का उल्लेख नीचे किया जा रहा है।

मत्ती 7:21-''जो मुझ से, हे प्रभु हे प्रभु कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।''

प्रेरितों 10:35 ''परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता वरन हर जाति में जो उससे डरता और धर्म के काम करता है वह उसे भाता है।''

2 थिस्सलुनीकियों 1:7-8 ''प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा।''

यूहन्ना 15:14 ''जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं, यदि उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो।''

1 पतरस 1:22 ''सो जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है।''

इब्रानियों 5:8 ''और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेनवालों के लिए सदा-काल के उद्धार का कारण हो गया।''

1 यूहन्ना 2:4 ''जो कोई यह कहता है कि मैं उसे जान गया हूं और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता वह झूठा है और उसमें सत्य नहीं।''

रोमियों 6:16 ''क्या तुम नहीं जानते, कि जिसकी आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाई सौंप देते हो, उसी के दास हो, और जिसकी मानते हो चाहे पाप के जिसका अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिसका अन्त धार्मिकता है?''

1 यूहन्ना 5:3 ''और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं।''

तथा 1 शमूएल 15:16-24, सभोपदेशक 12:13-14 और मत्ती 7:24-27 को भी देखिए।

हमारा उद्धार केवल विश्वास से नहीं हो सकता

पवित्रशास्त्र के उपरोक्त लेखों से यह स्पष्ट है कि यद्यपि हमारा उद्धार विश्वास से तो होता है, किन्तु ''केवल विश्वास'' से उद्धार प्राप्त करना असम्भव है। ''केवल विश्वास'' से उद्धार प्राप्त करने की शिक्षा न केवल बपतिस्मे को अलग कर देती है। परन्तु पश्चाताप तथा प्रेम की आवश्यकता को भी छोड़ देती है। बाइबल बहुतेरे स्थानों पर शिक्षा देती है कि हमारा उद्धार विश्वास से होता है। किन्तु हमें यह अवश्य समझना चाहिए कि विश्वास से हमारा उद्धार कब होता है। ऊपर लिखित पदों से इसका उत्तर प्रत्यक्ष है। हम केवल तभी विश्वास से उद्धार प्राप्त कर सकते हैं जब हमारा विश्वास आज्ञापालन के कार्यों के साथ हो क्योंकि यदि ''विश्वास कर्मसहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है'' तथा ''दुष्टात्मा भी विश्वास रखते और थरथराते हैं।'' (याकूब 2:17, 19)।

वास्तव में बाइबल इस तरह की मानवीय शिक्षा को, जो यह सिखाए कि मनुष्य ''केवल विश्वास'' से तथा आज्ञापालन के कार्यों के बिना धर्मी ठहरता है, सदैव खण्डन करती है व इसके विपरीत वह स्पष्टता से बताती है, ''कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं बरन कर्मों से भी धर्मी ठहरता है।'' (याकूब 2:24)।

विश्वास तथा कार्यों का सम्बंध

जैसे कि बाइबल में भिन्न प्रकार के विश्वास बताए गए हैं वैसे ही विभिन्न प्रकार के कार्यों का उल्लेख भी उसमें हुआ है। इनमें से तीन तरह के कार्य ऐसे हैं जो हमारे उद्धार से किसी भी तरह का सम्बंध नहीं रखते, किन्तु चौथा इतना अधिक महत्वपूर्ण है कि कोई भी मनुष्य इसके बिना धर्मी नहीं ठहर सकता (याकूब 2:24)। ये चार प्रकार के कार्य निम्नलिखित हैं:

1. **शरीर के कार्य:** अर्थात् अधर्म के काम, जैसे कि व्यभिचार, मतवालापन तथा लीलाक्रीड़ा इत्यादि। इनका उल्लेख गलतियों 5:19-21 में मिलता तथा वहां इनकी अत्यन्त निन्दा की गई है।
2. **हमारे अपने कार्य:** अर्थात् ऐसे कार्य जिन्हें लोग इस आशा से करते हैं कि वे अपनी शक्ति के द्वारा परमेश्वर के बिना अपना उद्धार करा लें। इन कार्यों में केवल मूर्ति पूजा ही नहीं परन्तु वे सब कार्य भी सम्मिलित हैं जो परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध हैं। (प्रेरितों 7:41, 2 तीमुथियुस 1:9)।
3. **मूसा की व्यवस्था के कार्य:** जैसे कि हमने तीसरे पाठ में सीखा था, कि मूसा की पुरानी वाचा मसीह की मृत्यु पर समाप्त हो गई थी और इसलिये हम आज उस वाचा के आधीन नहीं है। पौलुस कहता है ''व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी ठहरेगा।'' (गलतियों 2:16)।
4. **आज्ञापालन के कार्य:** इनका अभिप्राय मसीह के सुसमाचार की आज्ञाओं का पालन करने से है। इन कार्यों के बिना हम ''परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते।'' (मत्ती 7:21; तीतुस 1:16; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि पौलुस ने इफिसियों 2:9 में क्यों कहा था कि हमारा उद्धार कामों से नहीं होता जबकि याकूब कहता है कि हम कार्यों से धर्मी ठहरते हैं। (याकूब 2:24)। पौलुस हमारे अपने कामों का वर्णन कर रहा था (पद 8) जबकि याकूब आज्ञापलन के कार्यों के विषय में कह रहा है। (याकूब 2:14-21)। किन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं हो जाता कि हम अपने उद्धार को अपनी किसी योग्यता के द्वारा प्राप्त करते हैं। नूह ने जहाज बनाकर अपनी मुक्ति को नहीं कमाया था। यहोशू ने यरीहो को उसके चारों ओर घूमकर उपर्जित नहीं कर लिया था। तथा इस्राएलियों ने प्रतिज्ञा किए देश को मात्र इसलिये प्राप्त नहीं कर लिया था कि वे मिस्र से वहां तक चलकर गए थे। ये सब, आज हमारे उद्धार की ही तरह, परमेश्वर के दान थे, यद्यपि

उन्हें प्राप्त करने के लिए मनुष्यों को अज्ञापालन के कार्यों को करना आवश्यक था। इसलिये विश्वास, आज्ञापालन के बिना व्यर्थ है। इस सम्बंध में बाइबल के अतिरिक्त पदों को देखिए लूका 6:46-49; रोमियों 16:26; 1 पतरस 4:17-18; फिलिप्पियों 2:12 तथा यूहन्ना 1:12

आज्ञा - उल्लंघन के कार्य

कदाचित आप सोचते होंगे कि यह सम्पूर्ण पाठ विश्वास तथा आज्ञापालन के विषय में क्यों लिखा गया है। ऐसा इसलिये किया गया है क्योंकि बहुतेरे लोग अज्ञानता से परमेश्वर के वचन का उल्लंघन करते हैं। बाइबल की शिक्षानुसार हम विशेषकर तीन प्रकार से परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन कर सकते हैं:

1. **ऐसे कार्य करके जिनके लिये परमेश्वर ने मना किया है:** प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन हम वह काम करके कर सकते हैं जिसकी उसने विशेषरूप से निन्दा की है। आदम तथा हव्वा ने इसी प्रकार से परमेश्वर का विरोध वर्जित फल को खाकर किया था। (उत्पत्ति 2:17)। यही वास्तविकता नए नियम में भी मिलती है। ''शरीर के कामों'' का वर्णन करने के बाद पौलुस ने कहा था ''कि ऐसे ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।'' (गलतियों 5:19-21)।

2. **वे कार्य न करके जिन्हें करने की आज्ञा परमेश्वर ने दी है:** याकूब कहता है, ''इसलिये जो भलाई करना जानता है और नहीं करता उसके लिये यह पाप है।'' चाहे हमें परमेश्वर की कोई आज्ञा व्यर्थ या अनावश्यक लगे किन्तु तौभी उद्धार पाने के लिये उस आज्ञा को मानना बहुत ही आवश्यक है। बाइबल कहती है, कि परमेश्वर के विचार मनुष्यों के विचारों से नहीं है। (यशायाह 55:8-9)। बहुतेरी ऐसी आज्ञाएं जिन्हें मनुष्यों ने महत्वरहित जानकर मानने से इंकार कर दिया है परमेश्वर के निकट बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो वह उन्हें हमें नहीं देता।

इस प्रकार के आज्ञा उल्लंघन का एक बहुत अच्छा उदाहरण हमें नामान कोढ़ी के विषय में मिलता है। (2 राजा 5:1-14)। हम पढ़ते हैं, कि जब उसने पहली बार परमेश्वर की आज्ञा को सुना था कि अपने कोढ़ से शुद्ध होने के लिए सात बार यरदन नदी में डूबकी लगा तो उसने ऐसा करने को यह कहकर अस्वीकार कर दिया था कि इस प्रकार की आज्ञा उचित नहीं है। इतना ही नहीं वरन वह क्रोधित होकर वहां से चला भी गया था। किन्तु सौभाग्य से

कुछ ही समय पश्चात् नामान ने पश्चाताप किया तथा परमेश्वर की ''मतिहीन'' आज्ञा को माना और परिणामत: अपने कोढ़ से वह शुद्ध हो गया था। नि:संदेह ''इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है।'' (1 कुरिन्थियों 3:19)। इतिहास बताता है कि लोगों ने कई बार यीशु मसीह की अनेकों आज्ञाओं की अपेक्षा की है किन्तु यदि कोई धार्मिक अगुवा या एक कलीसिया या कोई धार्मिक संगठन ऐसा करने को चुनता है तो इसका अर्थ यह नहीं होता कि परमेश्वर उसे स्वीकार करेगा।

3. **परमेश्वर के अधिकार के बिना कार्य करके:** तीसरी तरह से आज्ञा उल्लंघन उस अधिकार को लेकर किया जा सकता है जो कि केवल प्रभु का है। ऐसा दो प्रकार से किया जा सकता है: 1. परमेश्वर की आज्ञाओं, को उसी प्रकार की मनुष्यों की आज्ञाओं से बदलकर तथा, 2. मसीह के सुसमाचार में उन आज्ञाओं व नियमों को जोड़कर जिनके लिये पवित्रशास्त्र में हमें कोई अधिकार नहीं मिलता। इस पाप के विषय में यीशु मसीह ने इन शब्दों में कहा था ''और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।'' (मत्ती 15:9)। शताब्दियों से मनुष्य ने ऐसा अनुभव किया है कि परमेश्वर के वचन में कुछ भी जोड़ने से तथा उसकी उपासना में कुछ भी सम्मिलित करने से (जिसकी निन्दा परमेश्वर ने विशेष रूप से नहीं की है) कुछ अंतर नहीं पड़ता। यीशु मसीह से पंद्रह शताब्दि पूर्व मूसा ने लिखा था, ''जो आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूं उसमें न तो कुछ बढ़ाना और न कुछ घटाना, तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की जो आज्ञा मैं तुम्हें सुनाता हूं उन्हें तुम मानना।'' (व्यवस्थाविरण 4:2) नए नियम में प्रेरित यूहन्ना ने कहा था, ''कि यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस भविष्यवाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और नगर में से जिस की चर्चा इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा।'' (प्रकाशितवाक्य 22:18-19)।

कितना ही अच्छा हो यदि हमारे भीतर सदा ऐसा साहस हो कि हम मनुष्यों की प्रत्येक आज्ञा तथा हर एक नियम को अस्वीकार करके केवल उन्हीं धार्मिक नियमों व शिक्षाओं को स्वीकार करें जिनके लिये हमें नया नियम बताता तथा अधिकार देता है।

प्रश्नः निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देकर प्रश्न-पृष्ठ को जांचने के लिये भेज दें। व्यक्ति का नाम बताइएः

1. उसने विश्वास से अपने पुत्र को परमेश्वर के लिये बलिदान चढ़ाया था। ....

2. वह यरदन नदी में डुबकी लगाकर कोढ़ से शुद्ध हो गया था। ....

3. उसने कहा था "जो आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूं उस में न तो कुछ बढ़ाना और न कुछ घटाना।" ....

4. उसने पिन्तेकुस्त के दिन, यहूदियों को मसीह की हत्या करने के लिए अपराधी ठहराया था। ....

5. उसने कहा था कि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाने से उपासना व्यर्थ ठहरती है। ....

सत्य-असत्य

यदि कथन सत्य है तो "स" के ऊपर यदि असत्य है तो "अ" के ऊपर गोलाकार बना दें।

स अ 1. परमेश्वर हर एक व्यक्ति का, चाहे वह कुछ भी करे, उद्धार करेगा।

स अ 2. दुष्टात्मा विश्वास रखते और थरथराते हैं।

स अ 3. इब्रानियों की पत्री के ग्यारहवें अध्याय में उन विभिन्न व्यक्तियों का वर्णन हुआ है जिनका उद्धार विश्वास से हुआ था।

स अ 4. बाइबल बताती है कि हमारा उद्धार "केवल विश्वास" से होता है।

स अ 5. बाइबल में विभिन्न प्रकार के कार्यों का उल्लेख हुआ है।

स अ 6. विश्वास के द्वारा उद्धार केवल तभी हो सकता है यदि विश्वास आज्ञापालन के कार्यों के साथ हो।

स अ 7. हम मूसा की व्यवस्था के कामों के द्वारा धर्मी ठहरते हैं।

स अ 8. हम परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन केवल उन्हीं कार्यों को करके कर सकते हैं जिनकी उसने विशेष रूप से निन्दा की है।

स अ 9. परमेश्वर की उपासना उस तरह से करना उचित है जिस तरह से करने की आज्ञा उसने नहीं दी है।

स अ 10. नामान ने जिस समय विश्वास किया था वह उसी क्षण, यरदन नदी में डुबकी लगाने से पहले, कोढ़ से शुद्ध हो गया था।

खाली स्थान को भरिए:

1. "जो .... और .... उसी का उद्धार होगा।" (मरकुस 16:16)।

2. "विश्वास भी, यदि .... न हो तो अपने स्वभाव में ...." (याकूब 2:17)।

3. "सो तुमने देख लिया कि मनुष्य केवल .... से ही नहीं बरन .... से धर्मी ठहरता है।" (याकूब 2:24)।

4. ".. भी विश्वास रखते और थरथराते हैं। (याकूब 2:19)।

5. "..उसी के .... हो जिसकी .... हो।" (रोमियों 6:16)।

मसीही बनना

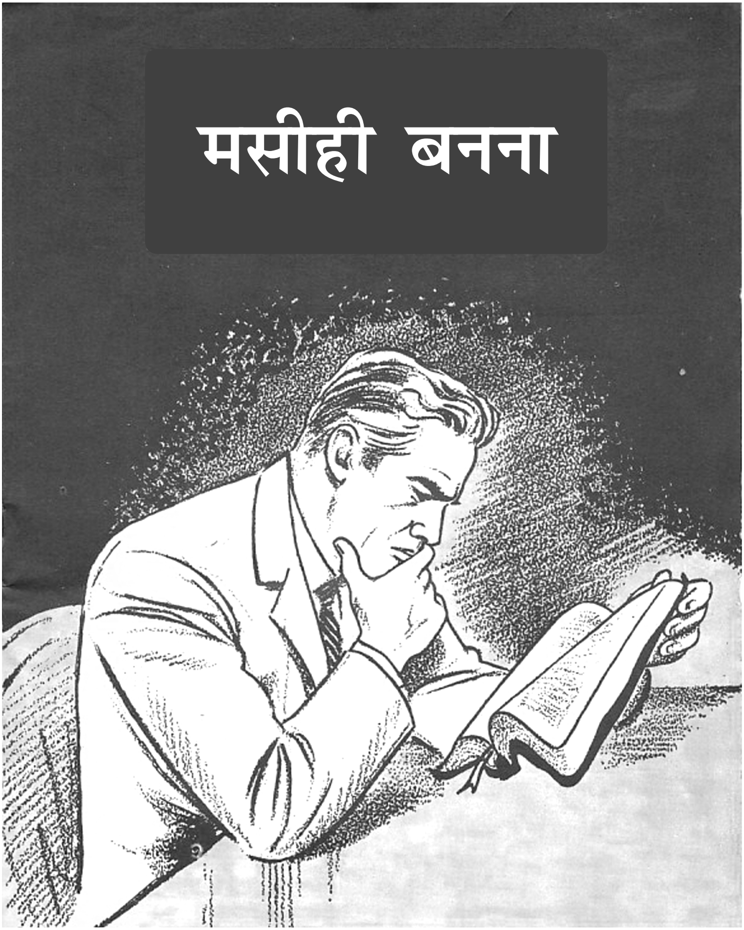

पाठ पाँच

बाइबल अध्ययन श्रृंखला

जॉन एम. हर्ट

पाठ पाँच
मसीही बनना

संसार में आजकल ''मसीही'' (Christian) शब्द बहुत ही शिथिलता से व्यवहार में लाया जाता है। इसका उपयोग प्राय: कलीसिया के प्रत्येक विश्वासी सदस्य से लेकर, एक अच्छे आचरण वाले अधार्मिक व्यक्ति, जो अपने परिवार को भलीभांति सम्भालता हो व नैतिक दृष्टिकोण से अच्छा जीवन बिताता हो, तक के लिए किया जाता है। आज के इस युग में लाखों ऐसे लोग हैं जो इसी आधार पर अपने आप को मसीही कहते हैं, किन्तु उन्होंने कभी भी यह देखने का प्रयत्न नहीं किया कि बाइबल वास्तव में इस विषय पर क्या शिक्षा देती है।

जैसे कि हमने चौथे पाठ से देखा था, कि मसीह में केवल विश्वास करने से ही कोई परमेश्वर की संतान नहीं बन जाता, परन्तु जो उस पर विश्वास करते हैं उन्हें वह परमेश्वर के संतान होने का अधिकार देता है (यूहन्ना 1:12)। प्रभु यीशु ने कहा था, ''जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।'' (मत्ती 7:21)। हमने उन दुष्ट सरदारों के विषय में भी पढ़ा था जिन्होंने ''उस पर विश्वास किया'' परन्तु प्रगट में उसे नहीं माना था ''क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उन्हें परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी।'' (यूहन्ना 12:42-43)। क्योंकि बाइबल में ''मसीही'' शब्द का उपयोग केवल परिश्रमी तथा मसीह के आज्ञाकारी शिष्यों के लिए ही हुआ है, इसलिए यह प्रत्यक्ष है कि वास्तव में मसीही बनने के लिए केवल विश्वास ही पर्याप्त नहीं है। (प्रेरितों 11:26; 1 पतरस 4:16)।

जबकि हम इस पाठ का अध्ययन कर रहे हैं, तो हमें यह अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि मात्र यह सोच लेने से, कि हमारा उद्धार हो चुका है हमारी मुक्ति नहीं हो जाती, और चाहे सम्पूर्ण संसार मान ले कि हम मसीही हैं, किन्तु यह शिष्यता का सच्चा प्रमाण नहीं है, हमारा उद्धारकर्त्ता परमेश्वर है, मनुष्य नहीं, और इसलिए केवल वही हमें बता सकता है कि हम किस प्रकार से उद्धार प्राप्त कर सकते हैं? और उसकी आज्ञाओं का अनुसरण करने पर ही हम

उसके पुत्र के नाम से कहलाने का अधिकार रखते हैं।

उद्धार प्राप्त करने या मसीही बनने के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए? इस प्रश्न को सरलता से हल करने के लिए बहुधा किसी विशेष सम्प्रदाय के निजी विचारों को इस विषय पर बता दिया जाता है।

किन्तु हमारा उद्देश्य, इन पाठों के द्वारा साम्प्रदायों की अपनी रायों या विचारों को अध्ययन करने का नहीं है, क्योंकि मनुष्यों के विचार, चाहे कितनी भी निष्कपटता से क्यों न दिए जाएं, प्रायः भ्रमात्मक ही होते हैं। विशेषकर धार्मिक विषयों में ये सदैव अविश्वस्त सिद्ध हुए हैं। (मत्ती 15:9) इसलिए, इस महत्वपूर्ण प्रश्न का बिल्कुल ठीक उत्तर जानने के लिए हमें यह मालूम करना चाहिए कि "स्वयं बाइबल की शिक्षानुसार मनुष्य को उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए?" जबकि आप इन पाठों का अध्ययन करते हैं, हमारा आपसे अनुरोध है कि आप केवल उन्हीं बातों को स्वीकार करें जिन के विषय में आप अपनी बाइबल में से पढ़ सकते हैं।

आज्ञापालन के नियम

बाइबल बहुत ही स्पष्टता से बताती है कि हमारा उद्धार हमारी अपनी व्यक्तिगत योग्यताओं के द्वारा नहीं परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से होता है। इस विषय में, पौलुस कहता है, "यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन् परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमंड करे।" (इफिसियों 2:8,9), किन्तु, जैसा कि हम ने चौथे पाठ में सीखा था इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि हमारा उद्धार प्रभु द्वारा दी गई सुसमाचार की आज्ञाओं को माने बिना होता है। उद्धार के दान को परमेश्वर ने सदैव ही आज्ञापालन के आधार पर दिया है और उसने प्रतिज्ञा की है कि जो ऐसा नहीं करते उन से वह एक दिन अवश्य ही पलटा लेगा। (2 थिस्सलुनिकियों 1:7-9)। आज्ञापालन के विषय में हमें याकूब का कथन भी स्मरण होगा, अर्थात् "मनुष्य केवल विश्वास से नहीं, वरन कर्मों से भी धर्मी ठहरता है।" (याकूब 2:24)।

मान लीजिए, यदि कोई उद्योग एक योजना चलाए जिसके अन्तर्गत कोई भी व्यक्ति जो उनकी बनाई हुई किसी वस्तु के बारे में एक विशेष लेख लिखे तो उसे 10,000 रु. इनाम में दिए जाएंगे। अब यदि कोई व्यक्ति इस प्रकार का एक लेख लिख कर 10,000 रु. प्राप्त कर लेता है तो इसका अर्थ यह नहीं

हो जाता कि उसने 10,000 रु, केवल एक लेख लिखकर, कमा लिए है। 10,000 रु, प्रत्यक्ष में अब भी एक उपहार है, यद्यपि उस इनाम को प्राप्त करने के लिए कुछ विशेष कार्य करना आवश्यक था। इसी तरह से उद्धार भी परमेश्वर का एक दान है, यद्यपि इस दान को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है, कि हम परमेश्वर द्वारा दी गई सुसमाचार की आज्ञाओं का पालन करें।

प्रभु यीशु ने कहा, ''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।'' व उसने यह भी कहा कि, ''यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा।'' (यूहन्ना 14:15 तथा 23)। इसलिए, यदि हम नए नियम की आज्ञाओं को न मानें तो इसका अभिप्राय यह होगा कि हम यीशु मसीह से वास्तव में प्रेम नहीं करते, चाहे ऐसा करने का हम कितना भी दावा क्यों न करते हो। ऐसे प्रेम के बिना, जो आज्ञापालन करने के लिए प्रोत्साहित करता है, विश्वास व्यर्थ है। पौलुस कहता है कि ''मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परन्तु प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नहीं।'' (1 कुरिन्थियों 13:2)।

इस पाठ में उन पांच नियमों के विषय में अध्ययन करेंगे जिनके लिए नया नियम बताता है कि प्रत्येक व्यक्ति को, पापों की क्षमा प्राप्त करने व मसीही बनने के लिए, इन आज्ञाओं को मानना आवश्यक है।

परमेश्वर हम में से हर एक को ऐसी सुबुद्धि दे कि हम धर्म के निमित्त सब प्रकार के पूर्वद्वेष तथा पूर्व-निर्णीत विचारों को दूर करके, साहस के साथ यीशु मसीह के सच्चे व वास्तविक सुसमाचार को, जो कि निष्कलंक है तथा मनुष्यों के विचारों व मतों के अनुसार नहीं है, स्वीकार कर लें।

मन-परिवर्तन के उदाहरण

दूसरे पाठ में हमने देखा था कि प्रेरितों के काम की पुस्तक को बहुधा ''मन-परिवर्तन की पुस्तक'' कहा जाता है, क्योंकि यह पुस्तक हमें बताती है कि आरम्भ के दिनों में लोग किस प्रकार से वास्तव में मसीही बने थे। यद्यपि बाइबल की अन्य पुस्तकें यीशु मसीह के विषय में, उस की मृत्यु के पूर्व तथा उसकी नई वाचा के प्रबल होने के पूर्व की बातें, बताती हैं, किन्तु मन-परिवर्तन के उदाहरणों के विषय में केवल प्रेरितों के काम की पुस्तक अवगत कराती

है। इस पुस्तक में हम मन-परिवर्तन की आठ विभिन्न घटनाओं के बारे में पढ़ते हैं व इन में से प्रत्येक घटना में हर एक व्यक्ति का नया जन्म एक ही तरह से हुआ था। बने हुए चार्ट में इन्हें भली प्रकार से समझाया गया है। इन उदाहरणों से हम सीखते हैं कि आरम्भ के दिनों में लोगों ने उद्धार पाने के लिए वास्तव में क्या किया था और इसलिए आज हमें उद्धार प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए।

इस बात का ध्यान रहे कि प्रेरितों के काम की पुस्तक के लेखक ने हर एक घटना में होने वाली प्रत्येक वस्तु को बार-बार लिखने का प्रयत्न नहीं किया है। कुछ घटनाओं में आज्ञापालन के कुछ निश्चित नियमों का उल्लेख जैसे पश्चाताप तथा अंगीकार (जिनके आगे चार्ट में × का चिन्ह लगा हुआ है), व जबकि अन्य घटनाओं के वर्णन में उनका उल्लेख नहीं हुआ है। किन्तु, इसका अर्थ यह नहीं है कि उन को माना नहीं गया। यर्थाथ में ये सब परमेश्वर की आज्ञाएं थीं व इस कारण यह प्रत्यक्ष ही है कि प्रत्येक घटना में उन सब का पालन किया गया, किन्तु पवित्रशास्त्र के लेखक ने यह आवश्यक नहीं समझा कि हर एक घटना के वर्णन में प्रत्येक नियम को बार-बार लिखें। परन्तु जब हम इन घटनाओं का सार देखते हैं तो हमें पता चलता है कि मन-परिवर्तन के लिए पांच विशेष नियमों का पालन करना बहुत आवश्यक है, और वे ये हैं:

		सुनना	**विश्वास**	**पश्चाताप**	**अंगीकार**	**बपतिस्मा**
1.	पिन्तेकुस्त के दिन यहूदी लोग। प्रेरितों 2:36-42	×	×	×		×
2.	सामरी लोग प्रेरितों 8:4-12	×	×			×
3.	खोजा प्रेरितों 8:26-39	×	×		×	×
4.	शाऊल (पौलुस)। प्रेरितों 22:1-16 तथा 9:17-20	×				×
5.	कुरनेलियुस। प्रेरितों 10:25-48 तथा 11:12-14	×				×
6.	लुदिया प्रेरितों 16:13-15	×				×
7.	फिलिप्पी का दारोगा प्रेरितों 16:23-34	×	×			×
8.	कुरिन्थी लोग प्रेरितों 18:4-11	×	×			×
	सब घटनाओं का सार	×	×	×	×	×

1. सुसामचार सुनना, 2. यीशु मसीह पर विश्वास करना, 3. पापों से मन फिराना (पश्चात्ताप), 4. मसीह में विश्वास का अंगीकार करना और 5. पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मे के द्वारा गाड़े जाना। आप देखेंगे कि किसी–किसी नियम का उल्लेख मन–परिवर्तन की प्रत्येक घटना में हुआ है। चार्ट में केवल उन्हीं नियमों के आगे चिन्ह बनाए गए हैं जिनका उल्लेख उक्त घटना में विशेष रूप से हुआ है। कदाचित् मन–परिवर्तन के इन उदाहरणों से प्रायः आप पहिले से ही परिचित हों, तौभी यह आप के लिए लाभप्रद होगा यदि आप इस पाठ को समाप्त करने के पश्चात् एक बार फिर से इन उदाहरणों को अपनी बाइबल में पढ़ लें।

पवित्रशास्त्र के अन्य लेख

मन–परिवर्तन के वास्तविक उदाहरणों के अतिरिक्त, पवित्रशास्त्र के अनेकों अन्य लेख भी स्पष्टता से बताते हैं कि उद्धार प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए? उद्धार प्राप्त करने के पांचों नियमों में से प्रत्येक नियम का वर्णन बाइबल में विभिन्न स्थानों पर इस प्रकार से हुआ है:

1. **सुसमाचार सुनना:** रोमियों 10:14 में पौलुस ने कहा, ‘‘और जिस की नहीं सुनी उस पर क्यों कर विश्वास करें?’’ और फिर 17वें पद में उसने कहा, ‘‘सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।’’ प्रेरितों 18:8 में हम पढ़ते हैं, ‘‘और बहुत से कुरन्थि सुन कर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया।’’ इसके अतिरिक्त अन्य पद ये हैं: मत्ती 7:24–27; लूका 8:20–21, मत्ती 13:15

2. **विश्वास:** क्योंकि इस विषय पर एक सम्पूर्ण पाठ पहिले ही लिखा जा चुका है, इसलिए यहां पर इस का उल्लेख संक्षिप्त में किया जा रहा है। इब्रानियों की पत्री के लेखक ने, परमेश्वर द्वारा प्रेरणा पाकर, विश्वास के अत्यंत महत्व का वर्णन इस तरह से किया है, ‘‘और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।’’ (इब्रानियों 11:6)।

3. **पश्चात्ताप:** इसका तात्पर्य मन में बदलाव लाने से है, अर्थात् मन को पाप से इस प्रकार से मोड़ लेना कि पाप का कोई विचार तक भी मन में न आए। मन फिराने का अभिप्राय पाप के निमित्त मात्र खेद व्यक्त करने से नहीं है, ''क्योंकि परमेश्वर भक्ति का शोक ऐसा पश्चात्ताप उत्पन्न करता है'' (2 कुरिन्थियों 7:10) यह पश्चात्तप इस प्रकार के संकल्प के साथ होता है जो कि यथार्थ में इस तरह के बदलाव को उत्पन्न करता है। प्रेरितों 17:30 में हम पढ़ते हैं, ''इसलिए परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।'' प्रभु यीशु ने कहा, ''यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होंगे'' (लूका 13:3)। तथा 2 पतरस 3:9; लूका 24:46-47; लूका 15:7 को भी पढ़िए।
4. **अंगीकार:** बाइबल हमें यह भी सिखाती है कि हमें मनुष्यों के सामने यीशु मसीह का अंगीकार करना है। प्रभु यीशु ने स्वयं कहा था, ''जो कोई मनुष्यों के साम्हने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने मान लूंगा। पर जो कोई मनुष्यों के साम्हने मेरा इंकार करेगा उससे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इंकार करूंगा।'' (मत्ती 10:32-33)। तथा रोमियों 10:10 में बाइबल बताती है, ''क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है।'' बाइबल में अंगीकरण के उदाहरण का उल्लेख कूश देश के एक खोजे के नए जन्म के विषय में हुआ है। प्रेरितों 8:36-37 में हम पढ़ते हैं, ''तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है? फिलिप्पुस ने कहा, ''यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है: उसने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।'' यह अच्छा अंगीकार न केवल एक कर्त्तव्य ही है, किन्तु उन सबके लिए जो मसीही बनते हैं एक सौभाग्य की बात है। (1 तीमुथियुस 6:13)।
5. **बपतिस्मा:** जिन चार नियमों के विषय में अभी हम ने अध्ययन किया उनके महत्व को अधिकांश लोग स्वीकार करते हैं, अब इस पाठ के शेष भाग में हम मसीही बनने के लिए माने जाने वाले, अंतिम महत्वपूर्ण नियम (बपतिस्मा) के बारे में देखेंगे।

बपतिस्मा क्यों लेना चाहिए?

प्रेरितों 10:48 में हम पढ़ते हैं, ''और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए।'' कुछ लोग बपतिस्मा लेने में परमेश्वर की आज्ञा की उपेक्षा करते हैं, जिस प्रकार से नामान ने अपने कोढ़ से शुद्ध होने के लिए परमेश्वर की आज्ञा न मानकर यरदन नदी में डुबकी लगाने से इंकार कर दिया था (देखिए 2 राजा 5:1-14)। वे नामान की तरह बहस करते हैं, कि यह ''तर्कनुसार'' नहीं है कि उद्धार के लिए पानी किसी भी प्रकार का महत्व रखता हो, और इसलिए यह विषय व्यक्तिगत पसंद का है कि बपतिस्मा लेना चाहिए या नहीं। किन्तु एक बात जो अवश्य ही स्पष्ट हो जानी चाहिए, वह यह है कि यद्यपि पानी अपने में उद्धार देने की कोई भी सामर्थ नहीं रखता, किन्तु बपतिस्मा परमेश्वर की एक आवश्यक व निश्चित आज्ञा है और इस कारण यह आज्ञा भी उद्धार के निमित्त उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि प्रभु की अन्य आज्ञाएं। (प्रेरितों 10:48; यूहन्ना 14:21; मत्ती 7:21)।

प्रेरितों 2:38 में पतरस ने लोगों से कहा, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।'' यदि मन फिराना पापों की क्षमा के लिए आवश्यक है तो वैसे ही बपतिस्मा भी। (यहां इस वाक्य में, ''पापों की क्षमा के लिए,'' की तुलना मत्ती 26:28 में इसी के सदृश वाक्य से कीजिए, जो कि यूनानी भाषा का अनुवाद है)। प्रभु यीशु ने कहा, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।'' (मरकुस 16:16)। यद्यपि हम मात्र अविश्वास के कारण उद्धार न पा सके, किन्तु परमेश्वर को ग्रहणयोग्य होने के लिए यह आवश्यक है कि हम विश्वास करें और बपतिस्मा लें।

बाइबल हमें सिखाती है कि जब तक कोई पवित्रशास्त्र की शिक्षानुसार बपतिस्मा नहीं लेता, वह मसीह में नहीं है। पौलुस कहता है, ''और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।'' (गलतियों 3:27; तथा 2 तीमुथियुस 2:10 को भी पढ़िए)। प्रभु यीशु ने स्वयं कहा, ''कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।''

(यूहन्ना 3:5)। यद्यपि दमिश्क की ओर जाते हुए मार्ग में शाऊल (पौलुस) का वार्तालाप यीशु मसीह से हुआ था तथा तीन दिन तक दमिश्क में रह कर उसने प्रार्थना भी की थी, किन्तु तौभी उसका उद्धार तब तक नहीं हुआ था जब तक कि उसने पवित्र शास्त्र की शिक्षानुसार बपतिस्मा नहीं ले लिया। हनन्याह नाम के एक प्रचारक, ने जिसे परमेश्वर ने उसके पास भेजा था, उससे कहा, "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" (प्रेरितों 22:16)।

प्रेरित पतरस ने उपदेश देते हुए कहा, कि "परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा, और वह जहाज बन रहा था, जिस में बैठकर थोड़े लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए। और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)।" (1 पतरस 3:20-21)। छोटे बालकों को बपतिस्मे की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे लेखा देने योग्य नहीं है, न ही वे पाप कर सकते हैं, और इस कारण उन्हें उद्धार की आवश्यकता नहीं है। (मत्ती 18:3; यहेजकेल 18:20)। पवित्रशास्त्र की शिक्षानुसार बपतिस्मा लेना, तब तक, वास्तव में असम्भव है जब तक कि कोई सुसमाचार को सीखने, विश्वास करने, पश्चात्ताप करने, व मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करने के योग्य नहीं हो जाता। (मत्ती 28:19; प्रेरितों 8:25-38; प्रेरितों 2:38)।

बपतिस्मा क्या है?

एक आधुनिक शब्दकोष के अनुसार बपतिस्मे का अर्थ "पानी से छिड़काव करना या पानी में डुबकी लगाना" है। परन्तु बपतिस्मे के लिए पवित्रशास्त्र हमें जिस प्रकार से बताता है उसे ध्यान में रखते हुए यह व्याख्या बिल्कुल अनुचित तथा अविश्वास है। वास्तव में आधुनिक शब्दकोष शब्दों का अर्थ इस प्रकार से बताते हैं जिस तरह से वे आज कल उपयोग में लाए जाते हैं व उसी तरह से नहीं जैसे कि बाइबल लिखने के समय में उनका उपयोग होता था। यद्यपि कुछ धार्मिक संगठनों ने नामान की तरह तर्क करके, बाइबल के बपतिस्मे को छिड़काव तथा उड़ेलने में बदल दिया है, किन्तु ऐसा करने का

अधिकार हमें सम्पूर्ण नए नियम में कहीं पर भी नहीं मिलता। बाइबल में हर एक स्थान पर, जहां पर भी यूनानी भाषा के ''बैप्टिजो'' शब्द, जिसे हिन्दी में बपतिस्मा कहा गया है, का उल्लेख हुआ है वहां उसका अभिप्राय ''डुबकी'' या ''गाड़े जाने से'' है। इसलिए बपतिस्मा कभी भी छिड़काव या उन्डेलना नहीं हो सकता। ऐसा कोई भी प्रतिष्ठित यूनानी कोषकार नहीं है जो ''बैप्टिजो'' का अर्थ ''छिड़काव करना'' अथवा ''उन्डेलना'' बताए, वास्तव में इन के लिए यूनानी भाषा में बिल्कुल भिन्न शब्दों का उपयोग हुआ है। इतिहास बताता है कि बपतिस्मे के लिए डुबकी के अतिरिक्त जितनी भी विधियों का उपयोग किया जाता है वे सब 1311 ई.स. तक समान्यतः नहीं मानी जाती थीं, किन्तु इसके पश्चात् रैवेन्ना में हुई कैथलिक कलीसिया की एक परिषद ने इन अनान्य विधियों को डुबकी के स्थान पर ग्रहण कर लिया था।

मनुष्यों द्वारा स्थान्नापन के विपरीत, बाइबल स्पष्टता पूर्वक बताती है कि वास्तविक बपतिस्मे का अर्थ जल में गाड़े जाना अथवा जल में दफ़न होकर बाहर आना है। बाइबल कहती है कि वास्तविक बपतिस्मे के लिए निम्नलिखित वस्तुएं आवश्यक हैं:

क. ''अधिक जल'' - यूहन्ना 3:23 - परन्तु छिड़कने तथा उन्डेलने के लिए यह आवश्यक नहीं है।
ख. जल के पास जाना - प्रेरितों 8:36 - परन्तु छिड़काव या उन्डेलने के लिए प्रायः जल व्यक्ति के पास लाया जाता है।
ग. जल के भीतर जाना - प्रेरितों 8:38-39 - परन्तु यदि छिड़काव उन्डेलना वास्तविक बपतिस्मा है तब इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।
घ. बपतिस्मा लेने वाले का गाड़े जाना - रोमियों 6:4 - यह पानी के अन्दर जाने से ही हो सकता है।
ङ. जी उठना - कुलुस्सियों 2:12 - परन्तु छिड़काव या उन्डेले जाने में ऐसा नहीं हो सकता।
च. जल में से निकलकर ऊपर आना - मरकुस 1:9-10; प्रेरितों 8:39 - यह भी छिड़काव अथवा उन्डेले जाने के अनुकुल नहीं है, तो भी वास्तविक बपतिस्मे में ठीक यही होता है।

हम आपको प्रोत्साहन देते है कि आप समय निकालकर अपनी बाइबल

में से इन पदों को पढ़ें। यद्यपि इन में से कुछ को अधिकांश धार्मिक संगठनों ने पूर्णतः स्वीकार नहीं किया है, और न ही प्रभु की शिक्षाओं को, जब वह पृथ्वी पर था, पूर्णरूप से माना गया था। किन्तु चाहे कुछ भी हो, इन असीम सत्यों की वास्तविकता नहीं बदल सकती।

प्रश्नः निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देकर केवल प्रश्न-पृष्ठ को हमारे पास जांचने के लिए भेज दें।

1. खाली स्थान को भरिएः

1. “सो .... से .... होता है” (रोमियों 10:17)।
2. “उठ, ... और .... अपने पापों को ....” (प्रेरितों 22:16)।
3. “क्योंकि परमेश्वर-भक्ति का .... ऐसा .... उत्पन्न करता है ....” (2 कुरिन्थियों 7:10)।
4. “.................. अर्थात् .... अब तुम्हें .... है ....” (1 पतरस 3:21)।
5. “यदि तुम मुझ से .... रखते हो, तो मेरी .... को मानोगे” (यूहन्ना 14:15)।

2. सत्य - असत्यः यदि कथन सत्य है तो “स” के ऊपर व यदि असत्य है तो “अ” के ऊपर गोलाकार बना दें।

स अ 1. परमेश्वर अब जब जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।

स अ 2. शाऊल का उद्धार एक दर्शन द्वारा हुआ था व उसे बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं थी।

स अ 3. सर्वप्रथम, नामान कोढ़ी ने शुद्ध होने के लिए परमेश्वर की आज्ञा मानने, अर्थात् यरदन नदी में डुबकी मारने से इंकार कर दिया था। (2 राजा 5:1-14)।

स अ 4. पश्चात्ताप का अभिप्राय पाप के निमित्त खेद व्यक्त करना है।

स अ 5. प्रेरितों के काम की पुस्तक मन-परिवर्तन के लिए पांच नियमों के लिए बताती है।

स अ 6. बाइबल की शिक्षानुसार बपतिस्मे का अर्थ “गाड़े जाना” है।

स अ 7. बाइबल में उल्लिखित बपतिस्मे के लिए अधिक जल की आवश्यकता होती है।

स अ 8. परमेश्वर हमें उद्धार इसलिए देता है क्योंकि हम ने उसे अपने कामों से कमाया है।

स अ 9. यद्यपि हम मसीह की आज्ञाओं को मानने से इंकार कर दें, तौभी हम उससे प्रेम करते हैं।

स   अ 10. प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखित मन–परिवर्तन की आठों घटनाओं में ''सुनने'' तथा 'बपतिस्मे' का वर्णन हुआ है।

3. यह कहां लिखा है: पवित्रशास्त्र के जिन पदों में निम्नलिखित वाक्यों का वर्णन हुआ है उनके नीचे रेखा खींचिए।

1. ''यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होंगे।''
   क. लूका 13:3
   ख. प्रेरितों 17:20
   ग. मत्ती 7:21

2. ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा''
   क. गलतियों 3:27
   ख. प्रेरितों 10:48
   ग. मरकुस 16:16

3. ''सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।''
   क. रोमियों 10:17
   ख. प्रेरितों 11:14
   ग. रोमियों 10:14

4. ''क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है।''
   क. मत्ती 10:23
   ख. रोमियों 10:10
   ग. प्रेरितों 8:37

5. ''मन फिराओ और हर एक पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा ले''
   क. 1 पतरस 3:21
   ख. प्रेरितों 2:38
   ग. रोमियों 6:3

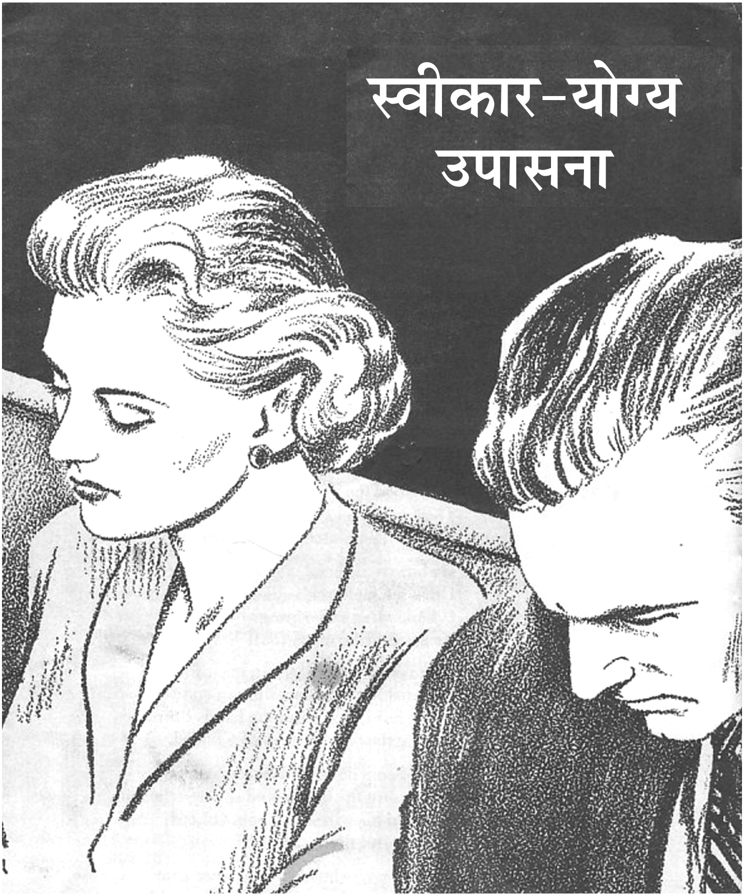

पाठ छः:

बाइबल अध्ययन श्रृंखला

जॉन एम. हर्ट

पाठ छः
स्वीकार-योग्य उपासना

मनुष्य ने सदैव ही निरनतर ऐसा अनुभव किया है कि संसार में एक परमज्ञानी विद्यमान है। इस अनुभूति का कारण, न केवल बाइबल ही है, परन्तु संसार की समस्त भौतिक वस्तुएं भी। दाऊद ने, बहुत समय पूर्व कहा था ''आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है, और आकाश मण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।'' (भजन संहिता 19:1)। उस सब उत्साह को ध्यान में रखते हुए जो कि ईश्वर की उपासना करने के प्रति शताब्दियों से मनुष्य ने दिखाया है, यह अत्यन्त खेदजनक बात है कि इस प्रकार की अधिकांश उपासना इस ढंग से की गई है कि वह परमेश्वर के निकट महत्व-रहित रही है। जब इस्राएली लोग सोने का एक बछड़ा ढालकर उसकी उपासना करने लगे थे तो उन्होंने ने कहा कि वे उस ''परमेश्वर'' की उपासना कर रहे हैं जो उन्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है (नहेमायाह 9:18)। बाइबल बताती है कि यद्यपि यह उपासना बड़े उत्साह तथा श्रद्धा के साथ की गई थी, किन्तु प्रभु के निकट यह अत्यंत घृणाजनक थी (निर्गमन 32:8-10)।

बाल, दागोन, अश्तोरेत तथा मल्काम की झूठी उपासना के विषय में पढ़कर, हम निश्चित रूप से जान लेते हैं कि हमारी उपासना, स्वीकार-योग्य होने के लिए, न केवल एक व सच्चे परमेश्वर के ही प्रति होनी चाहिए, किन्तु यह भी आवश्यक है कि वह परमेश्वर की इच्छानुसार हो। मूर्ति-पूजक, निःसंदेह, यह कहते होंगे कि वे संसार के परमसृष्टिकर्त्ता की उपासना कर रहे हैं जिस तरह से एस्राएलियों ने भी कहा था, यद्यपि इन लोगों ने उसे पृथक-पृथक नामों से पुकारा था। प्रत्यक्ष में ऐसे अधिकांश लोग मनुष्यों के हाथों से बनाई हुई मूर्तियों को यथार्थ में अपना ''ईश्वर'' नहीं कहते, परन्तु उस समय-प्रधान का प्रति रूप करके मानते हैं जिनकी वे सेवा करते हैं (देखिए निर्गमन 32:4-6)। किन्तु, उपासना चाहे कितनी भी श्रद्धा या शुद्ध हृदय से की जाए, यदि यह परमेश्वर के दिए हुए आदर्श अनुसार नहीं है तो वह उसे स्वीकार नहीं करता।

आत्मा और सच्चाई से

प्रभु यीशु ने कहा था कि "सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे......." (यूहन्ना 4:23)। उपासना को परमेश्वर के निकट स्वीकार्य होने के लिए, केवल निष्कपटता से ही नहीं, परन्तु यीशु मसीह तथा उसके प्रेरितों के बताए हुए आदर्श के अनुसार भी होना चाहिए। "सच्चाई से" उपासना करने के लिए यह आवश्यक है कि हम उस तरह से उपासना करें जैसे कि परमेश्वर के वचन में बताया गया है। प्रभु यीशु ने अपने इस कथन को, कि हम "सच्चाई" से उपासना करें, उस समय स्पष्ट कर दिया जब उसने पिता से प्रार्थना की और कहा, कि "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है।" (यूहन्ना 17:17)। इसलिए "सच्चाई से" उपासना करने का अभिप्राय यह है कि उपासना ठीक उसी तरह से करनी चाहिए जैसे कि नए नियम में दर्शाया गया है।

शताब्दियों से ऐसे बहुतेरे लोग हुए हैं जिन्होंने अपने आप को मसीही समझा व कहा है और ऐसी विधियों द्वारा परमेश्वर की उपासना करने का प्रयास किया है जो कि नए नियम की शिक्षाओं के बिल्कुल विपरीत हैं। बहुधा यह तर्क किया जाता है कि उनकी उपासना निष्कपटता से व भक्ति-पूर्ण है तथा उपासना के वास्तविक आदर्श को महत्व देना व्यर्थ है। किन्तु इस प्रकार का तर्क, बाल, मल्काम तथा सोने के बछड़े की उपासना व अनेक आधुनिक धर्मों का जो मसीह तथा उस की शिक्षाओं का इंकार करते हैं, सही बताने के लिए भी किया जा सकता है।

मात्र निष्कपटता पर्याप्त नहीं

यद्यपि स्वीकार-योग्य उपासना के लिए निष्कपटता बहुत आवश्यक है, किन्तु मात्र निष्कपटता ही पर्याप्त नहीं है। कदाचित कुछ ही लोग इस पर संदेह करेंगे कि जिन लोगों का वर्णन अभी हुआ है उनमें से बहुतेरे निष्कपट भक्त भी होंगे, किन्तु तो भी उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था का विरोध किया था। पौलुस जब मसीहीयों को सताया करता था तो वह ऐसा बिलकुल सच्चे विवेक से किया करता था तथा उसका विचार था कि वह परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहा है किन्तु बाद में वह स्वयं यह स्वीकार करता है कि ऐसा करके उसने बहुत बड़ा पाप किया है (देखिए प्रेरितों 22:4-8; 23:1)। वास्तव में, स्वीकार-योग्य उपासना हमारे अपने "विचारों" के अनुसार नहीं, परन्तु ठीक

उस प्रकार से होनी चाहिए जैसे कि बाइबल बताती है व परमेश्वर चाहता है।

कदाचित कोई यह कहे, उदाहरणार्थ, कि प्रभु भोज की अखमीरी रोटी तथा दाखरस (अंगूर के रस) के स्थान पर केक व चाय का उपयोग किया जाना चाहिए, क्योंकि लोगों पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा। यद्यपि यह भी कहा जाए कि सब कुछ पूर्ण निष्कपटता के साथ किया जाएगा, तथा इस कार्य को उचित बताने के लिए कहा जाए कि ''बाइबल ऐसा करने के लिए कहीं पर भी विशेष रूप से मना नहीं करती।'' किन्तु, बहुत ही कम लोग ऐसे संसार निष्ठ होंगे जो मसीह की शिक्षाओं के इस प्रकार के लज्जाजनक उल्लंघन का समर्थन करेंगे। वास्तव में महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारी उपासना, स्वीकार-योग्य होने के लिए, नए नियम, अर्थात उसके वचन, के आदर्शानुसार होनी चाहिए व उस प्रकार से नहीं जैसे कि हम ''सोचे'' उचित होगा। परमेश्वर ने अपने वचन में हमें चिताया है कि ''मेरे विचार और तुम्हारे विचार समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है।'' (यशायाह 55:8)। उपासना करने की कोई विधि अथवा कोई नियम कदाचित हमें अच्छा व भला प्रतीत हो किन्तु परमेश्वर की दृष्टि में वही यथार्थ में भद्दा तथा घृणित हो सकता है। तब किसी नियम अथवा विधि के विषय में निश्चित रूप से जानने के लिए, कि क्या वह स्वीकार-योग्य उपासना का अंश है या नहीं, हमें यह मालूम करना चाहिए कि ''क्या बाइबल का नया नियम उसके लिए आज्ञा देता है?''

उपासना में परिवर्तन

जैसे कि हम बाद में देखेंगे, कुछ आधुनिक विधियां, जो कि सामान्यत: अब स्वीकार कर ली गई है, नए नियम की कलीसिया में उस समय तक बिलकुल भी नहीं मानी जाती थी जब तक प्रेरित इस संसार में थे, किन्तु इनका आगमन, प्रेरितों की मृत्यु के पश्चात्, मनुष्यों के तर्क के कारण तथा बहुत वाद-विवाद के साथ हुआ। प्रभु यीशु ने हमें सिखाया है कि परमेश्वर की योजना में किसी भी प्रकार का परिवर्तन करने का अभिप्राय सम्पूर्ण उपासना को व्यर्थ व निरर्थक बनाना है, और जो ऐसा करते हैं उनके विषय में यीशु मसीह ने स्वयं कहा था, ''और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते है, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।'' (मत्ती 15:9; तथा प्रकाशितवाक्य 22:18-19 व गलतियों 1:8-9 को भी देखिए)।

परमेश्वर की आज्ञाओं में ''बदलाव'' लाने की प्रवृत्ति कोई नई नहीं है। ऐसा शताब्दियों से होता आया है व सदैव इसकी निंदा भी की गई है। बाईबल

बताती है, उदाहरणार्थ, कि राजा शाऊल ने अमालेकियों को नाश करने के विषय में किस प्रकार से परमेश्वर की आज्ञा में ''बदलाव'' लाने का प्रयत्न किया था। उसका यह तर्क था कि यदि वह तथा उसकी प्रजा अच्छे-अच्छे पशुओं को बलिदान करने के लिए लाएं तो परमेश्वर की उपासना करने में वह एक बहुत बढ़िया ''सहारा'' होगा। किन्तु हम जानते हैं कि परमेश्वर ने शाऊल को ऐसा करने का अधिकार नहीं दिया था, और इस अहंकारपूर्ण पाप के कारण परमेश्वर ने भविष्य में उसे राजा बने रहने के लिए तुच्छ जाना (देखिए 1 शमूएल 15; भजन 19:13)।

इसी प्रकार की एक अन्य घटना का उल्लेख पुराने नियम के दो याजकों, नादाब तथा अबीहू, के विषय में मिलता है (लैव्यवस्था 10:1-2)। बाइबल बताती है कि उन दोनों ने परमेश्वर की योजना में बदलाव लाने का प्रयत्न उस समय किया जब उन्होंने उपासना में ''उस ऊपरी आग की जिसकी आज्ञा यहोवा ने नहीं दी थी यहोवा के सम्मुख आरती दी।'' उनके इस आज्ञा उल्लंघन के कारण यहोवा के सम्मुख से आग ने निकलकर उन दोनों को भस्म कर दिया, और वे यहोवा के सामने मर गए।'' (पद 2)। अब यदि उन्हें कुछ समय दिया जाता तो वे अपने बचाव के लिए कदाचित यह तर्क देते कि ''यद्यपि परमेश्वर ने ऐसा करने की आज्ञा तो नहीं दी, किन्तु उसने यह भी तो नहीं कहा है कि हम इस तरह से उपासना नहीं कर सकते, व इस कारण ऐसा करने में कोई बुराई नहीं है।'' किन्तु यहां विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि परमेश्वर उन सब बातों के लिए नहीं बताता जिन्हें हमें उपासना में अथवा उसका अनुसरण करने में नहीं करना चाहिए, और यदि वह ऐसा करता तो एक ऐसी पुस्तक बन जाती जिसकी मोटाई कई मील की होती। वास्तव में जब वह हमें विशेष रूप से बताता है कि हमें क्या करना चाहिए तो उसके अतिरिक्त कुछ भी करना परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध है। ऐसे ही, जबकि हमें सिखाया गया है कि प्रभु भोज में हमें अखमीरी रोटी का उपयोग करना चाहिए, इसलिए केक, मिठाई, अथवा किसी और तरह की रोटी, या किसी अन्य वस्तु का उपयोग इसके स्थान पर नहीं किया जा सकता। ठीक यही बात उपासना के अन्य नियमों तथा आज्ञापालन के विषय में भी है।

नए नियम के आदर्श की ओर वापस आना

मनुष्यों की बनाई हुई धर्म-विधियों के आडम्बर और नए नियम की कलीसिया की सरल व आकर्षक उपासना के मध्य एक भारी अंतर है। यह

उपासना, जिसे प्रेरितों ने प्रेरणा पाकर सिखाया था, स्वीकार योग्य उपासना का एक मात्र वास्तविक आदर्श प्रदान करती हैं किन्तु बहुतेरे लोग इस आदर्श को मानना छोड़कर इसके स्थान पर मनुष्यों की बनाई हुई भिन्न-भिन्न शिक्षाओं को मानने लगे है, ये शिक्षाएं एक लम्बे समय से मानी जा रही है और इस कारण प्राय: बिना किसी जांच अथवा विरोध के स्वीकार कर ली जाती है, यद्यपि उनको मानने के लिए नए नियम में कहीं पर भी शिक्षा नहीं मिलती। क्योंकि इनके विषय में परमेश्वर के वचन में नहीं मिलता इसलिए ये अवश्य ही ''मनुष्यों की आज्ञाएं'' हैं, जिनका वर्णन प्रभु यीशु ने किया व बताया कि इनके द्वारा उपासना व्यर्थ ठहरती है। (मत्ती 15:9)।

बाइबल की शिक्षानुसार, उपासना के जिस आदर्श को प्रभु यीशु मसीह तथा प्रेरितों ने सिखाया था, उसे सरलता व स्पष्टता से समझा जा सकता है। इस में पांच नियम है- 1. प्रार्थना 2. प्रचार 3. चंदा देना, 4. प्रभु भोज 5. गीत गाना। इनमें से प्रत्येक का विवरण निम्नलिखित है।

प्रार्थना: प्रार्थना के महत्व को इस प्रकार से सामान्यत: स्वीकार कर लिया गया है कि इसके विषय में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। इस विषय में पवित्र शास्त्र के अनेक पदों में से कुछ का उल्लेख यहां किया जा सकता है, अर्थात् प्रेरितों 2:42, 12:5; 12; 16:25; 20:36;1 थिस्सलुनीकियों 5:17; 1 तिमुथियुस 2:1, 2, 3; रोमियों 8:26, किन्तु इस विषय में भी बहुधा मनुष्यों की शिक्षाओं को अपनाया गया है। मरियम या किसी विशेष ''संत'' से प्रार्थना करना अथवा उनके द्वारा परमेश्वर से प्रार्थना करना भी इसी वर्ग में आता है। बाइबल कहती है कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच में केवल ''एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है।'' (1 तीमुथियुस 2:5)। बाइबल में कहीं पर भी मरियम को इतनी ऊंची पदवी कभी नहीं दी गई, और न ही ऐसा कुछ उल्लेख मिलता है जिससे पता चले कि वह किसी अन्य विश्वासी शिष्य पर किसी प्रकार का कोई विशेष अधिकार रखती हो। (देखिए मत्ती 12:46-50)। इसी प्रकार से ''संतों'' से प्रार्थना करने की रीति भी मनुष्यों की निरी कल्पनाओं पर आधारित है, तथा पवित्रशास्त्र में इसके लिए बिल्कुल भी नहीं मिलता। परमेश्वर का कोई स्वर्गदूत भी इस तरह की श्रद्धा-भक्ति को स्वीकार नहीं करेगा। (प्रकाशितवाक्य 19:10 तथा प्रेरितों 10:25-26 को भी देखिए)। इसलिए इस प्रकार के सभी कार्य ''मनुष्यों की शिक्षाओं'' पर आधारित हैं तथा व्यर्थ उपासना के अंश हैं। (मत्ती 15:9)।

प्रचार: प्रार्थना की तरह सुसमाचार करने की आवश्यकता को भी इस प्रकार सामान्य रूप से स्वीकार कर लिया गया है कि इस विषय में बहुत कम टिप्पणी पर्याप्त होगी। इसके लिए पवित्रशास्त्र के कुछ विशेष पद इस प्रकार से हैं: प्रेरितों 20: 7; गलतियों 1:8-9; 1 कुरिन्थियों 1:21 तथा प्रेरितों 2:42 किन्तु इस विषय में भी लोगों ने बहुधा परमेश्वर के मार्ग पर चलना छोड़ दिया है। कलीसिया में स्त्रियों के प्रचार करने व पुरुषों के ऊपर सार्वजनिक ढंग से अधिकार रखने की प्रतिक्रिया का नए नियम में बहुत ही स्पष्ट रूप से खण्डन किया गया है। प्रेरित पौलुस ने कहा था कि, ''स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु आधीन रहने की आज्ञा है: जैसा व्यवस्था में लिखा भी है'' (1 कुरिन्थियों 14:34)। और फिर 1 तीमुथियुस 2:12 में हम पढ़ते हैं, कि ''स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।'' उसका यह अभिप्राय नहीं है कि कोई स्त्री अन्य स्त्रियों अथवा बालकों को शिक्षा नहीं दे सकती। (तीतुस 2:3-4)।

चन्दा देना: 1 कुरिन्थियों 16:1-2 में बाइबल बताती है कि चंदा ''सप्ताह के पहले दिन'' इक्ट्ठा करना चाहिए। सुसमाचार प्रचार करने में सहायता देने का कर्त्तव्य तथा विशेषाधिकार प्रत्येक मसीही का है, व नए नियम की शिक्षानुसार यह कार्य स्वेच्छा के साथ करना चाहिए। चंदा देने के लिए किसी व्यक्ति पर दबाव डालने या कोई निर्धारित राशि देने के लिए बाध्य करने जैसी विधियों को नए नियम की कलीसिया में कभी भी काम में नहीं लाया गया। वास्तव में, बाइबल बताती है कि इस प्रकार के उपायों द्वारा इक्ट्ठा किया गया चंदा, चाहे वह कितना भी हो, स्वीकार योग्य नहीं है। (2 कुरिन्थियों 9:7)। इस कारण सप्ताह के पहले दिन के अतिरिक्त, अन्य सभाओं में व अन्य उपायों के द्वारा कलीसिया के कार्य के लिए चंदा इकट्ठा करने की विधियों के विषय में नए नियम में कुछ भी नहीं मिलता। इस विषय में पवित्रशास्त्र के अन्य पद ये है: 2 कुरिन्थियों 8:1-8; मत्ती 19:29; लूका 21:1-4

प्रभु भोज: प्रभु भोज में भाग लेना, प्रत्येक मसीही के लिए, एक महत्वपूर्ण अनुभव का विषय होना चाहिए। प्रभु-भोज की रोटी के लिए, प्रभु यीशु ने कहा था, ''मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।'' और फिर प्याले (दाखरस) के लिए उसने कहा, ''जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।'' (1 कुरिन्थियों 11:24-25; लूका 22:19-20) इस कारण, प्रभु-भोज में भाग लेना, मात्र कर्त्तव्य ही नहीं, परन्तु एक विशेषाधिकार होना चाहिए। पौलुस इस विषय में कहता है, ''क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते,

और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।'' (1 कुरिन्थियों 11:26)।

नए नियम की कलीसिया में प्रभु-भोज प्रत्येक रविवार को लिया जाता था। लौकिक तथा बाइबल संबंधी इतिहास से पता चलता है कि जब तक प्रेरित इस संसार में थे तथा उनकी मृत्यु के कई वर्षों पश्चात् तक भी, इसको मासिक अथवा त्रैमासिक जैसी न्यून अवस्था तक कभी नहीं पहुंचाया गया। नए नियम की कलीसिया का उल्लेख करते हुए, प्रेरितों के काम की पुस्तक के लेखक ने बताया, ''सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिए इक्ट्ठा हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उनसे बातें की' (प्रेरितों 20:7) पवित्रशास्त्र के इस पद तथा 1 कुरिन्थियों 16:1-2 से हम सीखते हैं कि सप्ताह का पहला दिन, मसीहीयों के एकत्रित होने के लिए, एक निश्चित दिन था, तथा इन सभाओं का एक मुख्य कारण, ''रोटी तोड़ना'' अर्थात् प्रभु-भोज में भाग लेना, हुआ करता था। लौकिक इतिहास यह भी बताता है कि आरम्भ की कलीसिया प्रत्येक रविवार के दिन प्रभु-भोज में भाग लिया करती थी। परन्तु इससे पूर्व कि कोई यह कहे कि प्रेरितों 20:7 का अभिप्राय प्रत्येक सप्ताह से नहीं है, हम पवित्रशास्त्र में इसी प्रकार के दो अन्य पदों पर ध्यान दें। पुराने नियम में लोगों को परमेश्वर ने आज्ञा दी थी, ''तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना।'' (निर्गमन 20:8)। यद्यपि यहूदियों ने इस आज्ञा के प्रत्यक्ष अर्थ को तर्क के आधार पर यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि ''इसका अभिप्राय प्रत्येक विश्रामदिन से नहीं है'', किन्तु हम पढ़ते हैं, कि जिन्होंने हर एक विश्रामदिन को नहीं माना वे अपनी मूर्खता के कारण नाश हुए (देखिए गिनती 15:32-36)। इसी प्रकार से 1 कुरिन्थियों 16:1-2 में बाइबल बताती है कि चंदा ''सप्ताह के पहिले दिन'' एकत्रित किया जाता था (पद 2)। यदि प्रभु-भोज में प्रेरितों से कम बार भाग लेना उचित है व ऐसा करना और भी प्रशंसनीय है, जैसा कि कुछ लोगों का विचार है, तो गाना गाने, प्रार्थना करने तथा चंदा लेने के लिए यह विधि क्यों नहीं उपयोग में लाई जाती?

गीत गाना: नए नियम की उपासना में एक और विशेषता है जो कि कदाचित विचित्र प्रतीत हो, और वह यह है कि प्रथम मसीही सदैव केवल कंठ-संगीत का उपयोग किया करते थे। नए नियम में कहीं पर भी इस प्रकार का कोई उल्लेख नहीं मिलता कि प्रेरितों अथवा विश्वासी शिष्यों ने कलीसिया में कभी भी वाद्य-संगीत का उपयोग किया हो, यद्यपि इस समय के अन्य लोग बहुधा विभिन्न प्रकार के बाजों को उपयोग में लाते थे। लौकिक इतिहास बताता

है कि कलीसिया में वाद्य-संगीत (बाजों) का प्रचलन निरी ''मनुष्यों की शिक्षाओं'' के आधार पर 666 ई. सन में, प्रेरितों की मृत्यु के कई सौ वर्ष पश्चात् आरम्भ हुआ तथा नया नियम इसके लिए बिल्कुल आज्ञा नहीं देता। नया नियम स्पष्टता पूर्वक मसीहीयों को गाने (कंठ-संगीत) के लिए आज्ञा देता है, जिस प्रकार से परमेश्वर ने नूह को गोपेर की लकड़ी का एक जहाज बनाने की आज्ञा दी थी। (उत्पत्ति 6:14; इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16)। बिना परमेश्वर की आज्ञा के उपासना में पियानो, हारमोनियम, गिटार इत्यादि को उपयोग में लाकर हम उसी प्रकार से आज्ञोल्लंघन कर सकते हैं जिस प्रकार से नूह गोपेर की लकड़ी जिसे परमेश्वर ने उसे जहाज बनाने के लिए उपयोग में लाने को कहा था; में चीड़ की लकड़ी इत्यादि को मिलाकर कर सकता था। यदि नूह ने इस प्रकार का कार्य किया होता तो उसकी पुष्टि करने के लिए कदाचित् वह यह तर्क दे सकता था, जैसे कि कोई व्यक्ति प्रभु-भोज में केक व चाय का उपयोग करके अथवा उपासना में वाद्य-संगीतों (बाजों) को उपयोग में लाकर कहे कि ''परमेश्वर यह नहीं कहता कि ऐसा नहीं किया जा सकता।'' किन्तु नादाब तथा अबीहू के उदाहरण से हम स्पष्टता से देख सकते हैं कि जो वस्तुएं या कार्य हम उपासना में नहीं कर सकते उन सब के लिए परमेश्वर हमें नहीं बताता है, परन्तु जो कुछ हमें करना चाहिए उसके लिए उसने हमें विशेष रूप से आज्ञा दी है। (लैव्यवस्था 10:1-2)।

बहुतेरी ऐसी वस्तुएं जो हमें भली प्रतीत हों कदाचित वे ही परमेश्वर की दृष्टि में वास्तव में घृणाजनक हो सकती हैं (यशायाह 55:8)। यदि वाद्य-संगीत गाने में ''सहायता'' का एक उचित कारण होता है, जैसा कि बहुधा कहा जाता है, तो निःसंदेह प्रेरित, जिन्हें परमेश्वर द्वारा प्रेरणा मिली थी व जो कलीसिया को अपने जीवन से भी अधिक प्रेम करते थे, इसे उपयोग में लाने की शिक्षा अवश्य देते। यद्यपि पुराने नियम के आधीन, दाऊद उपासना में (वाद्य-संगीत) का उपयोग किया करता था किन्तु उसके साथ ही वह पशु-बलियां भी चढ़ाया करता था व लोबान भी जलाया करता था, परन्तु नए नियम की कलीसिया की उपासना में इन में से किसी भी वस्तु को कभी भी उपयोग में नहीं लाया गया। (तीसरे पाठ को देखिए) समस्त संसार में आज भी लाखों लोग नए नियम के इस सरल तथा सुन्दर आदर्श के अनुसार उपासना करते हैं। इस विषय में और अधिक विस्तारपूर्ण अध्ययन हम आठवें पाठ में करेंगे।

प्रश्नः निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देकर केवल प्रश्न-पृष्ठ को हमारे पते पर जांचने के लिए भेज दें।

1. पवित्रशास्त्र के पद ढूंढिए: उस पद के नीचे रेखा खींचिए जिसमें यह लिखा है :

1. सप्ताह के पहले दिन चेले रोटी तोड़ने के लिए इक्ट्ठे हुए।
   क. प्रकाशितवाक्य 22:18
   ख. प्रेरितों 20:7
   ग. मत्ती 7:22
2. हमें गीत गाना व अपने मन में प्रभु के सामने कीर्तन करना चाहिए।
   क. इफिसियों 5:19
   ख. कुलिस्सियों 3:16
   ग. मत्ती 26:30
3. ''सप्ताह के पहले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे ....''
   क. 1 कुरिन्थियों 16:1-2
   ख. 2 कुरिन्थियों 9:7
   ग. मत्ती 19:29
4. ''और मैं कहता हूं कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाए ....''
   क. 1 कुरिन्थियों 14:34
   ख. तीतुस 2:3-4
   ग. 1 तीमुथियुस 2:12
5. ''क्योंकि परमेश्वर एक ही है और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है..................।''
   क. मत्ती 12:46-50
   ख. इफिसियों 1:1
   ग. 1 तीमुथियुस 2:5

2. सत्य-असत्यः यदि कथन सत्य है तो ''स'' के ऊपर व यदि असत्य है तो ''अ'' के ऊपर गोलाकार बना दें।

स अ 1. अस्वीकार-योग्य उपासना अवश्य ही आत्मा और सच्चाई से होनी चाहिए।

स अ 2. परमेश्वर का वचन सत्य हैं।

स अ 3. प्रभु–भोज में केक व चाय का उपयोग भी किया जा सकता है, क्योंकि बाइबल विशिष्ट रूप से यह नहीं कहती कि हम ऐसा नहीं कर सकते।

स अ 4. परमेश्वर हर एक विषय में मनुष्यों की तरह विचार करता है।

स अ 5. मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाने से उपासना व्यर्थ हो जाती हैं।

स अ 6. बाइबल में नए नियम की उपासना के पांच नियमों का वर्णन मिलता है।

स अ 7. पवित्रशास्त्र सिखाता है कि हमें मरियम अथवा ''संतों'' से प्रार्थना करनी चाहिए।

स अ 8. जब कभी हम प्रभु–भोज में भाग लेते हैं तो हम प्रभु की मृत्यु को प्रचार करते हैं।

स अ 9. ''तू विश्रामदिन को .... स्मरण रखना'', इस कथन का अभिप्राय महीने में एक बार या तीन महीने में एक बार से हैं।

स अ 10. बाइबल बताती है कि आरम्भ की कलीसिया उपासना में वाद्य–संगीत (बाजों) को उपयोग में लाती थी।

3. व्यक्ति का नाम बताइए :

1. उसने परमेश्वर की आज्ञा बिना अमालेकियों के यहां से प्रभु को चढ़ाने के लिए भेंट लेकर पाप किया। ....
2. वह प्रेरित जिसने कहा, ''स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें....... ....''
3. सप्ताह के पहिले दिन जब चेले रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे हुए तो उसने उनसे बातें की। ....
4. वह तथा उसका भाई अबीहू इसलिए नाश हुए क्योंकि उन्होंने उपासना में ऐसी वस्तु का उपयोग किया जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने नहीं दी थी।

   ....
5. किसने कहा, ''ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।'' ....'

नए नियम की कलीसिया

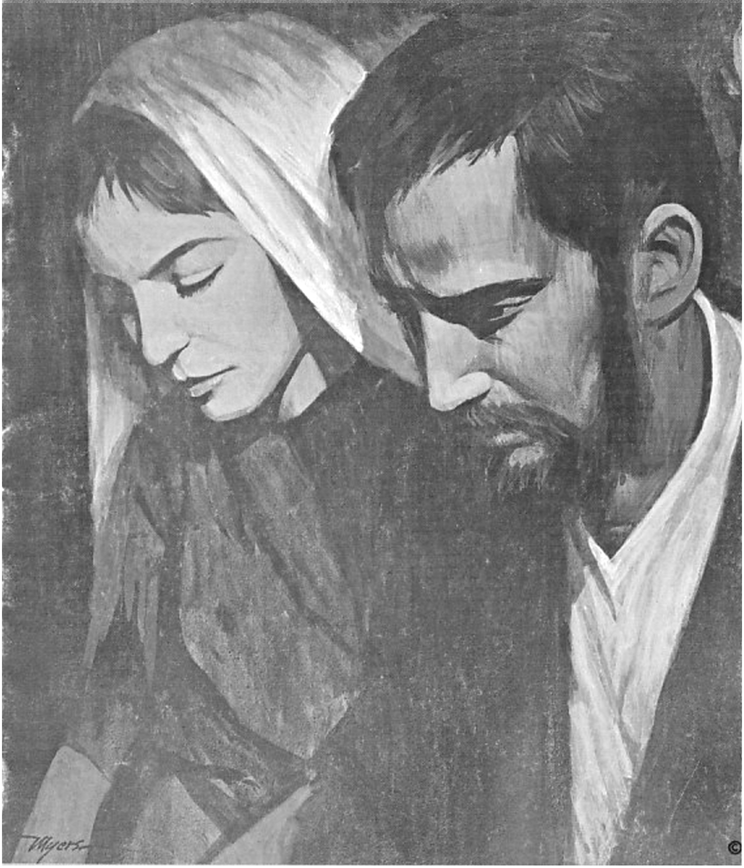

पाठ सात
बाइबल अध्ययन श्रृंखला

जॉन एम. हर्ट

पाठ सात
नए नियम की कलीसिया

नए नियम में जिन विशेष वास्तविकताओं को अधिक बल देकर दर्शाया गया है उनमें से एक प्रथम मसीहीयों की वह एकता थी जिससे वे परमेश्वर की उपासना तथा सेवा किया करते थे। उनकी एकता केवल उपासना के आदर्श को पालन करने तक ही सीमित न थी, परन्तु जिस शिक्षा को उन्होंने ग्रहण किया था उसे भी वे एकता के साथ मानते थे (प्रेरितों 2:42 तथा 46)। लौकिक तथा बाइबल सम्बंधी दोनों ही इतिहास इस वास्तविकता का स्पष्ट प्रमाण देते हैं कि प्रेरितों के दिनों में आज की तरह भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय नहीं हुआ करते थे तथा सब विश्वासी मसीही संसार भर में अन्य मसीहीयों के साथ पूर्ण सहभागिता रखा करते थे। (1 यूहन्ना 1:7; 2 कुरिन्थियों 8:18)।

इस प्रकार की एकता का विशेष कारण यह है कि प्रेरितों की शिक्षा में पूर्ण अनुरूपता थी। जब पौलुस, उदाहरणार्थ रोम में गया तो उसने वहां पर उसी शिक्षा का प्रचार किया जिसका प्रचार उसने इफिसुस, कुरिन्थुस, गलतिया तथा संसार के अन्य भागों में किया था, और इसलिये उसकी शिक्षा के फलस्वरूप कहीं पर भी विभिन्न सम्प्रदायों का जन्म नहीं हुआ (प्रेरितों 15:36; रोमियों 15:19)। ठीक ऐसा ही अन्य प्रेरितों के विषय में भी था। परमेश्वर की अगुआई पाकर उन्होंने कभी भी परस्पर -विरोधी शिक्षाओं को नहीं सिखाया और इसलिए न ही परस्पर-विरोधी सम्प्रदायों की स्थापना हुई (यूहन्ना 16:13; 14:26; 2 तीमुथियुस 3:16)। नए नियम में हम कहीं पर भी "सम्प्रदायों" के विषय में नहीं पढ़ते, इसके विपरीत नया नियम एक कलीसिया का वर्णन करता है। प्रेरितों 2:47, में उदाहरणार्थ, हम पढ़ते हैं कि जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उन में (अर्थात् कलीसिया में) मिला देता था तथा यीशु मसीह ने कहा था कि, "मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" (मत्ती 16:18)। नए नियम की कलीसिया का गठा हुआ स्वरूप आज के धार्मिक संसार की अत्यधिक विभाजित स्थिति के बिल्कुल विपरीत है। अपने अगले पाठ में हम आधुनिक साम्प्रदायों को छोड़कर कलीसिया के विषय में अध्ययन करेंगे व यह देखेंगे कि प्रेरितों के दिनों में वह किस प्रकार से वर्तमान थी।

एकता मौलिक थी

पहली शताब्दी में विश्वासी मसीहीयों की एक कलीसिया में एकता की वास्तविकता संयोग मात्र नहीं थी। किन्तु वह एकता उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की प्रार्थना तथा प्रेरितों की ज़ोरदार व प्रबल शिक्षा के प्रत्युत्तर में थी। अपनी मृत्यु से कुछ ही समय पूर्व प्रभु यीशु ने प्रार्थना की थी कि उसके अनुयायी कभी भी भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों में विभाजित न हों। प्रेरितों का वर्णन करते हुए उसने कहा, ''मैं केवल इन्हीं के लिए बिनती नहीं करता, परन्तु उनके लिए भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे कि वे सब एक हों। जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हू, वैसे ही वे भी हम में हो, इसलिए कि जगत प्रतीति करे कि तू ही ने मुझे भेजा।'' (यूहन्ना 17:20-21)। जैसे कि परमेश्वर और मसीह एक हैं, वैसे ही प्रभु यीशु ने शिक्षा दी कि उसके चेले भी एक हों।

एकता का कारण

एकता का एक कारण, यीशु मसीह ने कहा, यह है ''कि जगत प्रतीति करे कि तू ही ने मुझे भेजा'' (यूहन्ना 17:21), किन्तु आज समस्त संसार में पाए जाने वाले असंख्य समुदाय इस वास्तविकता के स्पष्ट विरोध में वर्तमान हैं, ऐसे स्थान में जहां केवल एक या दो मण्डलियों का होना पर्याप्त है वहां इसके विपरीत, अनेक परस्पर विरोधी सम्प्रदाय पाए जाते हैं, ये सम्प्रदाय अपनी-अपनी शिक्षाओं के आधार पर पृथक-पृथक प्रचारकों का समर्थन करने तथा उपासना के लिए भिन्न-भिन्न इमारतों का निर्माण करने में प्रयत्नशील रहते हैं। जब कि संसार पाप में मर रहा है और धन तथा परिश्रम का इस तरह दयनीय खर्चा यह समझकर किया जा रहा है कि यह सब सुसमाचार की उन्नति के लिए है।

यदि वास्तविक एकता, जिसकी परमेश्वर अपने लोगों से इच्छा करता है, उन सबके मध्य वर्तमान हो जाए जो यीशु मसीह का अनुसरण करने का दावा करते हैं, तो कदाचित पांच में से चार प्रचारक, जो अभी एक स्थान में रहकर कार्य कर रहे हैं पूर्ण समर्थन सहित संसार के उन स्थानों में जाकर प्रचार कर सकते है जहां सुसमाचार की दुर्लभता व आवश्यकता है। ऐसी एकता, आज, पहिली शताब्दी की तरह, केवल तभी वर्तमान हो सकती है यदि सम्पूर्ण तरह से मसीह तथा उसके प्रेरितों द्वारा दिए गए नियम की कलीसिया के आदर्श की और वापस आकर उसका पालन किया जाए।

एकता का प्रमाण

नए नियम की कलीसिया की उचित जानकारी प्रदान करने के लिए धार्मिक एकता से संबंधित पवित्रशास्त्र के कुछ विशेष पदों का यहां वर्णन किया जा रहा है। जैसे कि नीचे दिए जा रहे पदों से देखा जा सकता है, बाइबल स्पष्टता से बताती है कि मसीह ने विभिन्न सम्प्रदायों को, जो भिन्न-भिन्न शिक्षा देते व मानते हैं नहीं बनाया है, परन्तु पहिली शताब्दी के सब मसीही एक विशाल देह, अर्थात् मसीह की कलीसिया के अंग थे।

कुलुस्सियों 1:18 ''और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है।'' इफिसियों 1:22-23 ''और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है।''

इफिसियों 4:4 ''एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।''

इफिसियों 5:23 ''यीशु मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्ता है।''

1 कुरिन्थियों 12:13 ''क्योंकि हम सबने क्या यहुदी हो, क्या दास, क्या स्वतंत्र एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया।''

1 कुरिन्थियों 1:10 ''हे भाइयों मैं तुमसे यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं कि तुम सब एक ही बात कहो; और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो।''

मत्ती 16:18 ''मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा: और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।''।

जिस कलीसिया को प्रभु यीशु ने बनाया था उसका उल्लेख सम्पूर्ण बाइबल में एक भाव से ही हुआ है। अध्ययन के लिए बाइबल के कुछ अन्य पद इस प्रकार से हैं: प्रेरितों 12:1; 20:28; 1 कुरिन्थियों 12:28; गलतियों 1:13; इफिसियों 3:10 तथा 21 और 5:23

सम्पूर्ण बाइबल में जहां कहीं भी ''कलीसियाएं'' या ''कलीसियाओं'' शब्द का उल्लेख हुआ है तो वह स्थानीय भाव में किया गया है, अर्थात किसी एक स्थान में प्रभु की कलीसिया की अन्य मण्डलियों के लिए जैसे कि ''गलतिया की कलीसियाओं के नाम'' या ''आसिया की सात कलीसियाओं के नाम'' (गलतियों 1:2; प्रकाशितवाक्य 1:4)। 1 कुरिन्थियों 4:17 में पौलुस ने इसी तरह से वर्णन किया है, परन्तु उसने बताया कि उन सब में एक ही शिक्षा का प्रचार हुआ है।

बहुधा यह कहा जाता है कि यीशु मसीह ने भिन्न-भिन्न कलीसियाओं का उस समय समर्थन किया था जब उसने कहा था, ''मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो'' (यूहन्ना 15:5-6) किन्तु प्रभु यीशु के इस कथन का पक्षपात-रहित अध्ययन करने से स्पष्ट हो जाता है कि यीशु मसीह की वास्तविक शिक्षा उक्त तर्क के बिल्कुल विपरीत है। यहां प्रसंग से (उपर्युक्त पद के ऊपर तथा नीचे के पदों से) पता चलता है कि मसीह व्यक्तिगत रूप से अपने शिष्यों के बारे में, जो मसीह में एक थे, कह रहा था, उसका अभिप्राय विभिन्न सम्प्रदायों से कदापि नहीं था। इस दृष्टि-कोण की एक अन्य प्रत्यक्ष अशुद्धि यह है कि बाइबल कहीं पर भी नहीं बताती कि उन दिनों में एक भी आधुनिक प्रोटेस्टैन्ट अथवा कैथोलिक सम्प्रदाय विद्यमान था।

जब हम ये तथा इसी तरह के बाइबल के अन्य पदों को पढ़ते हैं, तो प्रभु यीशु की प्रार्थना याद आ जाती है, जब कि उसने क्रूस के साए में नम्र होकर बिनती की थी, ''कि वे सब एक हो।'' (यूहन्ना 17:20) इस कारण यदि कोई भी व्यक्ति, इसलिए परमेश्वर का धन्यवाद करे कि आज संसार में भिन्न-भिन्न कलीसियाएं हैं, तो वह इस बात के लिए धन्यवाद करता है कि उद्धारकर्त्ता यीशु की प्रार्थना आज के युग में वैसे पूरी नहीं हो रही है जिस प्रकार से प्रेरितों के दिनों में हुई थी (प्रेरितों 4:32)।

नए नियम की कलीसिया की विशेषताएं

जब यीशु ने अपनी कलीसिया की स्थापना की थी तो उसने इसे बहुत सी विशेषताएं प्रदान की थीं ताकि उनके द्वारा लोग उसकी कलीसिया को सरलता से पहचान सकें। जिस प्रकार से हमने अपने अध्ययन द्वारा देखा था, उदाहरणार्थ, पहिली शताब्दी में मसीही प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन प्रभु-भोज में भाग लेते थे, तथा वे अपनी उपासना सभाओं में गीत गाते थे, किन्तु किसी भी प्रकार के बाजों को उपयोग में नहीं लाते थे, और हमने यह भी देखा कि मसीह बनने से पहले उन सब ने ''अपने पापों की क्षमा के लिए'' बपतिस्मा लिया था। नए नियम की कलीसिया की अनेक अन्य विशेषताओं का वर्णन भी मिलता है, अर्थात:

1. किसी ने अपने आपको कलीसिया में स्वयं कभी नहीं मिलाया: पांचवें पाठ में हमने सीखा था कि जब कोई व्यक्ति पवित्रशास्त्र की शिक्षानुसार बपतिस्मा ले लेता है तो वह परमेश्वर का, नया जन्मा हुआ, बालक बन जाता है तथा ''मसीह में'' सम्मिलित हो जाता है (यूहन्ना 3:5; रोमियों 6:33)।

पौलुस के कथानुसार, ''और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।'' (गलतियों 3:27)।

नए नियम के आरंभ के दिनों में जिन लोगों ने इस प्रकार से सुसमाचार का पालन किया था, उन्होंने अपने आपको ''किसी कलीसिया में मिलाने'' का प्रयत्न कभी नहीं किया था। इसका कारण यह था कि जब कोई व्यक्ति पापों की क्षमा प्राप्त करता था तो प्रभु स्वयं ही तत्काल उसे अपनी कलीसिया में मिला लेता था तथा वह व्यक्ति अन्य सदस्यों की तरह कलीसिया का अंग बन जाता था। प्रेरितों के काम की पुस्तक के लेखक ने इस तथ्य की पुष्टि करते हुए यह कहा कि, जो उद्धार पाते थे उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें, अर्थात् मसीहियों में मिला देता था। (प्रेरितों 2:47)।

पहिली शताब्दी में मतदान द्वारा लोगों को नए नियम को स्वीकार करने या मत देकर किसी सदस्य को नए नियम की कलीसिया से बाहर निकाल देने की चर्चा तक सुनने में नहीं आती थी। बाइबल में इससे मिलती-जुलती एक घटना का उल्लेख दियुत्रिफेस नाम के एक अधार्मिक व्यक्ति के विषय में मिलता है। प्रेरित यूहन्ना ने उसके इस दुष्ट कार्य की अत्यन्त कड़ी निन्दा की, जिसका वर्णन इन शब्दों में मिलता है, ''आप ही भाइयों को ग्रहण नहीं करता, और उन्हें जो ग्रहण करना चाहते हैं, मना करता है, और मंडली से निकाल देता है'' (3 यूहन्ना 1:9-10)। कलीसिया में परमेश्वर की योजनानुसार, प्रभु ही लोगों को स्वीकार करता है, व मनुष्य नहीं, और केवल वही किसी को इससे बाहर निकाल सकता है।

2. कलीसिया में मनुष्यों के धर्मसार नहीं थे: नए नियम की कलीसिया की एक और विशेषता यह है कि वह किसी भी प्रकार के मानवी धर्मसारों, अर्थात् चर्च मांनुएल, इन्तिखाबी सबक, या परमेश्वर की प्रेरणा बिना लिखी किसी अन्य पुस्तक को नहीं मानती थी। प्रभु की कलीसिया के सदस्य, पहिली शताब्दी में केवल नए नियम को ही अपना एकमात्र धर्म-सार मानते थे, तथा सहभागिता में स्वीकार होने के लिए किसी प्रकार से भी नहीं कहा जाता था कि उसे मनुष्यों द्वारा रचित किसी भी प्रकार के सार अथवा शिक्षा को मानने की आवश्यकता है। सम्पूर्ण बाइबल में एक भी मानव-धर्म सार का वर्णन नहीं मिलता। इस प्रकार के सर्वप्रथम मानवी लेख, निसेनी धर्मसार, का प्रचलन प्रेरितों की मृत्यु के सैकड़ों वर्ष पश्चात् आरंभ हुआ, इसे कुछ लोगों ने मिलकर, बिना परमेश्वर की प्रेरणा के, 325 ई.स. में लिखा था। इसी तरह से एक अन्य लेख भी जिसे बहुधा ''प्रेरितों का धर्मसार कहा जाता है, प्रेरितों से

किसी भी प्रकार की वास्तविक संबंध नहीं रखता। बाइबल के विद्वान इस वास्तविकता का समर्थन करते हैं कि इसका आरंभ प्रेरितों के युग के सैकड़ों वर्ष पश्चात् हुआ।

3. कलीसिया दीनता के लिए विशिष्ट थी: नए नियम की कलीसिया के भक्त सदस्यों का, उनकी भक्ति-पूर्ण सेवा के कारण, आदर किया जाता था, किन्तु उन्होंने कभी अपने आप को कलीसिया के अन्य विश्वासी सदस्यों से ऊंचा करने या बड़ा बनाने का प्रयत्न नहीं किया और इस कारण उनमें "क्लेर्जी" (पादरी) जैसे विशेष महिमान्वित पद नहीं हुआ करते थे। प्रभु यीशु ने लूका 22:25-26 में कहा, "अन्य जातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार रखते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं। परन्तु तुम ऐसे न होना; वरन जो तुम में बड़ा है वह छोटे की नाई और जो प्रधान बने है, वह सेवक की नाई बने।" मत्ती के 23वें अध्याय में यीशु ने फरीसियों की निंदा की क्योंकि वे दिखावे के लिए विशेष प्रकार के कपड़े (लम्बे चोगे) पहिनते थे ताकि अन्य लोग उनके कपड़ों को देखकर इस बात के लिए उनका आदर करें कि वे परमेश्वर के अन्य अनुयायीओं से अधिक धार्मिक हैं। प्रभु यीशु के कथानुसार, "वे अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिए करते हैं: वे अपने तावीजों को चौड़े करते और अपने वस्त्रों की कोरें बढ़ाते हैं। जेवनारों में मुख्य-मुख्य आसन और बाज़ारों में नमस्कार और मनुष्यों में रब्बी कहलाना उन्हें भाता है। परन्तु तुम रब्बी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु है: और तुम सब भाई हो। और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है।" (मत्ती 23:5-9)।

उपर्युक्त कथन में किसी को धार्मिक दृष्टिकोण से "पिता" (फादर) कहकर बुलाने का स्पष्टता से खण्डन किया गया है। हमारे अध्ययन के प्रसंग से प्रत्यक्ष है कि उक्त पदों का अभिप्राय यह नहीं है कि कोई अपने शारीरिक पिता को भी पिता कहकर न बुलाए, इसके अतिरिक्त बाइबल में अनेक ऐसे पद है जिनमें पिता शब्द का वर्णन शारीरिक भाव से हुआ है। उदाहरणार्थ इफिसियों 6:2 में पढ़ते हैं कि, "अपने माता और पिता का आदर कर" तथा प्रेरितों 16:3 और प्रेरितों 7:4 को भी देखिए। मत्ती 23 अध्याय में जिस बात की प्रत्यक्ष निंदा की गई है उसका अभिप्राय इस शब्द या पदवी को, फरीसियों की तरह, धार्मिक दृष्टिकोण से उपयोग में लाने से है। इसी तरह से "रेवरेन्ड" अर्थात् "पादरी" शब्द (जिसका अनुवाद हिन्दी की बाइबल में "भययोग्य" हुआ है) को भी, नए नियम की कलीसिया में, किसी व्यक्ति को सम्बोधित

करने के लिए कभी भी उपयोग में नहीं लाया जाता था, बाइबल में इसका उल्लेख, वास्तव में केवल परमेश्वर को सम्बोधित करने के लिए ही हुआ है (देखिए भजन संहिता 111:9)।

प्रेरितों के काम की पुस्तक के 10वें में अध्याय से हमें पता चलता है कि प्रेरितों ने कदापि नहीं चाहा कि कोई मनुष्य उनके आगे झुके या उन्हें अनुचित आदर प्रदान करे। जब कुरनेलियुस ने उसके पांव पड़के उसको प्रणाम किया तो उसने कहा, ''खड़ा हो'', मैं भी तो मनुष्य हूं'' (प्रेरितों 10:25-26)। इस प्रकार के सम्मान को लेने के लिए कोई स्वर्गदूत भी तैयार नहीं होगा (प्रकाशितवाक्य 19:10) ऐसी दीनता, जैसी कि प्रथम मसीहियों में थी, मसीह के सुसमाचार को फैलाने में आज बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है।

परमेश्वर के लोगों के नाम

नए नियम की कलीसिया की एक अन्य विशेषता का कारण वे नाम थे जिनसे परमेश्वर के लोग जाने जाते थे। बहुधा उन्हें केवल ''मसीही'' कहा जाता था (प्रेरितों 11:26), परन्तु वे कभी भी किसी विशेष ''प्रकार'' के मसीही नहीं कहलाए। उन्हें परमेश्वर की संतान भी कहा गया है (गलतियों 3:26)। प्रथम मसीही प्राय: ''पवित्र'' कहकर भी बुलाए जाते थे (रोमियों 1:7)। यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस शब्द का उपयोग मात्र कुछ विशेष शिष्यों को जो मर चुके थे, सम्बोधित करने के लिए नहीं, परन्तु सब जीवित मसीहियों के लिए किया जाता था। यूहन्ना 15:8 में उन्हें ''चेले'' कहा गया है जिसका अर्थ है सीखने वाले। प्रथम शताब्दी के मसीहियों को ''याजक'' भी कहा जाता था। याजक शब्द का उपयोग नए नियम में किसी विशेष वर्ग के लोगों के लिए नहीं परन्तु सब मसीहियों के लिए हुआ है (1 पतरस 2:5-9)। हर एक मसीही को याजक इसलिए कहा गया है क्योंकि प्रत्येक मसीही स्वयं अपनी प्रार्थनाएं यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर तक पहुंचा सकता है (1 तीमुथियुस 2:5) और सुसमाचार प्रचार की सेवा के द्वारा हर एक मसीही परमेश्वर को ''जीवित बलिदान'' चढ़ा सकता है (रोमियों 12:1)। और क्योंकि उन सबको दीनता व नम्रता का स्वभाव रखने की आज्ञा दी गई थी इस कारण वे सब ''भाई'' कहकर भी बुलाए जाते थे (गलतियों 6:1)।

प्रथम मसीहियों के दिनों में कलीसिया प्रभु के नाम के अतिरिक्त किसी अन्य नाम से नहीं जानी जाती थीं। रोमियों की पुस्तक में हम पढ़ते हैं ''तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की और से नमस्कार'' (रोमियों 16:16)।

ये शब्द किसी उपाधि के रूप में नहीं परन्तु वर्णनात्मक ढंग से उपयोग में लाए गए हैं। इनका उपयोग लगभग ठीक उसी ढंग से किया गया है जैसे कि कोई कहे, ''प्रकाश की टोपी'' या ''दाऊद का घराना'' (लूका 1:27) यह शब्द, एकमात्र पदवी नहीं है, परन्तु इस वास्तविकता को दर्शाते हैं कि कलीसिया का सम्बंध यीशु मसीह से है।

उस समय, प्रभु की कलीसिया का वर्णन करने के लिए मनुष्यों के गढ़े हुए नामों का उपयोग कभी भी नहीं किया जाता था। बहुधा इसे ''परमेश्वर की कलीसिया'' कहा गया है, इससे पता चलता है कि यह वास्तव में प्रभु की है (1 कुरिन्थियों 1:2; यूहन्ना 20:28)। प्रभु यीशु ने इसका उल्लेख ''अपनी कलीसिया'' कहकर किया था (मत्ती 16:18) तथा इसे ''मसीह की देह और ''परमेश्वर का घर'' भी कहा गया है (कुलुस्सियों 1:24; 1 तीमुथियुस 3:15)। उक्त शब्द भी एक तरफ से इसी सच्चाई पर प्रकाश डालते हैं कि कलीसिया मसीह की है। यह बिल्कुल उचित है क्योंकि वही इसका बनाने वाला है तथा उसी ने इसे दाम देकर मोल लिया है। (मत्ती 16:18; प्रेरितों 20:28)।

मसीह के नाम के महत्व का वर्णन कुलुस्सियों की पुस्तक में इस तरह से है, ''और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।'' (कुलुस्सियों 3:17)। इसी प्रकार से प्रेरितों के काम 4:12 में मसीह के नाम का वर्णन करते हुए पतरस ने कहा, ''और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।'' इन वास्तविकताओं को ध्यान में रखते हुए यह जानकर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि क्यों रोमियों 16:16 में प्रभु की कलीसिया की स्थानीय मण्डलियों को ''मसीह की कलीसियाएं'' कहा गया है।

अपने अगले पाठ में हम आज के युग में नए नियम की मसीहीयत के विषय पर विचार करेंगे तथा उसी के साथ यह अध्ययन समाप्त हो जाएगा। पाठ को सफलता पूर्वक संपूर्ण करने के बाद आप आपको एक आकर्षक प्रमाणपत्र दिया जाएगा।

प्रश्नः निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देकर केवल प्रश्न-पृष्ठ को हमारे पते पर जांचने के लिए भेज दें।

1. बहुविधि चुनावः सही उत्तर के नीचे रेखा खींचिएः

1. प्रभु यीशु ने कहा, "मैं इस पत्थर पर..................
   क. अनेक सम्प्रदाय - या डीनोमीनेशन
   ख. अपनी कलीसिया
   ग. अपनी कलीसियाएं बनाऊंगा
2. पवित्रशास्त्र के जिस लेखक ने यह कहा कि हमने "मसीह में बपतिस्मा" लिया है उसका नाम,
   क. पौलुस
   ख. लूका
   ग. पतरस था
3. यूहन्ना 17:20-21 में प्रभु यीशु ने प्रार्थना की थी कि उसके चेले
   क. एक हो
   ख. विभाजित हो
   ग. अनेक सम्प्रदाय बनाएं
4. नए नियम की कलीसिया के सदस्य बनने के लिए लोग कलीसिया में
   क. अपने आपको मिलाते थे
   ख. मतदान द्वारा चुने जाते थे
   ग. प्रभु द्वारा मिलाए जाते थे
5. इफिसियों की पुस्तक में, यह बताने के बाद कि देह ही कलीसिया है, पौलुस ने कहा
   क. "एक ही देह है"
   ख. "दो देह हैं"
   ग. "बहुतेरी देह हैं"

2. सत्य - असत्यः यदि कथन सत्य है तो "स" के ऊपर व यदि असत्य है तो "अ" के ऊपर गोलाकार बना दें।

स अ 1. प्रेरितों के दिनों में मसीही लोग अनेक सम्प्रदायों में थे।

स अ 2. पौलुस ने अनेक परस्पर-विरोधी सम्प्रदायों की स्थापना की थी।

स अ 3. प्रभु यीशु ने, अपनी मृत्यु के कुछ ही समय पूर्व, अपने सब चेलों की एकता के लिए प्रार्थना की थी।

स अ 4. प्रभु यीशु ने उदाहरण रूप से स्वयं को दाखलता तथा शिष्यों को व्यक्तिगत रूप से डालियां कहा था।

स अ 5. प्रथम मसीही प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन प्रभु–भोज में भाग लिया करते थे।

स अ 6. बाइबल कहती है कि नए नियम की कलीसिया वाद्य–संगीत उपयोग में लाती थी।

स अ 7. दियुत्रिफेस लोगों को कलीसिया से बाहर निकाल देता था।

स अ 8. बाइबल में ''रेवरेन्ड'' (पादरी) शब्द का वर्णन केवल परमेश्वर के लिए हुआ है।

स अ 9. नए नियम की कलीसिया किसी मनुष्य के धर्मसार का अनुसरण करती थी।

स अ 10. बाइबल की शिक्षानुसार नाम का कोई महत्व नहीं है।

3. यह कहां लिखा है: पवित्रशास्त्र के जिन पदों में निम्नलिखित वाक्यों का वर्णन हुआ है उनके नीचे रेखा खींचिए।

1. ''पर यदि............हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं ....।''
   क. प्रेरितों 2:42...........
   ख. 1 यूहन्ना 1:7
   ग. 3 यूहन्ना 1:9–10................।
2. ''क्योंकि हम सबने .... एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया ....।''
   क. प्रेरितों 10:48
   ख. थिस्सलुनीकियों 5:21
   ग. 1 कुरिन्थियों 12:13
3. ''और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना.................।''
   क. मरकुस 16:16
   ख. मत्ती 23:9
   ग. 1 कुरिन्थियों 16:1–2
4. ''हे भाइयों मैं तुम से .... बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो; और तुम में फूट न हो ....।''
   क. 1 कुरिन्थियों 1:10
   ख. यूहन्ना 17:21
   ग. प्रेरितों 2:42
5. ''और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है ....।''
   क. कुलुस्सियों 1:24
   ख. कुलुस्सियों 1:18
   ग. रोमियों 10:10

आप वास्तव में एक मसीही बन सकते हैं

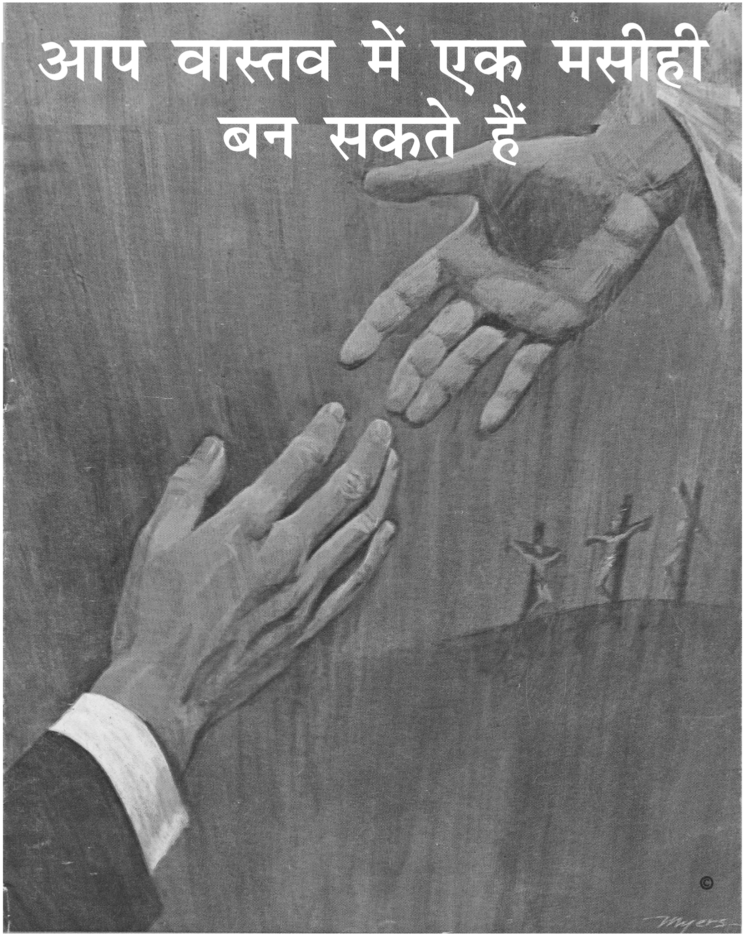

पाठ आठ

बाइबल अध्ययन श्रृंखला

जॉन एम. हर्ट

पाठ आठ
आप वास्तव में एक मसीही बन सकते हैं

अब से लगभग दो हजार वर्ष हुए जब प्रभु यीशु ने अपनी कलीसिया की स्थापना यरूशलेम में, 33 ई.स. में की थी, तौ भी इसकी शोभा, सरलता तथा पवित्रता शताब्दियों से अब तक ज्यों की त्यों अपरिवर्तित तथा उज्जवल है। पिछले कुछ पाठों के द्वारा हमने कलीसिया की कई प्रमुख विशेषताओं के विषय में, जैसे कि बाइबल बताती है, सीखा था। उदाहरणार्थ, सातवें पाठ में हमने देखा था, कि जिस कलीसिया को प्रभु यीशु ने बनाया है उसका सदस्य एक व्यक्ति केवल तभी बन सकता है जब प्रभु स्वयं अपनी कलीसिया में उसे मिलाए, और यह केवल तभी होता है जब हम उसके सुसमाचार की आज्ञाओं का पालन करके पापों की क्षमा प्राप्त कर लेते हैं (प्रेरितों 2:47)। अन्य पाठों का अध्ययन करते समय हमने बाइबल में से यह भी पढ़ा था कि जिन लोगों ने बपतिस्मा लिया था उनका वर्णन करके पौलुस कहता है उन्होंने " मसीह में बपतिस्मा लिया है" (गलतियों 3:27), तथा यह कि बाइबल में जिस, वास्तविक बपतिस्मे का वर्णन हुआ है उसका अर्थ पानी में गाड़े जाना है, तथा बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए जाता है, वा बपतिस्मा बचाता है। (देखिए रोमियों 6:3-5; प्रेरितों 2:38:1 पतरस 3:21)। छठे पाठ में हमने सीखा था कि जिस कलीसिया की स्थापना प्रभु यीशु ने की थी वह प्रत्येक रविवार को प्रभु-भोज में भाग लिया करती थी व उनकी उपासना में किसी प्रकार के बाजों (वाद्य-संगीत) का उपयोग नहीं किया जाता था (प्रेरितों 20:7; इफिसियों 5:19; प्रकाशित-वाक्य 22:17-19)। हमने यह भी सीखा था कि प्रभु यीशु ने केवल एक ही कलीसिया को बनाने की प्रतिज्ञा की थी, तथा यह पहली शताब्दी में सब विश्वासी मसीही उसी एक देह, अर्थात् कलीसिया के अंग थे (मत्ती 16:18; इफिसियों 1:22; 4:4-5)।

तब आज इतनी सारी कलीसियाएं क्यों हैं?

कदाचित आप सोचते होंगे, बाइबल की उक्त शिक्षाओं को पढ़कर, कि तब आज संसार में इतने अधिक परस्पर-विरोधी सम्प्रदाय (कलीसियाएं) क्यों

है तथा ये किसके अधिकार से विद्यमान हैं? इस पाठ का उद्देश्य किसी व्यक्ति की ईमानदारी अथवा सुदुद्देश्यता की आलोचना करना नहीं है, परन्तु उपर्युक्त महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर बाइबल से ज्ञात करने का है।

जैसे कि हमने पहिले भी देखा था, कि मनुष्य की प्रवृत्ति आरंभ से ही ऐसी रही है कि उसने सदैव परमेश्वर की अद्‌भुत योजना में ''परिवर्तन'' लाने का प्रयास किया है, और ऐसा करके वह परमेश्वर के मार्ग से भटकता जा रहा है। नीतिवचन की पुस्तक में सुलैमान कहता है, ''ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।'' (नीतिवचन 14:12)। यही प्रवृत्ति राजा शाऊल के दिनों में भी थी (1 शमूएल 15:1-24), व यही बात नामान के समय में भी विद्यमान थी (2 राजा 5:1-14), तथा हर एक युग में रही है। इतिहास बताता है कि प्रेरितों के दिनों के कुछ ही समय पश्चात ठीक ऐसा ही हुआ था। सर्व प्रथम नए नियम के आदर्श से धीरे-धीरे प्रस्थान आरंभ हुआ। मानवीय प्रवृत्ति के अनुसार, कलीसिया के संगठन में परिवर्तन किया जाने लगा और फिर इसी तरह से कार्य तथा उपासना में भी परिवर्तन किया गया। ये सब परिवर्तन थोड़े से ही समय में नहीं आ गए, तथा इनमें से अधिकांश किसी द्वेषपूर्ण इच्छा से भी नहीं लाए गए, परन्तु धीरे-धीरे कुछ समय के बाद इनके फलस्वरूप नए नियम के आदर्श से लगभग पूर्ण प्रस्थान हो गया। (जैसे कि उदाहरण स्वरूप, मान लीजिए एक बालक अपने खेलने के लाल रंग के गुटकों को प्रतिदिन एक-एक करके अपने मित्र की हरे रंग की खेलने की गोलियों से बदलता चला जाए वा ऐसा वह तब तक करता रहे जब तक कि उसके सब गुटके गोलियों में परिवर्तित न हो जाएं) ऐसे ही मसीह की कलीसिया की मुख्य-मुख्य विशेषताएं एक-एक करके मनुष्यों की शिक्षाओं तथा आज्ञाओं में बदली जाने लगीं, व इस प्रकार धीरे-धीरे होने वाले परिवर्तन के कारण कुछ ही शताब्दियों में अधिकांश लोग बाइबल में उल्लिखित कलीसिया से बहुत अधिक भिन्न हो गए।

सत्य से भटकने के विषय में पूर्व चिताया गया था

किन्तु, प्रभु यीशु तथा प्रेरितों को पहिले ही से मालूम था कि प्रेरितों के समय के पश्चात् कलीसिया में इस प्रकार के परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाएगा, और इसलिए इस तरह के प्रस्थान में गुमराह हो जाने के विषय में उन्होंने ही खूब अच्छी तरह से चिता दिया था। मत्ती 24:11-13 में यीशु ने अपने चेलों को यूं बताया, ''और बहुत से झूठे भविष्द्क्ता उठ खड़े होंगे, बहुतों को भरमाएंगे। और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठंडा हो जाएगा। परन्तु

जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।'' प्रेरित पौलुस ने भी इफिसुस में अध्यक्षों से इसी तरह से कहा था, ''मैं जानता हूं कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे।'' (प्रेरितों 20:29-30, तथा मत्ती 7:15 को भी देखिए)। और हम फिर पढ़ते हैं, ''परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है, कि आने वाले समयों में कितने लोग विश्वास से बहक जाएंगे।'' (1 तीमुथियुस 4:1)। भविष्य में सत्य से भटक जाने के विषय में पतरस ने यूं कहा था, ''और जिस प्रकार उन लोगों में झूठे भविष्यद्वक्ता थे उसी प्रकार तुम में भी झूठे उपदेशक, होंगे, जो नाश करने वाले पाखण्ड का उद्घाटन छिप-छिपकर करेंगे और उस स्वामी का जिसने उन्हें मोल लिया है इंकार करेंगे और अपने आपको शीघ्र विनाश में डाल देंगे। और बहुतेरे उनकी नाई लुचपन करेंगे, जिनके कारण सत्य के मार्ग की निंदा की जाएगी'' (2 पतरस 2:1-2)।

नए नियम में बार-बार हम ऐसी भविष्यद्वाणियों को पढ़ते हैं जो यह बताती है कि प्रेरितों की मृत्यु के तुरन्त बाद धर्म का त्याग होने को था अथवा अधिकांश लोग विश्वास से भटक जाएंगे। ये भविष्यद्वाणियां यह नहीं कहती कि लोग धार्मिक होना छोड़ देंगे, परन्तु ये बताती है कि वे परमेश्वर के मार्ग तथा सच्चे आदर्श का पालन करना छोड़ देंगे या इस रीति से उपासना तथा भक्ति को व्यर्थ बना देंगे। प्रभु यीशु के कथानुसार, इस प्रकार के लोग वास्तव में, उसके अनुयायी होने का दावा करेंगे व यह भी कहेंगे कि वे उसके नाम से बड़े-बड़े कार्य करते हैं। (मत्ती 7:22)। इसके कुछ ही समय बाद, मत्ती 15:9, में प्रभु यीशु ने कहा था, कि मनुष्यों की शिक्षाओं को धर्मोपदेश करके सिखाने से सम्पूर्ण उपासना व्यर्थ ठहरती है, प्रेरित पौलुस, ने नए नियम के आदेश से भटक जाने के विषय में, और भी अधिक स्पष्टता से उस समय बताया जब कि उसने संसार के अंत का इन शब्दों में वर्णन किया, ''किसी रीति से किसी के धोखे में न आना क्योंकि वह दिन न आएगा, जब तक धर्म का त्याग न हो ले'' (2 थिस्सलुनीकियों 2:3)।

और फिर, भविष्यद्वाणियों का पूरा होना आरंभ हुआ

प्रेरितों के दिनों के कुछ ही समय पश्चात् ये भविष्यद्वाणियां, पूर्व कहे अनुसार, पूरी होने लगीं। एक-एक करके वास्तविक शिक्षाओं में, समय के विचारनुसार, परिवर्तन किया जाने लगा। नए नियम के आदर्श में ये परिवर्तन बहुत ही धीरे-धीरे आए, और इस कारण किसी भी युग के लोगों ने इनके विषय में

सही जानकारी प्राप्त करने की कोई आवश्यकता नहीं समझी, परन्तु संभावित रूप से इनके फलस्वरूप अनेकों धार्मिक संगठनों का जन्म हुआ जो कि नए नियम की कलीसिया से बहुधा इतने भिन्न थे जैसे कि रात और दिन। आईए, अब हम सम्बंधी इतिहास में से कुछ विशेष मानवीय परिवर्तनों के विषय में देखें वा यह मालूम करें कि इनका आरंभ लगभग किस समय हुआ था?

कुछ विशेष मानवीय परिवर्तन तथा उनके आरंभ होने का लगभग सही समय

1. **पवित्र:** जल का उपयोग 120 ई. स. में यहूदी धर्म में से लिया गया था।
2. **बालकों का बपतिस्मा:** तीसरी शताब्दी में पहली बार तिरतुलियन ने इसका वर्णन करते हुए इसकी निंदा की थी (देखिए प्रेरितों 8:36-39; मत्ती 28:19)।
3. **पहिला मानवीय धर्मसार:** इसे 325 ई. स. में बिथैनिया के निसिया में 318 व्यक्तियों ने परमेश्वर की अगुवाई के बिना लिखा व इसे "निसेनी धर्मसार" कहा गया। यह भी ध्यान में रखें कि "प्रेरितों का धर्मसार" कहलाने वाली एक अन्य पुस्तक को भी प्रेरितों ने नहीं लिखा था तथा 650 ई.स. पूर्व यह वर्तमान रूप में विद्यमान नहीं थी।
4. **लैटिन मास:** इसका आरंभ 394 ई.स. में हुआ था।
5. **पापमोचन:** इस शिक्षा के अनुसार मृत्यु पश्चात् मनुष्य को कुछ समय के लिए अत्यंत दु:ख भोगना पड़ता है व तब वह स्वर्ग में प्रवेश पाता है, इस शिक्षा का आरंभ 593 ई.स. में हुआ। (देखिए लूका 16:19-26)।
6. **वाद्य-संगीत (बाजे):** मसीही उपासना में इसे सर्वप्रथम लगभग 666 ई.स. में जोड़ा गया।
7. **अविवाहित जीवन:** 1015 ई.सं. के बाद याजकों (प्रीस्टों) को विवाह करने के लिए मना कर दिया गया था (1 तीमुथियुस 4:1-3)।
8. **याजकों के पास जाकर पापों को स्वीकार करने की प्रथा का आरंभ ई.स. 1215 में हुआ था।**
9. **बपतिस्में के स्थान पर छिड़काव:** को 1319 ई.स. में रैवैन्ना की परिषद में उचित घोषित कर दिया गया। इस प्रकार की पहिली घटना का वर्णन लगभग 259 ई.स. में, नोवातियान के विषय में मिलता है।

इसी तरह के कुछ अन्य मानवीय परिवर्तन इस प्रकार हैं: पापों की क्षमा बेचना, प्रभुभोज की दो वस्तुओं में से एक में भाग लेना, प्रायश्चित चुकाना, प्रभु-भोज में मासिक अथवा त्रैमासिक भाग लेना, स्त्रियों का प्रचारक बनना, मरियम से प्रार्थना करना, पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिए शोकित होकर

प्रार्थना करना, इत्यादि। (देखिए व्यवस्थाविवरण 4:2; प्रकाशितवाक्य 22:18-19)।

आधुनिक सम्प्रदायों का उदय होना

परमेश्वर के सच्चे आदर्श को मनुष्यों के धार्मिक विचारों द्वारा परिवर्तित करने की धारणा शताब्दियों से बढ़ती रही है। कदाचित् इसी कारण बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर कहता है, ''मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है।'' (यशायाह 55:8-9)।

जैसे-जैसे मनुष्यों की बनाई हुई रीतियों तथा शिक्षाओं में वृद्धि होती गई वैसे-वैसे और भी अधिक नई संस्थाएं स्थापित होने लगीं, इनमें से प्रत्येक किसी न किसी रूप में नए नियम की कलीसिया से कुछ समानता तो रखती थी, परन्तु हर-एक मनुष्यों की बनाई पृथक्-पृथक विशेष शिक्षाओं को मानती थीं और इस कारण वे बाइबल की कलीसिया से बहुत भिन्न थीं तथा आपस में भी एक दूसरे से असमानता रखती थीं। इस समय संसार में कई हज़ार विभिन्न साम्प्रदाय विद्यमान हैं, वे बाहरी रूप से तो यद्यपि एक से प्रतीत होते हैं, किन्तु इनमें से प्रत्येक मनुष्यों की बनाई हुई भिन्न-भिन्न रीतियों पर चलते हैं और हर-एक अपनी-अपनी संस्था की विशेष शिक्षाओं को सिखाते हैं। यदि ये सब मतभेद या असमानताएं विद्यमान न होती हो तो इस प्रकार के विभिन्न समुदायों का जनम कभी नहीं हुआ होता। वर्तमान अत्याधिक धार्मिक फूट का कारण बाइबल की शिक्षाएं नहीं है परन्तु मनुष्यों के वे मतभेद और शिक्षाएं हैं जिनका आरंभ प्रेरितों के समय के बाद हुआ था (1 तीमुथियुस 1:3; मत्ती 15:9)। परन्तु अब, मसीही एकता का एकमात्र वास्तविक मूलधार यही है कि सब विश्वासी लोग फिर से नए नियम के आदर्श का सम्पूर्णता से पालन करें। (मत्ती 28:20)।

असाम्प्रदायिक मसीहीयत

कुछ वर्ष पूर्व, दो प्रचारक इसी प्रकार की मानवीय शिक्षाओं तथा बाइबल के मार्ग से भटका देने वाली अन्य शिक्षाओं से परेशान होकर इनके विषय में वार्तालाप कर रहे थे। बातचीत के मध्य उन्होंने मत्ती 16:18 में से प्रभु यीशु के इस कथन को पढ़ा; ''मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।'' उन्होंने इसी प्रकार का वर्णन प्रेरितों 2:47 में भी पढ़ा, ''और जो उद्धार पाते थे उनको प्रभु प्रति दिन उन में (अर्थात् कलीसिया में) मिला देता था।'' तब उन में से एक ने कहा, ''जबकि बाइबल बताती है कि मसीह ने केवल एक ही कलीसिया की स्थापना की थी, वा यह कि जिनका उद्धार होता है वे सब उसमें मिलाएं जाते हैं, तो यह कौन सी कलीसिया है?'' फिर उस प्रचारक ने बहुतेरे विशिष्ट सम्प्रदायों

के नाम लिए तथा अपने साथी से पूछा कि उनमें से किसके लिए वास्तव में बाइबल बताती है। यद्यपि दूसरा प्रचारक स्वयं उन सम्प्रदायों में से एक था, किन्तु उसने उत्तर दिया कि उनमें से कोई भी नहीं हो सकता, क्योंकि इतिहास, जैसा कि अधिकांश लोग जानते हैं, बताता है कि इन समुदायों की स्थापना प्रेरितों के समय के कई सौ वर्ष पश्चात् हुई थी। अपने वक्तव्य में उसने आगे कहा, कि प्रथम शताब्दी में सब चेले केवल ''मसीही'' कहलाते थे तथा वे मनुष्यों के बनाए हुए किसी भी सम्प्रदाय के सदस्य नहीं थे।

दूसरे प्रचारक ने इस बात का ध्यानपूर्वक समर्थन करते हुए कहा, कि यह बिलकुल सत्य है क्योंकि बाइबल के अनुसार, प्रेरितों के दिनों में भी एक भी कैथलिक अथवा प्रोटेस्टैन्ट सम्प्रदाय (चर्च) विद्यमान नहीं था। और तब उसने कहा, ''यदि उस समय के लोगों के लिए, किसी भी कैथलिक या प्रोटेस्टैन्ट सम्प्रदाय (चर्च) के सदस्य बने बिना, मसीही तथा प्रभु की कलीसिया के सदस्य होना संभव था तो आज हम भी उसी प्रकार से क्यों नहीं हो सकते'' उसने तार्किक दृष्टिकोण से कहा, कि परमेश्वर ने अपना वचन थोड़े से समय के लिए ही नहीं दिया है, और फिर हमारे पास भी ठीक वही सुसमाचार है जो कि प्रथम शताब्दी के लोगों के पास था, तब इन वास्तविकताओं को ध्यान में रखते हुए यह कहना बिल्कुल अनुचित होगा कि आज हम उसी प्रकार से नहीं हो सकते जैसे कि वे लोग थे। वास्तव में, आज हम बिल्कुल वैसे ही मसीही, किसी भी सम्प्रदाय के सदस्य बने बिना, हो सकते हैं।

क्या इस प्रकार की वापसी अभी भी संभव है?

प्रथम मसीहीयों के दिनों में इस प्रकार की असाम्प्रदायिक मसीहीयत न केवल संभव ही थी परन्तु एक वास्तविकता थी। बाइबल बताती है, उदाहरणार्थ, कि प्रभु की कलीसिया का एक विश्वासी सदस्य था, जबकि आधुनिक सम्प्रदायों का जन्म पौलुस के सैकड़ों वर्ष पश्चात् हुआ। यदि उस समय, मान लीजिए, किसी ने पौलुस से पूछ लिया होता कि वह कैथलिक है या प्रोटेस्टैन्ट तो उसकी समझ में कुछ भी नहीं आता कि उससे क्या पूछा जा रहा है। क्योंकि इन सम्प्रदायों की स्थापना प्रेरितो की मृत्यु के कई सौ वर्ष बाद हुई थी। परन्तु क्या आज भी वास्तव में हम उसी कलीसिया के सदस्य बन सकते हैं जिसका सदस्य पौलुस था व जिसका वर्णन नए नियम में, आधुनिक प्रोटेस्टैन्ट कलीसिया की स्थापना के लगभग 1600 वर्ष पूर्व हुआ था?

इस प्रश्न का सही उत्तर प्राप्त करने के लिए, आईए, हम फिर से बाइबल में से देखें। उत्पत्ती 1:12 में पवित्रशास्त्र बताता है कि सब बीज ''अपनी-अपनी

जाति अनुसार'' उत्पन्न करते हैं। इसे दूसरी तरह से हम यूं भी कह सकते हैं कि जब कोई गेहूं बोता है तो केवल गेहूं ही उगता है, उसके स्थान पर सेब या मकई के पौधे नहीं लगते; वा जब कोई आलू बोता है, तो केवल आलू ही उगता है। पौलुस ने इसी तथ्य के आधार पर एक आत्मिक शिक्षा देते हुए कहा था, ''क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।'' (गलतियों 6:7)। ठीक यही नियम राज्य के ''बीज'' के लिए भी है जो कि प्रभु यीशु के कथानुसार, परमेश्वर का वचन है (लूका 8:11) अब यदि यही वास्तविक बीज बिना किसी मिलावट के, अर्थात् मनुष्यों की बनाई हुई धार्मिक रीतियों या शिक्षाओं को इसमें जोड़े बिना, निष्कपट हृदयों में आज बोया जाए तो पवित्रशास्त्र की शिक्षानुसार यह ठीक वही वस्तु उत्पन्न करेगा जो इस से प्रेरितों के दिनों में हुई थी, मसीही लोग तथा ''मसीह की कलीसिया''।

प्रभु की कलीसिया तथा मनुष्यों के सम्प्रदाय

यद्यपि मनुष्यों के बनाए हुए प्रत्येक सम्प्रदाय में कुछ न कुछ अच्छे गुण हैं, किन्तु उनमें से किसी के लिए भी यह उचित रूप से कहा जा सकता है कि उनकी स्थापना न तो सही समय पर हुई, न सही स्थान पर, और न ही उचित व्यक्ति द्वारा और इस कारण वे उस कलीसिया से बिल्कुल भी मेल नहीं खाते जिसके बारे में हम नए नियम में पढ़ते हैं। अर्थात् कोई भी धार्मिक संगठन जिसकी स्थापना यरूशलेम में, 33 ई.स. में, न हुई हो, व जिसका बनाने वाला स्वयं प्रभु यीशु के अतिरिक्त कोई और व्यक्ति हो, वह किसी भी रूप से बाइबल में उल्लिखित कलीसिया से समानता नहीं रखता। इस प्रकार के सभी समुदाय मसीह के अधिकार के बिना विद्यमान हैं, तथा एकता के लिए उस की प्रार्थना के विरोध में हैं। (यूहन्ना 17:20-21)। इसलिए, सब विश्वासी लोगों के लिए उचित मार्ग यही है कि बिना किसी कैथलिक अथवा प्रोटेस्टेन्ट की सहभागिता ग्रहण किए उसी एक कलीसिया के सदस्य बनें जिसके लिए बाइबल हमें बताती है।

कदाचित् आप सोचते होंगे, ''क्या वास्तव में यह अब भी संभव है?'' हां, वास्तव में ऐसा हो सकता है, और न केवल यह संभव ही है, परन्तु वर्षों से लाखों लोग ऐसा ही कर रहे हैं। संसार भर में आज बड़ी संख्या में लोग नए नियम के इस सरल आदर्श का, जिसे प्रभु ने अपनी कलीसिया के लिए दिया है, अनुसरण कर रहे हैं, उन्होंने मनुष्यों के बनाए हुए किसी भी सम्प्रदाय में सदस्यता ग्रहण नहीं की है, परन्तु उन्होंने सुसामचार की आज्ञाओं का पालन किया है व उनका पूर्ण विश्वास है कि प्रभु ने उनको अपनी कलीसिया में ठीक

वैसे ही मिला दिया है जैसे उसने आरंभ में किया था (प्रेरितों 2:47)। वे ''उसी के साथ बपतिस्मे में गाड़े गए'', अर्थात् ''उन्होंने अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लिया'', जिस प्रकार से बाइबल आज्ञा देती है (कुलुस्सियों 2:12; प्रेरितों 2:38)। प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन वे प्रभु-भोज में भाग लेते हैं, जिस प्रकार से प्रेरितों के दिनों में कलीसिया में किया जाता था (प्रेरितों 20:7)। उनके पास न तो कोई मानवी-धर्मसार है और न ही वे मनुष्यों के बनाए हुए नाम अपने ऊपर रखते है। रोमियों 16:16 में बाइबल कहती है, ''तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।'' इसलिए, ये चेले अभी भी ''मसीह की कलीसिया'' के सदस्य कहलाते हैं व ''मसीही'' नाम से जाने जाते हैं (प्रेरितों 11:26)। वास्तव में, इस उत्तम नाम से किसी भी मानवी नाम की तुलना नहीं की जा सकती, और न ही प्रभु के लोगों को किसी अन्य नाम की आवश्यकता है। उपासना, शिक्षा तथा व्यवहार में आज मसीह की कलीसिया पूर्ण प्रयत्न कर रही है कि वह कलीसिया के उस आदर्शानुसार हो सके जिसका वर्णन नए नियम में मिलता है।, इसलिए न तो यह कैथलिक है न प्रोटेस्टैन्ट, परन्तु केवल ''मसीह की कलीसिया'', जिस तरह से प्रेरितों के दिनों में थी। मसीह की कलीसिया में आज वे लोग हैं जो सुरक्षित तथा विश्वसनीय मार्ग पर चलना चाहते हैं। इसलिए नए नियम में जिस आदर्श को यीशु मसीह ने दिया, और जिसका अनुसरण प्रेरित किया करते थे या जिसकी गवाही पवित्रशास्त्र देता है, उसके पास सम्पूर्णता से वापस आने के अतिरिक्त हमारे पास कोई दूसरा ठोस आधार नहीं है। यह एक ऐसा उचित मार्ग है जो कभी भी गलत या अनुचित नहीं हो सकता।

सो हमारा आपसे आग्रह है कि आप स्वयं मसीह की कलीसिया की जांच कीजिए। सर्वप्रथम यह देखें कि क्या यह वास्तव में बाइबल की कलीसिया का पुनः आरंभ है। यदि आपको पता चलता है कि नए नियम की शिक्षा के विपरीत हमारे द्वारा कोई और अन्य शिक्षा मानी या सिखाई जा रही है तो हमें उसके विषय में बताइए हम उसे मानना व सिखाना छोड़ देंगे। यदि यह मनुष्यों के बनाए हुए सम्प्रदायों में से एक है तो हम आप से कहते हैं कि इसको अस्वीकार कर दीजिए, परन्तु यदि यह वास्तव में वही कलीसिया है जिसके बारे में बाइबल बताती है तो हम आपको प्रोत्साहित करते हैं कि आप भी उसी एक मार्ग को अपनाइए जो कि उचित है, और कभी भी गलत नहीं हो सकता; प्रभु में विश्वास कीजिए, अनुचित बातों से मन फिराइए, यीशु का अंगीकार कीजिए, और पवित्रशास्त्र की आज्ञानुसार बपतिस्मा लीजिए ताकि यीशु मसीह आपको अपनी कलीसिया में मिलाए। प्रभु अपने वचन के अध्ययन में आपको आशीष दे।

प्रश्नः निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देकर केवल प्रश्न-पृष्ठ को नीचे लिखे पते पर जांचने के लिए भेज दें।

1. व्यक्ति का नाम बताइए:

1. सेनापति जिसका वर्णन 2 राजा 5:1-14 में हुआ है। ....
2. नए नियम की कलीसिया का बनाने वाला ....
3. जिसने भविष्य में होने वाले धर्म के त्याग के विषय में इफिसुस के अध्यक्षों को चिताया था। ....
4. वह लोगों को कलीसिया में मिलाता है। ....
5. इस्राएल का राजा जिसका वर्णन 1 शमूएल 15:1-24 में मिलता है। ....

2. सत्य-असत्यः यदि कथन सत्य है तो ''स'' के ऊपर व यदि असत्य है तो ''अ'' के ऊपर गोलाकार बना दें।

स अ 1. निसेनी धर्मसार 325 ई.स. में लिखा गया था।
स अ 2. राज्य का बीज परमेश्वर का वचन है।
स अ 3. प्रभु यीशु ने यूहन्ना 17:20 में प्रार्थना की थी कि संसार में अनेकों सम्प्रदाय हो।
स अ 4. कैथलिक तथा प्रोटेस्टेन्ट शब्दों का उल्लेख बाइबल में हुआ है।
स अ 5. 1 पतरस 3:21 में बाइबल बताती है कि ''बपतिस्मा नहीं बचाता है।''
स अ 6. बपतिस्मे के स्थान पर छिड़काव को 1311 ई.स. में उचित घोषित किया गया था।
स अ 7. आज, केवल एक मसीही बनना संभव है।
स अ 8. बाइबल की कलीसिया की स्थापना लगभग 33 ई.स. में हुई थी।
स अ 9. आज संसार में कई हज़ार विभिन्न सम्प्रदाय विद्यमान है।
स अ 10. उत्पत्ति 1:12 से हमें शिक्षा मिलती है कि बीज अपने स्वभाव के अनुसार ही उत्पन्न करता है।

3. यह कहां लिखा है: पवित्रशास्त्र के जिन पदों में निम्नलिखित वाक्यों का वर्णन हुआ है उनके नीचे रेखा खींचिए।

1. ''ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।''
   - क. प्रेरितों 10:48
   - ख. नीतिवचन 14:12
   - ग. व्यवस्थाविवरण 4:2
2. ''कितने लोग विश्वास से बहक जाएंगे।''
   - क. मत्ती 7:22
   - ख. मत्ती 24:11
   - ग. 1 तीमुथियुस 4:1
3. ''मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है''
   - क. यूहन्ना 17:20-21
   - ख. यशायाह 55:8-9
   - ग. प्रकाशितवाक्य 22:18-19
4. ''और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था।''
   - क. मत्ती 16:18
   - ख. 1 पतरस 3:21
   - ग. प्रेरितों 2:47
5. ''तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।''
   - क. रोमियों 16:16
   - ख. मत्ती 15:9
   - ग. प्रेरितों 2:38

प्रश्न पृष्टों को जांचने के लिये इस पते पर भेज दीजिये:

विनय डेविड
चर्च ऑफ़ क्राईस्ट
पोस्ट बॉक्स नं. 4398
नई दिल्ली-110019

कोरियर से भेजने के लिये हमारा पता है:

चर्च ऑफ़ क्राईस्ट
मार्केट नम्बर 4
सी. आर. पार्क
नई दिल्ली-110019

इस पृष्ट को भरकर अवश्य भेजें।

सारे पाठों के प्रश्न पृष्टों को एक साथ भेंजे।

आपका नामः ....

आपका पताः ....

....

....

आपका मोबाइल न॰: ....

आपको यह अध्ययन कैसा लगा?

क्या आपको कुछ कहना है?

आप अपनी बात को यहां लिख सकते हैं:

....

....

....

....